इब्न सफी

देश संख्या
19

पानी का धुआँ

जहर का तीर -60

पानी का धुआँ -61

एक लाश की हंसी -62

डॉक्टर ड्रेड -63

जासूसी दुनिया नंबर **61**

1- जहरीले तीर , **2-** पानी का धुआँ

3- लाश का कहकहा **4-** डॉ ड्रेड

2- पानी का धुआं

वो लड़की

हमीद का बकरा अगर आदमी होता तो अब तक खुदकुशी कर चुका होता या नाक़ाद हो जाता और उर्दू गज़ल के मुतल्लिक़ यही ख्याल जाहिर करता कि "इस नीम वहशी सिन्फ़-ए-सुखन की गर्दन बे-तकान मार देनी चाहिए क्योंकि हमीद इस वक़्त भी उसे एक गज़ल ही सुना रहा था।"

मगर बकरे न तो खुदकुशी करते हैं और न तनक़ीद। वैसे वो अगर आदमी होता तो ये भी मुमकिन था कि गज़ल की गर्दन मारने की बजाए हमीद ही की गर्दन उड़ा देता।

हमीद ने दूसरी गज़ल शुरू की और बकरे ने हरी-हरी दूब पर मुंह मारना चाहा लेकिन दूसरे ही लम्हे में इसके मुंह पर एक थप्पड़ पड़ा और गज़ल मुकम्मल न हो सकी। क्योंकि हमीद ने अब नसर (prose) शुरू कर दी — "अबे फ़्लैट हैट पहन कर घास खाते हुए शर्म नहीं आती। चीनियों ने इतनी तरक्क़ी की, जापानी इतने बढ़ गए, मगर तू हमेशा बकरा ही रहेगा।"

थोड़ी ही फासले पर फ़रीदी बैठा अखबार देख रहा था। सर्दियों की एक सुबह थी और अभी नौ बजे थे। लॉन पर बिखरी हुई धूप बड़ी खुशगवार मालूम हो रही थी।

हमीद का ख्याल था कि अगर अखबारात भी इतने इन्हमाक (तल्लीनता)

के साथ देखे जाने लगें तो दुनिया की कम से कम आधी आबादी पागल हो सकती है। इसलिए पहले तो वो कुछ देर तक बकरे को गजलें सुनाता रहा फिर अखलाक़ियात पर लेक्चर शुरू कर दिया।

फ़रीदी ने एक बार सर उठा कर देखा। एक तवील (लंबी) सांस ली और अखबार तिपाई पर रख कर सिगार सुलगाने लगा।

"हमीद बकरे से कह रहा था— 'बकरियों के पीछे मारे-मारे फिरना अखलाक़ से गिरी हुई हरकत है। आइंदा अगर मैंने तुझे किसी बकरी को आंख मारते देखा तो तेरी खाल खींच कर किसी यतीम खाने को भिजवा दूंगा।'"

"गधों की नसीहत से बकरे असर नहीं लेते।" —फ़रीदी बोला।

"इसीलिए मैंने आज तक कोई गधा नहीं पाला।" —हमीद ने जवाब दिया।

फ़रीदी कुछ कहने ही वाला था कि एक कार कंपाउंड में दाखिल हुई और अगली सीट पर नज़र पड़ते ही हमीद ने दोनों हाथों से आंखें बंद कर लीं और ज़बान निकाल कर फ़रीदी की तरफ मुड़ गया।

कार से उतरने वाली एक नौखेज़ (कम उम्र) लड़की थी, जिसकी उम्र ज्यादा से ज्यादा सोलह-सत्रह साल रही होगी।

"क्या बेहूदगी है।" —फ़रीदी आहिस्ता से गुर्राया और हमीद ने ज़बान अंदर कर ली। वैसे उसके हाथ अब भी आंखों पर थे।

लड़की कार के करीब खड़ी उन्हें देख रही थी। एक बार उसने उनकी तरफ बढ़ना चाहा, फिर रुक गई और वहीं से खड़े-खड़े कहा— "मैं कर्नल फ़रीदी से मिलना चाहती हूं।"

"कैप्टन हमीद से मिलने कोई नहीं आता।" —हमीद आहिस्ता से बोला—

"खुदा करे दुनिया की सारी लड़कियां पागल हो जाएं।"

"हाथ नीचे गिराओ।" —फ़रीदी ने दांत पीस कर कहा, फिर लड़की से बोला— "इधर तशरीफ़ लाइये।"

लड़की कुछ बौखलाई हुई आगे बढ़ी।

"तशरीफ़ रखिये।" —फ़रीदी ने लॉन चेयर की तरफ इशारा किया।

"मम.... मैं.... फ़रीदी साहब से मिलना चाहती हूं।" —लड़की हकलायी।

फिर उसने कनखियों से उस बकरे की तरफ देखा जिसके सर पर फ़्लैट हैट इस तरह जमाई गई थी कि सींगें बाहर निकल आई थीं। गले में टाई लटक रही थी और पिछली टांगों पर कमरबंद और लाल पजामा था।

"फरमाइये— मैं क्या खिदमत कर सकता हूं।"

"कर्नल साहब से मिला दीजिये।"

"आप फ़रीदी ही से हम-कलाम (बातचीत) हैं।"

हमीद बकरे का कान पकड़ कर उसे पोर्च की तरफ ले जा रहा था।

"ओह....!" लड़की चौंक सी पड़ी— "माफ.... क.... क.... कीजियेगा।"

"कोई बात नहीं.... हां.... आप मुझसे क्यों मिलना चाहती हैं।"

"हम.... एक बड़ी मुसीबत.... में फंस गए हैं जनाब।"

फ़रीदी कुछ न बोला। उसकी नज़र लड़की के सर पर थी और लड़की का सर झुका हुआ था। ज़मीन पर पड़ी हुई दियासलाई की डिबिया को वो

इधर-उधर कर रही थी।

"आप सर फ़ैयाज़ से वाक़िफ़ होंगे?"

"सर फ़ैयाज़— जी हां.... मैं उन्हें जानता हूं।"

"वो मेरे दादा हैं।" —लड़की बोली।

"ओह.... अच्छा....!" फ़रीदी ने इस अंदाज़ में कहा जैसे वो अभी कुछ और भी सुनना चाहता हो।

"दरअसल मैं उन्हें के लिए आई हूं।"

"मैं नहीं समझा।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि इस क़िस्से को कहां से शुरू करूं। लेकिन मुझे यकीन है कि मैं गलती पर नहीं हूं और आपकी मदद के बगैर हालात दुरुस्त नहीं हो सकते।"

"मैं हालात ही मालूम करना चाहता हूं।"

"देखिये मैं बताती हूं। पिछली शाम हम लोग अपनी जाती (निजी) लॉन्च में 'फन आईलैंड' गए थे। हमारे साथ दादाजान भी थे। जब हम 'फन आईलैंड' के साहिल पर पहुंचे तो हमारी लॉन्च एक सफ़ेद रंग की बड़ी कश्ती के करीब रुकी।"

"सफ़ेद कश्ती?" —फ़रीदी एकाएक चौंक पड़ा।

"जी हां.... और दफ़अतन (अचानक) दादाजान बुरी तरह कांपने लगे। उनके मुंह से अजीब तरह की आवाजें निकल रही थीं। बिल्कुल ऐसा मालूम हो रहा था जैसे कोई खौफज़दा बच्चा कुछ कहना चाहता है लेकिन ज़बान साथ नहीं दे रही।"

"हूं.... उंह.... मैं सुन रहा हूं। आप कहती रहिये।"

"फिर वो बेहोश हो गए और हमें वापस आना पड़ा। मेरा ख्याल है कि उस सफ़ेद कश्ती पर किसी को देख कर..."

पेज **96**

उनकी ये हालत हुई थी। अब मैं नहीं कह सकती कि ये महज़ मेरा शुबहा (संदेह) था या हकीकत—उस कश्ती पर एक लंबे चौड़े आदमी ने इस तरह अपनी फ़्लैट हैट का कोना चेहरे पर झुकाने की कोशिश की थी जैसे वो किसी शनासा (परिचित) की नज़रों से बचना चाहता हो।"

"आपका ख्याल दुरुस्त भी हो सकता है.... फिर क्या हुआ....?"

"हम उन्हें घर ले आए। तकरीबन तीन घंटे बाद उन्हें होश आ सका लेकिन अब तक उनकी दिमागी हालत ठीक नहीं हुई।"

"क्यों? दिमागी हालत ठीक न होने से आपकी क्या मुराद है?"

"वो रह-रह कर चीख उठते हैं— 'अरे बून्द आई.... अरे बून्द आई'। हम पूछते हैं कि कैसी बून्द, तो अपने सर पर हाथ रगड़ कर कहते हैं.... ये रही...."

"ओह....!" फ़रीदी ने सीटी बजाने वाले अंदाज़ में होंठ सिकोड़े।

"अब से तीन माह पहले की बात है कि उनका दिमाग इसी तरह उलट गया था और यही रटा करते थे 'अरे बून्द आई'। फिर काफी दिनों तक इलाज होते रहने पर हालत सुधर गई थी।"

"अच्छा पिछला वाकया क्या था?"

"कुछ भी नहीं। वो पांच-छह दिनों के लिए तार-जाम गए थे। वहां से इस

हालत में वापस आए।"

"यानी वापसी ही इस दिमागी ख़लल (असंतुलन) की हालत में हुई थी?"

"जी हां....!"

फ़रीदी कुछ सोचने लगा फिर बोला— "क्या वो तार-जाम से तन्हा वापस आए थे?"

"जी नहीं। हमारे एक कारखाने का मैनेजर उन्हें वापस लाया था।"

"तार-जाम में वो कहां रहे थे?"

"कहीं भी नहीं। जिस दिन वो वहां पहुंचे उसी दिन मैनेजर उन्हें वापस लाया था।"

"अभी तो आपने कहा पांच या छह दिन रुके थे।"

"जी हां। यहां से जाने के छठे दिन ही वो वापस आए थे लेकिन मैनेजर के बयान के मुताबिक वो उसी दिन वहां पहुंचे थे और उनकी दिमागी हालत दुरुस्त नहीं थी।"

"ओह.... तो आप ये कहना चाहती हैं कि वो पांच दिन उन्होंने किसी नामअ़लूम जगह पर गुज़ारे थे?"

"जी हां.... ये बात आज तक न मालूम हो सकी कि वो कहां रहे थे।"

"क्या वो तन्हा गए थे?"

"जी हां.... उनके साथ कोई नहीं था। यहां तक कि ड्राइवर भी नहीं। कार

उन्होंने खुद ही ड्राइव की थी।"

"उन्होंने कभी नहीं बताया कि वो पांच दिन कहां गुज़ारे थे?"

"जी नहीं। दिमागी हालत दुरुस्त हो जाने पर उन्हें ये भी याद नहीं रहा था कि वो तार-जाम के लिए घर से रवाना हुए थे।"

"अच्छा उस मैनेजर तक किस तरह पहुंचे थे?"

"मैनेजर के मुताल्लिक़ इतना ही बता सका था कि वो तार-जाम वाले ऑफिस में यही चीखते हुए घुसे थे— 'अरे बून्द आई.... अरे बून्द आई' और बाहर उनकी कार मौजूद थी।"

"तो गोया ये भी नहीं कहा जा सकता कि वो खुद ही कार ड्राइव करते हुए वहां तक पहुंचे थे या कोई दूसरा पहुंचा गया था?"

"जी हां.... वज़ूक़ (दावे) से कुछ नहीं कहा जा सकता।"

फ़रीदी कुछ सोचने लगा। लड़की बार-बार पोर्च की तरफ देखने लगती थी —जहां हमीद बकरे के पास खड़ा ग़ालिबन उससे कुछ कह रहा था।

"अच्छा....!" कुछ देर बाद फ़रीदी तवील (लंबी) सांस लेकर बोला— "दिमागी ख़लल की हालत में वो और क्या कहते हैं?"

"अरे बून्द के अलावा और कुछ नहीं। उनसे लाख पूछा जाता है कि कैसी बून्द, लेकिन वो कुछ नहीं बताते?"

"खैर मैं देखूंगा कि क्या मामला है।"

"क्या आप साथ नहीं चल सकते?" —लड़की ने इल्तजाइया (विनती भरे) अंदाज़ में कहा।

"चल सकता हूं।"

"ओह.... बहुत-बहुत शुक्रिया जनाब।"

थोड़ी ही देर बाद फ़रीदी और हमीद अपनी कार में सर फ़ैयाज़ की कयामगाह 'हारून लॉज' की तरफ जा रहे थे। ये शहर की मादूद-ए-चंद (चुनिंदा) शानदार इमारतों में से थी जिसका मालिक सर फ़ैयाज़ बड़े सरमायादारों (पूंजीपतियों) में से था।

हमीद ने पूछा— "ये लड़की हमें कहां ले जा रही है?"

"अपने घर....!"

लड़की की कार आगे थी। हमीद ने पाइप का एक लंबा कश लेकर धुआं छोड़ते हुए पूछा— "हम वहां कितने दिन कयाम (रुकेंगे) करेंगे?"

"जितने दिन तुम चाहो।"

"उसकी बड़ी बहनें भी होंगी?"

"ज़बान बंद रखो। अगर तुमने इस बकरे को जल्दी घर से न हटाया तो मैं बहुत बुरी तरह पेश आऊंगा।"

"आप पहले अपने कुत्तों का इंतज़ाम कीजिये। मैं बकरे के मामले में बहुत ज़्यादा हसास (संवेदनशील) वाकअ़ (स्थित) हूं, लिहाज़ा मुझे उम्मीद है कि आप इस मसले पर आइंदा बहुत एहतियात से गुफ़्तगू करेंगे।"

"मैं बहुत एहतियात से तुम्हें चांटा मार दूंगा।"

"आप कुछ भी कीजिये बकरा वहीं रहेगा जहां अब है। वैसे मेरा ख्याल है कि आप इस बकरे के तज़किरे (चर्चा) पर बकरे के तज़किरे को तरजीह देते हैं।"

"हमीद तुम्हें कब अक्ल आएगी। इस किस्म की घटिया हरकतें सारा वक़ार (सम्मान) खाक में मिला देती हैं।"

"मुझे वक़ार से कतई दिलचस्पी नहीं है। मैं मामूली आदमियों की तरह ज़िंदा रहना चाहता हूं और वक़ार के जरासीम (कीटाणु) टी.बी. के जरासीम से भी ज़्यादा मोहलिक (घातक) होते हैं।"

"अच्छा बकवास बंद करो।" फ़रीदी ने नाखुशगवार लहजे में कहा और हमीद खामोश हो गया। वो अगली कार वाली लड़की के मुताल्लिक़ सोच रहा था। लड़की काफी दिलकश थी और उसकी आवाज़ में बड़ी जिंसी कशिश (आकर्षण) थी।

लेकिन फ़रीदी ने अभी तक इसके मुताल्लिक़ कुछ भी नहीं बताया था। वैसे हमीद का अंदाज़ा था कि वो किसी अच्छे घराने से ताल्लुक रखती है।

अगली कार 'हारून लॉज' के फाटक में मुड़ गई।

"हाइँ.... ये तो हारून लॉज है।" हमीद यकायक उछल पड़ा।

"हां.... और वो सर फ़ैयाज़ की पोती है।"

"सर फ़ैयाज़ की पोती।" हमीद हक्का-बक्का रह गया। फिर बेतहाशा हंसने लगा। इतने में उनकी कार भी हारून लॉज के कंपाउंड में दाखिल हो गई।

"क्यों.... तुम हंसे क्यों?"

"कुछ नहीं....!" हमीद की शरारत-आमेज़ मुस्कराहट अभी बरकरार थी। फ़रीदी कुछ नहीं बोला। चुपचाप कार से उतर गया।

"आइये.... इधर आइये।" लड़की ने कहा, जो अपनी गाड़ी से उतर कर पोर्च की तरफ बढ़ रही थी। फ़रीदी और हमीद आगे बढ़े।

"बस चले आइये— ये तकल्लुफात (औपचारिकता) का मौका नहीं है। मैं आप को सीधे दादाजान के ख्वाबगाह (शयनकक्ष) तक ले चलूंगी।"

फ़रीदी ने फिर हमीद के होंठों पर एक बेसाख्ता (स्वाभाविक) किस्म की मुस्कराहट देखी। वो इमारत में दाखिल हो रहे थे, लड़की आगे बढ़ी। हमीद अब भी मुस्कुरा रहा था और फ़रीदी उसे बार-बार इस अंदाज़ में देख रहा था जैसे अभी चबा जाएगा।

लड़की एक जगह रुक गई। वो एक कमरे के सामने थे जिसके दरवाज़े पर एक कुशादा-कामत (लंबे-चौड़े) और सेहतमंद आदमी इस अंदाज़ में खड़ा था जैसे वो उन्हें आगे नहीं जाने देगा।

"ये कर्नल फ़रीदी हैं।" लड़की ने उस आदमी से कहा।

"मैं नहीं समझा आप क्या कहना चाहती हैं।"

"ये दादाजान से मिलेंगे।"

उसकी पेशानी (माथे) पर तीन-चार शिकनें उभरीं और फिर गायब हो गईं। उसने बड़े अदब से फ़रीदी से पूछा— "क्या सर फ़ैयाज़ आपसे बखूबी वाकिफ हैं?"

"नहीं, हम एक-दूसरे के शनासा (परिचित) नहीं हैं।" फ़रीदी ने जवाब दिया।

"तब तो मैं माफ़ी चाहता हूं जनाब।" उसने बड़ी लजात (विनती) से कहा — "डॉक्टरों का कहना है कि उन्हें अजनबियों से दूर रखा जाए।"

दफ़अतन (अचानक) अंदर से एक रोती हुई सी आवाज़ आई— "बून्द.... अरे बून्द आई।"

फ़रीदी लड़की की तरफ मुड़ा और लड़की उस आदमी को हटाने दौड़ी— "हट जाओ सामने से, हम लोग अंदर जाएंगे। कर्नल साहब मेरी दरख्वास्त पर यहां आए हैं।"

"मैं मजबूर हूं मोहतरमा।" वो दरवाज़े पर जम गया।

"अरे बून्द आई.... मुझे हटाओ.... हटाओ यहां से...." अंदर से फिर आवाज़ आई।

"हम अंदर जाएंगे।" लड़की मुट्ठी बांध कर हाथ झटकती हुई बोली।

"सिर्फ आप जा सकती हैं मोहतरमा।"

फ़रीदी बड़ी तवज्जो (ध्यान) से दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा था।

"अच्छा....!" लड़की ने गुस्से भरी आवाज़ में कहा और कमरे में घुसती चली गई। फ़रीदी और हमीद बाहर ही

वहीं खड़े रहे।

दफ़अतन (अचानक) हमीद ने उस आदमी को मुखातिब करके कहा— "हमारे वक़्त की बर्बादी इस इमारत पर भारी भी पड़ सकती है।"

फ़रीदी ने उसे हैरत से देखा लेकिन कुछ बोला नहीं। उस आदमी की पेशानी (माथे) पर फिर शिकनें उभरीं और उसने आहिस्ता से कहा— "मैं नहीं समझा।"

"कोई बात नहीं।" —फ़रीदी मुस्कुराया— "ग़ालिबन साहबज़ादी ग़लतफ़हमी में मुब्तला (फंसी) हैं। उनका ख्याल है कि शायद मैं उनके दादाजान की अ़लालत (बीमारी) के सिलसिले में कुछ कर सकूं।"

"ओह.... क्या आप डॉक्टर हैं?" —उसने पूछा।

"नहीं...." —फ़रीदी ने जेब में हाथ डालते हुए कहा और फिर उसकी तरफ अपना विज़िटिंग कार्ड बढ़ाते हुए बोला— "आपका सर फ़ैयाज़ से क्या ताल्लुक है?"

"मैं उनका प्राइवेट सेक्रेटरी हूं जनाब।" —उसने कार्ड पर नज़र जमाते हुए कहा— "मगर जनाब मुझे हैरत है कि मोहतरमा शकीला ने आपको क्यों तकलीफ दी।"

फ़रीदी ने फिर हमीद के होंठों पर वही गुस्सा दिलाने वाली मुस्कराहट देखी। इतने में लड़की वापस आ गई, उसके चेहरे पर झुंझलाहट और मायूसी के मिले-जुले आसार थे।

"उन्हें नींद आ गई है।" —उसने फ़रीदी से कहा।

"हम हमेशा जागते रहते हैं। फिर कभी आइयेगा।" —फ़रीदी बोला।

"मैं क्या बताऊं— मुझे यकीन है—" लड़की ने कुछ और भी कहना चाहा लेकिन फ़रीदी वापस जाने के लिए मुड़ चुका था।

वो उसके साथ-साथ चलती रही। हमीद दोनों के पीछे था।

लड़की कह रही थी— "मुझे यकीन है कि दादाजान की अ़लालत कुदरती नहीं है। वो किसी चक्कर में फंस गए हैं।"

"किस चक्कर में?" —फ़रीदी ने उसकी तरफ देखे बगैर सवाल किया।

"अगर मुझे ही मालूम होता तो आपको इस तरह तकलीफ क्यों देती।"

दफ़अतन हमीद बोला— "क्या आपको वो भिकारन याद है मोहतरमा शकीला जो एक रात अपने साथ एक नौजवान ख़्वांचा-फ़रोश (फेरीवाले) को हारून-अल-रशीद के महल में ले गई थी और दूसरी सुबह वो ख़्वांचा-फ़रोश अपने लिए एक दुकान तलाश करता फिर रहा था।"

पेज **101**

लड़की चलते-चलते रुक गई।

उसने हमीद को नीचे से ऊपर तक देखा और फिर मुस्कुराकर बोली— "आपको इसका इल्म कैसे हुआ?" फ़रीदी भी रुक गया।

वो हमीद को घूर रहा था।

"मगर शकीला साहिबा!" —हमीद ने खुश्क लहजे में कहा— "न हम ख़्वांचा-फ़रोश हैं और न हमें किसी हारून-अल-रशीद का दरबार मुतअ़य्यर (प्रभावित) कर सकता है। आपने हमारा बहुत कीमती वक़्त बर्बाद किया है— इसे हमेशा याद रखियेगा।"

बन्दर का पीछा

लड़की के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं, उसने मुस्कुराने की कोशिश की मगर नाकाम रही।

फ़रीदी उसे हैरत से देख रहा था। "दो.... देखिये.... आप ग़लत समझे।"

—

लड़की हांफती हुई बोली— "मैं संजीदा हूं।"

"संजीदगी ही किसी मज़ाक में जान डाल देती है।" —हमीद के लहजे की खुश्की बदस्तूर बरकरार थी।

"ये मज़ाक नहीं था— आप यकीन कीजिये।"

हमीद फ़रीदी की तरफ फातिहाना (विजेता) अंदाज़ में देख कर मुस्कुराया। लेकिन फ़रीदी ने उससे ये भी नहीं पूछा कि वो दोनों चलते-चलते रुक क्यों गए हैं।

"ये मज़ाक नहीं था— मैं भी समझता हूं।" —हमीद ने कहा— "फिर.... अब आप क्या चाहती हैं?"

"मैं माज़रत (क्षमा) करना चाहती हूं।" —लड़की ने बौखलाए हुए अंदाज़ में कहा— "हो सकता है मैं गलती पर हूं।"

"ज़रूरी नहीं कि आप गलती पर हों।" —फ़रीदी ने कहा— "मैं हर वक़्त इस केस पर हमदर्दी से गौर कर सकता हूं।"

"तो आप इसे केस तस्लीम (स्वीकार) करते हैं?" —लड़की जल्दी से बोली।

"मुमकिन है।" —फ़रीदी कुछ सोचता हुआ बोला— "हां वो सफ़ेद कश्ती 'फन आईलैंड' के किस साहिल पर देखी थी आपने?"

हमीद सफ़ेद कश्ती के तज़किरे पर फ़रीदी को घूरने लगा।

"जी हां—"

"आपका क्या ख्याल है.... क्या वो किसी बहरी (Naval) फ़ौज से मुताल्लिक़ थी?"

"मैंने उस पर इस किस्म का कोई निशान नहीं देखा जिसकी बिना पर उसे बहरी फ़ौज की कश्ती समझ सकूं।"

"क्या वो आपकी लॉन्च से बड़ी थी?"

"जी हां.... वो हमारी लॉन्च से चार गुना ज्यादा बड़ी रही होगी।"

"बादबानी कश्ती (Sailing boat)?"

"जी नहीं.... उसमें मोटर ही था.... ओह.... हम यहां खड़े क्यों हैं। स्टडी में चलिये।"

"नहीं.... शुक्रिया।" —फ़रीदी ने कहा— "आपकी लॉन्च इस वक़्त कहां होगी?"

"वो साहिल ही पर रहती है। इस वक़्त भी होगी— किराए पर चलने वाली लॉन्च नहीं है।"

"क्या आप फन आईलैंड तक चल सकेंगी। मैं वो जगह देखना चाहता हूं जहां आप को सफ़ेद कश्ती नज़र आई थी।"

"मैं ज़रूर चलूंगी।"

"तो आइये।" हमीद मुतअय्यर (हैरान) था।

उसे इल्म था कि फ़रीदी अरसे से किसी सफ़ेद कश्ती की फ़िक्र में है, लेकिन यहां इसका तज़किरा क्या मायने रखता था। उसे ये भी नहीं मालूम था कि घर पर उन दोनों में किस मसले पर गुफ्तगू हुई थी, क्योंकि वो तो अपने बकरे समेत वहां से टल ही गया था। वो इमारत से बाहर

आए।

फ़रीदी ने लड़की से कहा— "मेरी ही गाड़ी में चलिये। मैं आपको वापस छोड़ जाऊंगा।"

हमीद की हैरत लम्हा-ब-लम्हा बढ़ती जा रही थी। लड़की पिछली सीट पर बैठ गई। हमीद फ़रीदी के साथ ही बैठा और कार बंदरगाह की तरफ रवाना हो गई।

"क्या सर फ़ैयाज़ का सेक्रेटरी उनके मामलात में बहुत ज्यादा दखील (दखल देने वाला) है?" —फ़रीदी ने पूछा।

"बहुत ज्यादा....!" —लड़की ने जवाब दिया।

"ये कितने दिनों से उनकी मुलाज़मत में है?"

"तीन साल से। मगर आपको ये कैसे मालूम हुआ कि वो उनके मामलात में बहुत ज्यादा दखील है?"

"ये मेरा अंदाज़ा है।"

"कमाल है।" —लड़की ने हैरत ज़ाहिर की।

"हारून लॉज में सर फ़ैयाज़ के कितने अइज़्ज़ा (रिश्तेदार) रहते हैं?"

"मैं हूं— मेरी मम्मी और डैडी। मेरी दो छोटी बहनें।"

"मगर मुझे हैरत है कि सर फ़ैयाज़ की तीमारदारी (सेवा) सिर्फ सेक्रेटरी को करनी पड़ती है।"

"दादाजान बेचारे बहुत सीधे आदमी हैं। मुझे डर है कि वो मर्द-ए-ना-दनी उन्हें ब्लैकमेल कर रहा है।"

"क्या मतलब—"

"अंदाज़ा कुछ ऐसा ही है।" —लड़की तवील (लंबी) सांस लेकर बोली— "वो उन पर छाया हुआ है। आखिर उसकी कोई वजह तो होनी चाहिये। वो हकीकत में उससे खौफ खाते रहते हैं। खुद उन्होंने घर भर को ताकीद कर रखी है कि मखदूम के मामलात में कोई दखल न दे। मखदूम ही उसका नाम है।"

"ओहो.... तब तो वाकई आपका ख्याल दुरुस्त भी हो सकता है।" —फ़रीदी ने कहा— "आप मुझे बहुत ज़हीन (बुद्धिमान) मालूम होती हैं।"

लड़की कुछ न बोली और हमीद होले-होले मुस्कुराने लगा।

फ़रीदी ने उसे घूरकर देखा लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ।

"इन्हीं सब वजूहात (कारणों) की बिना पर मैंने आपको तकलीफ दी थी।"

"क्या उस दिन लॉन्च पर आपके लोगों के साथ सेक्रेटरी भी था?"

"जी हां.... वो भी था।"

"ये तो आप जानती ही होंगी कि वो कहां रहता है।"

"हमेशा हारून लॉज ही में रहता है। इस तीन साल के अरसे में मैंने उसे कभी छुट्टी लेते भी नहीं देखा। उसके मुताल्लिक़ कोई कुछ नहीं जानता।"

"आपके मुताल्लिक़ भी तो कोई कुछ नहीं जानता।" —हमीद बोल पड़ा।

"देखिये आप न जाने क्या समझ रहे हैं। इन मामलात का उससे कोई ताल्लुक नहीं।"

"किन मामलात का?" —फ़रीदी ने पूछा और लड़की हंसने लगी।

"ये मामलात आपकी समझ में नहीं आएंगे।" —हमीद ने मुंह बनाकर

खुश्क लहजे में कहा।

फ़रीदी ने फिर कुछ नहीं पूछा। शायद वो इस लड़की की मौजूदगी में हमीद से नहीं उलझना चाहता था।

कार बंदरगाह के इलाके में दाखिल हो रही थी।

"मग़रिबी गोशे (West side) की तरफ चलिये।" —लड़की ने कहा— "हमारी लॉन्च उधर ही रहती है। मगर ये ज़रूरी नहीं है कि कश्ती वहां मौजूद ही मिल जाए।"

"कोई दूसरा लॉन्च ले लेंगे।" —फ़रीदी ने कहा।

"मगर क्या ये ज़रूरी है कि वो सफ़ेद कश्ती इस वक़्त भी हमें वहां मिल जाए।" —हमीद ने कहा।

"नहीं.... ज़रूरी नहीं है। मैं तो सिर्फ वो जगह देखना चाहता हूं जहां वो इस दिन आई थी।"

"हां.... ये भी अपनी याददाश्त की मदद से बता सकूंगी।"

फ़न आईलैंड साहिल से तकरीबन चार मील के फासले पर वाक़े (स्थित) था। ये छोटा सा जज़ीरा (द्वीप) एक उम्दा तफ़रीह-गाह (Picnic spot) की हैसियत रखता था। शहरी लोग यहां आउटिंग के लिए आते थे। इस रौनक के लिए कोई दिन मख़सूस (विशेष) नहीं था। तकरीबन रोज़ ही यहां शहरी मसरूफियतों से उकताए हुए लोगों के जम-ए-गफ़ीर (भारी भीड़) नज़र आते थे।

वो तीनों एक लॉन्च में बैठकर फ़न आईलैंड के लिए रवाना हो गए।

"आप किस एयर में पढ़ती हैं?" —फ़रीदी लड़की से पूछ रहा था।

"सेकंड एयर में। दरअसल मुझे पढ़ने से ज्यादा दिलचस्पी नहीं है।"

"फिर क्यों वक़्त बर्बाद कर रही हैं?" —हमीद ने कहा।

"वक़्त गुज़ारने के लिए कोई दूसरा ज़रिया अभी तक हाथ नहीं आया।"

"आप मुझसे मिली होतीं।" —हमीद ने तशवीश-कुन (चिंताजनक) लहजे में कहा— "मैं अब तक दर्जनों काम पार कर चुका हूं।"

"क्या मतलब—"

"ओह.... कुछ नहीं.... बस समाज सेवा.... माहौल से उकताई हुई लड़कियों को राह-ए-रास्त (सही रास्ते) पर लगा देता हूं।"

"मैं माहौल से उकताई नहीं हूं।"

"तब तो फिर ठीक है।"

"आप अक्सर यहां आती रहती होंगी?" —फ़रीदी ने पूछा।

"जी हां।"

"इससे पहले कभी आप को वहां वो कश्ती नज़र आई थी?"

"इसके मुताल्लिक़ वज़ूक़ (दावे) से नहीं कह सकती। वो तो उस दिन वाकया ही ऐसा पेश आया था कि वो मेरे ज़हन में महफूज़ हो गई। वरना कितनी ही कश्तियाँ नज़रों से गुज़रती रहती हैं।"

हमीद सफेद कश्ती के तज़किरे (चर्चा) से ऊब गया था।

"ये मज़ाक कितनी देर में खत्म होगा शकीला साहिबा?" —उसने खुरदरे

लहजे में पूछा—

"मैं आप को किस तरह यकीन दिलाऊं कि ये मज़ाक नहीं है।"

"तुम बहुत देर से किसी मज़ाक का तज़किरा कर रहे हो।" —फ़रीदी बोला।

"अलिफ़-लैला की दास्तान है।" —हमीद ने कहा और लड़की हंसने लगी।

चन्द लम्हे खामोश रही फिर हमीद बोला— "सर्दियों की एक रात थी। क्वींस रोड पर एक ख़्वांचा-फ़रोश (फेरीवाला) अपनी मूँगफली बेच रहा था कि एक भिकारन उसके करीब आई। भिकारन बड़ी खूबसूरत थी। उसके होंठ गुलाब की पंखुड़ियों की तरह नाज़ुक थे और आँखों में सितारे झिलमिलाते थे।"

"फ़ुज़ूल बातें।" —लड़की ने हाथ उठाकर शर्मीले अंदाज़ में कहा। हमीद फ़रीदी को आँख मार कर मुस्कुराता हुआ बोला— "भिकारन ख़ौफ़ज़दा थी। उसने ख़्वांचा-फ़रोश से कहा कि वो उसे उसके ठिकाने तक पहुंचा दे क्योंकि उसे एक आदमी की तरफ से खतरा है। ख़्वांचा-फ़रोश की राल टपक पड़ी।"

"आप फिर बे-कार बातें करने लगे।" —लड़की ने गुस्सीले अंदाज़ में कहा।

"बहरहाल वो ख़्वांचा-फ़रोश उसे उसके घर तक पहुँचाने पर आमादा हो गया। मगर जब वो अ़ज़ीम-उश-शान (शानदार) इमारत के सामने पहुंचा तो उसके कदम रुकने लगे। लड़की ने उससे कहा कि उसकी अंधी माँ इसी कंपाउंड में एक झोपड़ी में रहती है। मालिक मकान एक शरीफ़ आदमी है, जिसने रहम खाकर रहने को जगह दे दी है। ख़्वांचा-फ़रोश को इत्मीनान न हुआ। उसकी जेब में दिन भर के कमाए हुए तीन-चार रुपये थे वह सोचने लगा कि कहीं ये किसी बदमाश की कारिंदा न हो। लेकिन

क़ब्ल इसके कि वो कुछ कहता, दो-तीन आदमी उस पर टूट पड़े।"

फ़रीदी बहुत ज्यादा तवज्जो (ध्यान) और दिलचस्पी से सुन रहा था। उसने एक बार लड़की पर उचटती सी नज़र डाली और फिर हमीद की तरफ देखने लगा।

हमीद पाइप के दो-तीन कश लेकर बोला—

"थोड़ी ही देर बाद उसने खुद को एक बहुत बड़े कमरे में पाया जहाँ कुरून-ए-वुस्ता (Medieval period) की सी महफ़िल गर्म थी। ताक़ों में शमाएँ रोशन थीं और दो-चार लोग बैठे सर धुन रहे थे, जैसे ही वह वहाँ पहुँचा तख़्त पर बैठे हुए शहंशाह ने तालियाँ बजाईं और बोला—

'अरे ये बाख़्तर का शहज़ादा कहाँ से आ गया'। ग़रज़ कि उस बेचारे ने पूरी रात गुज़ारी।"

पेज **106**

बेहतरीन किस्म के खाने खाए। अहद-ए-क़दीम (प्राचीन काल) का कीमती लिबास पहना और जब सुबह होने को आई तो अपनी तरफ मरम्मत करने के बाद उसे पांच हज़ार रुपये दिए गए और मूँगफली के फलों का टोकरा ज़ब्त कर लिया गया। दो दिन तक तो वह तकरीबन नीम-दीवाना सा रहा पर जब उसे यकीन आ गया कि वह पांच हज़ार उसके ही हैं तो उसने अपने नए बिजनेस की बुनियाद डाली और अब वह शहर के बड़े जनरल मर्चेंट्स में से है।"

लड़की हंसती रही फिर बोली— "किसी ज़माने में हमारी तफ़रीहात (मनोरंजन) कुछ इसी किस्म की हुआ करती थीं। यहाँ एक नहीं कई ताज़िर (व्यापारी) हमारी तफ़रीहात ही की बिना पर अपनी मौजूदा

हैसियत बना सके हैं। ओह, कितनी दिलचस्प चीज़ होती थी इन लोगों की बौखलाहट इन में से कई लोगों को तो मैं ने अपने जिस्म पर बार-बार चुटकी लेते भी देखा था। जैसे उन्हें अपनी बेदारी (जागरूकता) पर यकीन ही न हो।" वह हंसती रही और हमीद बुरा सा मुंह बनाए बैठा रहा।

"मुझे तो इस वक़्त इल्म हुआ जब लोग अपने ये तरीके तफ़रीह तर्क कर चुके हैं। वरना एक ही रात ज़िन्दगी भर के लिए काफी होती।"

"क्या हमारी ये हरकतें गैर-कानूनी थीं?" —लड़की ने फ़रीदी से पूछा।

फ़रीदी ने नफी में सर हिलाते हुए कहा— "मगर आप लोगों के खिलाफ केस ज़रूर बन सकता था— बशर्ते कि तफ़रीह का शिकार होने वाला कोई आदमी इस पर तैयार हो जाता।"

लड़की ने इस जुमले की वजाहत नहीं चाही।

ग़ालिबन वह इस मसले पर फ़रीदी से मुत्तफ़िक़ (सहमत) थी।

कुछ देर तक खामोशी रही फिर हमीद बोला— "आज तक ऐसी कोई मिसाल मेरी नज़रों से नहीं गुज़री जब किसी दादा ने अपनी तफ़रीह के लिए पोती को इस्तेमाल किया हो।"

"आज तक मैंने कोई ऐसा पढ़ा-लिखा आदमी नहीं देखा, जो बकरों से दिल बहलाता हो।" ने तंज़िया लहजे में कहा। "गो मुझे कैप्टन हमीद साहब से मिलने का शर्फ पहले कभी नहीं हासिल हुआ लेकिन इनके मुताल्लिक मेरी मालूमात वसीअ (व्यापक) हैं।"

"हैं ना...!" हमीद चहक कर बोला। "फिर आप खुद ही समझती होंगी कि कैप्टन हमीद को बीवी बनाने का अंजाम क्या हो सकता है।"

"क्या आप लोगों को अब तक यही शुब्हा (संदेह) है कि मैं आपका वक़्त बर्बाद कर रही हूँ।"

"ऐसे हालात में शुब्हा हो भी सकता है।" फरीदी ने मुस्कुराकर कहा। "हो सकता है यह भी रोमांटिक ड्रामा हो।"

"मैं किस तरह यकीन दिलाऊं।" लड़की ने बेबसी से कहा। फिर कुछ देर बाद बोली।

"आप उन डॉक्टरों से मालूम कर सकते हैं जो दादा जान का इलाज कर रहे हैं। क्या कर्नल ..."

गैर-संजीदा आदमी हैं। क्या डॉक्टर मकरजी हमारे किसी मज़ाक में शरीक हो सकते हैं.... क्या डॉक्टर।"

"ओह....!" फ़रीदी हाथ उठा कर बोला— "मैं ने सिर्फ ख्याल ज़ाहिर किया था। इसका ये मतलब नहीं कि मेरा ख्याल दुरुस्त ही हो।"

"आप मुझे बताइये कि फिलहाल कौन सी मुहिम दरपेश है?" —हमीद ने फ़रीदी से कहा। "फिर मैं फैसला कर सकूंगा कि असलियत क्या है।"

फ़रीदी ने कम से कम अल्फ़ाज़ में लड़की की दास्तान दोहराई और फिर बोला— "फिलहाल तुम कोई फैसला न कर सकोगे।"

"क्यों न कर सकूंगा। ये दास्तान भी किसी जासूसी नावल का प्लाट

मालूम होती है।"

"जासूसी नावलों के प्लाट भी इंसानी ज़हन ही की पैदावार होते हैं।" —फ़रीदी ने कहा।

"मैं तो यकीन नहीं कर सकता। आप कीजिये।" —हमीद बोला।

"मेरा ख्याल है कि आपके यकीन या बे-यकीनी की कोई अहमियत ही नहीं है।" —लड़की चिढ़ कर बोली।

"क्या? ये आप मुझसे कह रही हैं। यानी कैप्टन हमीद से।"

"जी हां, आप ही से कह रही हूं।"

"ओहो.... हम पहुँच गए।" —फ़रीदी बोला।

वह 'फ़न आईलैंड' से बहुत करीब थे।

फ़रीदी ने लड़की से कहा— "अब आप बताइये लॉन्च किधर ले जाई जाए। मैं सिर्फ वह जगह देखना चाहता हूं जहाँ आप को सफ़ेद कश्ती नज़र आई थी।"

लॉन्च की रफ़्तार बहुत सुस्त हो गई। लड़की के इशारे पर लॉन्च का रुख मोड़ा गया और फिर लड़की के बयान के मुताबिक लॉन्च ठीक उसी जगह पर रुक गई जहाँ उसने सफ़ेद कश्ती देखी थी। वे लॉन्च से उतर गए। जज़ीरा (द्वीप) बनावट के एतबार से किसी पहाड़ी इलाके का एक टुकड़ा मालूम होता था। कहीं ग़ार (गुफाएं) थे और कहीं ऊँचे-नीचे टीले। जहाँ कहीं भी सतह ज़मीन मिली थी, इमारतें बना दी गई थीं। पार्क और बाग़ात तरतीब दिए गए थे, अख़बार बरदार जहाज़ी कंपनियों के दफ़्तर भी यहीं थे। अचानक हमीद ने फ़रीदी को एक जानिब नशीब (ढलान) में तेज़ी से उतरते देखा और क़ब्ल इसके कि हमीद आगे बढ़ता वह नज़रों से ओझल

हो चुका था।

बिल्कुल ऐसा ही मालूम हुआ जैसे वह नशीब के किसी ग़ार में जा गिरा हो। हमीद के पीछे लड़की भी दौड़ी और बदस्तूर दौड़ती रही फिर वह सतह ज़मीन पर पहुँच गए लेकिन फ़रीदी का कहीं पता न था। हमीद ने उन ग़ारों की तरफ देखा जिन्हें वह ऊपर छोड़ आया था लेकिन आखिर फ़रीदी उन ग़ारों में...

पेज **108**

में क्यों उतरने लगा। हमीद आज पहली बार यहाँ नहीं आया था। पूरा जज़ीरा उसका देखा हुआ था। उसे कि ये ग़ार साँपों और दूसरे ज़हरीले कीड़ों से भरे पड़े हैं।

"क्या फ़रीदी साहब को बंदरों से इतनी ही दिलचस्पी है?" —लड़की ने पूछा।

"मैं आप का मतलब नहीं समझा।" —हमीद ने घूर कर कहा।

"वह एक बंदर के पीछे दौड़े थे।"

"देखिये.... मैं ऐसे मौकों पर मज़ाक पसंद नहीं करता।" —हमीद झिझला कर बोला।

"अरे.... आप को हो क्या गया है आख़िर। यहाँ जो बात भी ज़ुबान से निकली— मज़ाक और मज़ाक़ समझ रहे हैं आप। मैं दिन-रात मज़ाक ही क्या करती हूँ।"

हमीद कुछ न बोला। हालाँकि इस जज़ीरे में बंदरों की कसरत (बहुतायत) थी। लेकिन अभी इस वक़्त क़रीब-ओ-जवार (आस-पास) में एक भी बंदर

नहीं नज़र आया था। बंदर उमूमन (आमतौर पर) किनारों से दूर ही रहते थे। सोच में पड़ गया।

लड़की मुतजस्सिसाना (उत्सुक) नज़रों से चारों तरफ देख रही थी।

"आप किस के मशवरे पर हम लोगों के पास आई थीं?" —हमीद ने पूछा।

"मैं ने किसी से मशवरा नहीं लिया था।" —लड़की ने उकताए हुए अंदाज़ में कहा— "आख़िर मेरी बात पर यक़ीन क्यों नहीं आता। क्या आप की तफ़रीहात आम आदमियों की तफ़रीहात से नहीं होतीं। फिर आप एक ज़िम्मेदार ऑफिसर क्यों हैं। आप का महकमा आप पर कैसे एतमाद (भरोसा) करता है। आदमी अपनी ज़िन्दगी के हर लम्हे में तो गैर-संजीदा नहीं रहता।"

"मेरी बात अलग है।" —हमीद ने सर हिला कर कहा— "मुझे बचपन ही में पागल कुत्ते ने काटा था।"

"अब क्या यह बात आप संजीदगी से कह रहे हैं?" हमीद कुछ न बोला।

वह सोच रहा था कि इस लड़की के साथ वक़्त अच्छा गुज़र सकता है। उसे दादा की पुर-असरार (रहस्यमयी) अ़लालत से दिलचस्पी थी और न उस सफ़ेद कश्ती से जिसके लिए फ़रीदी तक आया था। अलबत्ता लड़की का बयान दुरुस्त था तो वह इस बंदर में ज़रूर दिलचस्पी ले सकता था।

"आपने कुछ देर पहले मेरे बकरे का तज़किरा बहुत बदतमीज़ी से किया था।" हमीद ने आवाज़ में कहा।

"आप शायद मुझसे झगड़ा करना चाहते हैं।" लड़की मुस्कुराई।

"लड़ना-झगड़ना मेरा महबूब मश़ग़ला (पसंदीदा काम) है।"

"आप इस वक़्त दुनिया की सारी औरतों की नुमाइंदगी (प्रतिनिधित्व) कर रही हैं।"

"ओह.... वह....!" दफ़अतन (अचानक) लड़की ने चौंक कर एक तरफ इशारा किया।

हमीद उधर देखने लगा। ऊपर के एक ग़ार से फ़रीदी बाहर आ रहा था। वह जल्द ही उन तक पहुँच गया।

"मुझे अफ़सोस है।" —उसने लड़की से कहा— "मैं अपना वादा पूरा न कर सकूंगा। अगर आप वापस चली जाएँ तो बेहतर है। वैसे अगर आप चाहें तो मेरी कार इस्तेमाल कर सकती हैं। मैं वापसी पर उसे पोर्ट से ले लूंगा।"

नन्हा आदमी

लड़की खामोश रही। उसने कुछ कहने के लिए होंठ ज़रूर हिलाए थे लेकिन फिर चुप ही रही थी।

"फिर आप ने वादा क्यों किया था?" —हमीद ने कुछ इस अंदाज़ में कहा जैसे इस वादा खिलाफी की बिना पर लाखों का नुकसान हो गया हो।

"कोई बात नहीं है जनाब।" —लड़की जल्दी से बोली— "मैं तन्हा चली जाऊंगी। आपकी गाड़ी ले जाने की भी ज़रूरत नहीं। मैं साहिल से टैक्सी कर लूंगी। मगर आप शायद किसी बंदर के पीछे दौड़े थे।"

"हाँ....!" फ़रीदी हँसने लगा— "मुझे बंदर बहुत अच्छे लगते हैं।"

"क्या?" हमीद आँखें फाड़ कर बोला।

"बंदर.... बस....!" फ़रीदी ने हाथ उठा कर कहा।

"मेरे ख्याल में ये वही बंदर था जिसे लोगों ने अक्सर सिगरेट पीते भी देखा है।" —लड़की बोली।

"मैं ने तो सुना है कि वह यूनिवर्सिटी से फलसफे (Philosophy) की क्लास भी लेता है।" —हमीद ने बुरा सा मुंह बना कर कहा।

फ़रीदी चन्द लम्हे हमीद को घूरता रहा फिर बोला— "तुम इन्हें हारून लॉज छोड़ कर घर चले जाना।"

"और अगर मैं इन के साथ हारून लॉज ही में रह जाऊं तो आप को क्या ऐतराज़ हो सकता है।"

"ऐतराज़ मुझे होना चाहिये।" —लड़की हँसने लगी— "कर्नल साहब को क्या ऐतराज़ हो सकता है।"

"बस जाओ।" —फ़रीदी ने हमीद से कहा। वह दोनों चल पड़े।

फ़रीदी वहीं रहा और पोर्ट पर पहुँच कर हमीद ने कहा— "यहाँ के रेस्टोरेंट में झींगे बहुत अच्छे फ्राई किये जाते हैं।"

"झींगे मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते।"

"तो फिर एक ऐसा होटल भी है जहाँ भैंस का मिसल (दही-बड़ा जैसा) भी मिल जाएगी।"

"मैं सिर्फ काफी पीना चाहती हूँ।"

"तो फिर आइये। मुझे ये जज़ीरा बहुत पसंद है। अगर यहाँ ज़मीन मिल सकती तो एक छोटा सा बंगला बनवाता।"

"काश मुझे यहाँ एक कब्र की ज़मीन मिल सकती। मुझे भी ये जज़ीरा बहुत पसंद है।"

"आप किस उम्र में मरना पसंद करेंगी?"

"जिस उम्र में भी कोई ऐसा साथी मिल गया जो मेरे साथ ही मरना पसंद करे वरना दुनिया की तन्हाई मुझे खा जाएगी। अब आज कल मैं बहुत शिद्दत से बोर हूँ।"

"क्यों बोर हैं?"

"दादाजान की अ़लालत (बीमारी)। हम दोनों बेहतरीन साथी थे।"

"ऐसे सआ़दत-मंद (आज्ञाकारी) दादाओं से मिल कर बड़ी ख़ुशी होती है।" —हमीद ने संजीदगी से कहा— "मेरा दादा तो बड़ा ख़ूँख़्वार आदमी था। पता नहीं जन्नत में फरिश्तों से उसकी कैसे बनती होगी।"

"ओहो....! आप बड़े बे-दर्द आदमी मालूम होते हैं। मरे हुए लोगों का तज़किरा इस तरह नहीं करते।"

"मैं मजबूर हूँ। इस दादा की वजह से मेरी ज़िन्दगी बर्बाद हो गई।"

"क्यों....?"

"कुछ नहीं। वह खुद फ़ौज में जमादार था। जब मैं बी.ए. कर चुका तो मुझे कमीशन दिलवा दिया। दूसरी जंग-ए-अ़ज़ीम का ज़माना था लेकिन जंग छह माह से ज्यादा न चल सकी। फिर मैं नहीं जानता कि मुझे किस तरह महकमा-ए-सुराग़-रसानी (जासूसी विभाग) में धकेल दिया गया।"

"ओहो.... तो आप को यह ज़िन्दगी पसंद नहीं?"

"कतई नहीं....!"

"हालाँकि किसी दूसरे शोबे में आप इतनी शोहरत नहीं हासिल कर सकते थे।"

"ख्याल है.... आपका.... अगर मुझे लड़कियों का सिपह-सालार बना दिया जाए तो मैं सारी दुनिया को गारत (नष्ट) कर सकता हूँ। फिर इस शोहरत का क्या पूछना।"

वह एक रेस्टोरेंट में दाखिल हुए। हमीद ने झींगों और काफी का आर्डर दिया।

बैठते ही पिछला तज़किरा फिर छिड़ गया।

"यह कर्नल फ़रीदी किस तरह आए थे इस महकमे में। क्या वह भी फ़ौज में थे?"

"यह दिमागी फितूर का नतीजा है। ऑक्सफ़ोर्ड से एम.ए. किया। क्रिमिनोलॉजी पर अरसे तक तहक़ीक़ (शोध) करते रहे। कुछ दिन लेबोरेटरी वर्क भी किया और इसके बाद थानेदार हो गए.... खुदा की पनाह।"

"थानेदार हो गए! क्या मतलब....!"

"पुलिस ट्रेनिंग में चले गए जिसके लिए हमारे मैट्रिक पास नौजवान बे-ताब रहा करते हैं। बहरहाल कुछ दिन थानेदार रहे फिर महकमा-ए-सुराग़-रसानी में चले आए। इस वक़्त से अब तक यहीं हैं और मरने के बाद शायद दफ्तरी के किसी हिस्से में दफ़न कर दिए जाएँ।"

"बीवी बच्चे क्यों नहीं हैं?"

"हाँ....!" हमीद एक तवील (लंबी) अंगड़ाई लेकर बोला— "इस सवाल

का जवाब ज़रा मुश्किल है।"

वह मुस्कुराया। फिर आगे झुक कर आहिस्ता से बोला— "बच्चे इसलिए नहीं हैं कि बीवी नहीं है और बीवी इसलिए नहीं है कि इसका जवाब वह खुद ही दे सकेंगे।"

"आप अपनी कहिये।" —लड़की मुस्कुराई।

"मैं....!" हमीद ने एक तवील सांस ली और दर्दनाक आवाज़ में बोला— "एक ऐसे आदमी के असिस्टेंट से कौन शादी करेगा जो बंदर पकड़ने दौड़ता हो।"

इस लहजे पर लड़की बे-साख्ता (स्वाभाविक रूप से) हँस पड़ी फिर बोली — "मुझे खुद भी हैरत है कि फ़रीदी साहब उस बंदर के पीछे क्यों दौड़े थे? अंदाज़ बिल्कुल ऐसा ही था जैसे उसे पकड़ना चाहते हों।"

"बस यही बातें हैं जिनकी बिना पर कोई लड़की मुझसे शादी करने पर आमादा नहीं होती। मगर आपने उस बंदर के मुताल्लिक़ कुछ कहा था शायद यही कि वह सिगरेट भी पीता है।"

"जी हाँ.... मैं उसे यहाँ कई बार देख चुकी हूँ। लोगों का ख्याल है कि वह बहुत पुराना बंदर हो सकता है कि इसका कद चार फीट से भी ज्यादा हो। मामूली बंदरों से बहुत बड़ा। लोग उसे सिगरेट देते हैं और वह सिगरेट भी पीता है। अक्सर इशारे से सिगरेट मांगता है।"

"मैं भी अक्सर यहाँ आया हूँ। लेकिन ऐसा कोई बंदर मुझे नहीं दिखाई दिया।"

"अभी कुछ ही दिनों से दिखाई देने लगा है। मशहूर है कि वह किसी जहाज़ से इस जज़ीरे में आया था।"

हमीद कुछ सोचने लगा। लड़की उसे गौर से देख रही थी, इतने में वेटर तलब की हुई चीजें ले आया।

और मेज़ पर लगाने लगा।

इसके चले जाने पर लड़की बोली— "मैंने आज तक झींगे नहीं खाए।"

"आज खा कर देखिये। कुछ लोग झींगों से नफरत करते हैं मगर वही लोग बकरों की ओझड़ियाँ (Intestines) तक खा जाते हैं।"

"मैं नहीं खाऊँगी। मैं गोश्त बहुत कम खाती हूँ।"

"यह बड़ी अच्छी आदत है.... खैर हाँ.... कुछ नहीं.... दरअसल मैं अभी तक यही सोच सका कि हमें किस किस्म की गुफ़्तगू करनी चाहिये।"

"इसी किस्म की गुफ़्तगू कि अगर आपको लड़कियों का सिपह-सालार (Commander) बना दिया जाए तो आप सारी दुनिया का बेड़ा गर्क कर दें। आप बैठे क्यों हैं.... काफी बनाइये।"

"मैंने आज तक किसी लड़की के लिए यह नहीं किया।"

"मैं लड़का हूँ।"

"वह तो मैं शुरू से ही महसूस कर रहा हूँ। लेकिन काफी आप ही को बनानी पड़ेगी।"

"मेरा नाम शकीला है हमीद साहब।"

"सूरत भी ऐसी ही है। इतनी हसीन आँखें मैंने आज तक नहीं देखीं।"

"मुझे इस किस्म की शायराना बातों से दिलचस्पी नहीं है।"

हमीद खामोशी से झींगे खाता रहा और काफी ठंडी हो गई। शकीला को शायद उसकी इस हरकत पर गुस्सा आ रहा था लेकिन वह कुछ बोली नहीं। वैसे उसके चेहरे पर अच्छे आसार नहीं थे।

"शाम भी हमें यहीं गुज़ारने को दिल चाहता है।" हमीद ने कुछ देर बाद कहा।

"मैं तो अब जाऊँगी।"

"आप जा सकती हैं।" हमीद ने लापरवाही से कहा।

और शकीला सचमुच उठ गई। हमीद उसे बाहर जाते देखता रहा। उसने काफी नहीं पी थी। नज़रों से ओझल हो गई तो हमीद ने वेटर को बुलाकर दूसरी काफी लाने को कहा। पहले उसका इरादा था कि शकीला के साथ ही शहर वापस जाएगा मगर अब इस बंदर के तज़किरे ने उसे रुकने पर मजबूर कर दिया था। ज़ाहिर है कि फ़रीदी इसी बंदर के लिए यहाँ रुक गया था और सफ़ेद कश्ती का वाकया भी काफी पुर-असरार (रहस्यमयी) था। उधर तकरीबन एक माह से वह कश्ती साहिल के करीब

देखी जा रही थी और वह जब भी काला घाट के करीब से गुज़रती इसके आधे ही घंटे बाद एक बरहना (नग्न) लाश साहिल से आ लगती। अब तक की रिपोर्ट यही थी कि तकरीबन आठ लाशें अब तक मिल चुकी थीं और आठों बार वह सफ़ेद कश्ती काला घाट के करीब देखी गई थी।

फ़रीदी को इन दिनों सफ़ेद कश्ती का मियाद (समय) हो गया था। वह जब भी किसी सफ़ेद कश्ती का तज़किरा सुनता पूरी तरह मुतवज्जा (ध्यान केंद्रित) हो जाता और कभी-कभी इस सिलसिले में काफी भाग-दौड़ भी करता रहता। चुनाँचे आज भी एक सफ़ेद कश्ती का तज़किरा ही

उन दोनों को यहाँ तक लाया था। मगर इसका यह मतलब तो नहीं था कि किसी बंदर का वजूद भी इस कश्ती से मुताल्लिक़ हो। हमीद सोचता रहा। उसके ख्याल के मुताबिक यह भी मुमकिन था कि फ़रीदी की तवज्जो बंदर की गैर-मामूली जसामत (कद-काठी) ने अपनी तरफ मोड़ दी हो।

उसने काफी खत्म की और पाइप में तम्बाकू भरने लगा। रेस्टोरेंट के बाहर काफी चहल-पहल नज़र आ रही थी। आज इतवार होने की बिना पर सुबह ही से यहाँ खासी भीड़ हो गई थी। तम्बाकू-नोशी के बाद वह उठ गया। वह सोच रहा था कि मुमकिन है फ़रीदी वापस ही चला गया हो। मगर फिर ख्याल आया कि अगर जल्द ही वापसी का इमकान (संभावना) होता तो फ़रीदी उसे लड़की के साथ न जाने देता।

बहरहाल वह रेस्टोरेंट से बाहर निकला और अब वह फिर उसी तरफ जा रहा था जहाँ फ़रीदी को छोड़कर आया था। मगर उसने जल्द ही महसूस कर लिया कि उसका तआ़कुब (पीछा) किया जा रहा है। वह एक दुबला-पतला और दराज़-कद (लम्बे कद वाला) आदमी था। हमीद ने उसे रेस्टोरेंट में भी देखा था। इसे इत्तेफाक हो सकता है। मगर न जाने क्यों वह इसे सरसरी तौर पर न टाल सका। वह इस सिलसिले में अपना इत्मीनान करना चाहता था। इसका अंदाज़ा कर लेना मुश्किल नहीं था। हमीद यूँ ही बे-मकसद एक तरफ मुड़ा और पीछे देखे बगैर चलता रहा।

कुछ देर बाद वह रुका और पत्थर पर बैठकर पाइप में तम्बाकू भरने लगा। तआ़कुब करने वाला थोड़े ही फासले पर एक अख़बार फरोश से गुफ़्तगू करता हुआ नज़र आया।

हमीद ने अपना निचला होंठ दाँतों में दबा लिया। अब वह सोच रहा था कि फ़रीदी तक पहुँचने का ख्याल तर्क कर देना चाहिये। पता नहीं यह क्या मामला है। अगर फ़रीदी ने उसे हालात से बा-खबर रखा होता तो मुमकिन

था कि वह इस वक़्त किसी न किसी तरह उसका हाथ बटाता।

हमीद बैठा पाइप पीता रहा। वह आदमी भी एक अख़बार खरीद कर उससे थोड़े ही फासले पर बैठ गया था और अख़बार को इस तरह उठाए हुए पढ़ रहा था कि हमीद उसका चेहरा नहीं देख सकता था।

यहाँ इस जगह सिर्फ वही दोनों नहीं थे बल्कि बहुतेरे लोग चलते-चलते थक कर इधर-उधर बैठे थकान दूर कर रहे थे। हमीद ने सोचा कि कुछ देर यहाँ ज़रूर बैठेगा।

फिर वह आधे घंटे से पहले नहीं उठा। तआ़कुब (पीछा) करने वाला अभी बदस्तूर उसी अंदाज़ में अख़बार पढ़ रहा था। उठते वक़्त हमीद ने यह नहीं देखा कि वह भी उठा था या नहीं, लेकिन जब घाट पर पहुँचा और एक लॉन्च में बैठने लगा तो किनारे पर उसे वही आदमी दिखाई दिया लेकिन इस अंदाज़ से कि कहीं से भी यह ज़ाहिर न होता कि वह भी इसी लॉन्च में बैठेगा।

दस मिनट बाद लॉन्च ने किनारा छोड़ दिया लेकिन तआ़कुब करने वाला बदस्तूर किनारे ही पर खड़ा रहा। गोया वह इत्मीनान कर लेना चाहता था कि हमीद जज़ीरे से जा चुका है।

हमीद समझ रहा था कि शायद यह तआ़कुब जारी ही रहे गा लेकिन उसे इस पर हैरत भी नहीं थी। मुमकिन है सिर्फ जज़ीरे ही की हद तक उसकी मौजूदगी किसी के लिए बा़इस-ए-तशवीश (चिंता का कारण) रही हो। हमीद आज बड़े अच्छे मूड में था। बात दरअसल यह थी कि आज बहुत दिनों बाद शकीला जैसी किसी स्मार्ट लड़की से मुलाकात हुई थी। ऐसी लड़कियों की हम-नशीनी (साथ) गो उसके ज़हन के बारीक तरीन रेशों पर

असरअंदाज होती थी मगर तफरीह ज़रूर हो जाती थी और ऐसी तफरीह को वह हमेशा सेहत-ए-तफरीह का नाम दिया करता था।

लॉन्च समंदर का सीना चीरती हुई आगे बढ़ती रही। इस पर कई मुसाफिर भी थे। दो-तीन लड़कियाँ भी थीं। हमीद ने उन्हें अपनी तरफ मुतवज्जा (आकर्षित) करने की बहुत कोशिश की लेकिन शायद वह या तो इंतहाई कोढ़ (मूर्ख) थीं या इंतहाई शरीफ। आखिरकार थक हार कर हमीद ने उनके साथ की एक छोटी बच्ची को गाहे-बगाहे (समय-समय पर) चिढ़ाना शुरू कर दिया। बच्ची भी जवाब में मुँह चढ़ाती और खिलखिला कर हँस पड़ती।

दफ़अतन एक लड़की ने दूसरी को मुखातिब करके बुलंद आवाज़ में कहा — "शकीला जैसी लड़कियों के साथ देखा जाने वाला कोई शरीफ आदमी नहीं हो सकता।"

हमीद ने उसे घूर कर देखा और फिर दूसरी तरफ देखने लगा।

"ओह.... शकीला....!" दूसरी ने कहा— "तुम उसे लिख लो। वह कभी न कभी जेल ज़रूर जाएगी।"

"क्यों.... जेल क्यों जाएगी?" तीसरी ने पूछा।

"वह अर्जन पुरे के एक घटिया से मकान में रहती है लेकिन कॉलेज कार में आती है और वह भी एक नयी कार।"

"आवारा है?" तीसरी ने सवाल किया।

"पता नहीं। लेकिन मेरा ख्याल है कि वह डाकुओं के किसी गिरोह से ताल्लुक रखती है।"

पहली लड़की बे-साख्ता हँस पड़ी और फिर बोली— "तुम दोनों झक मार

रही हो।"

पेज **115**

"क्यों?" दोनों लड़कियाँ बैक-वक्त (एक साथ) बोलीं।

"वह यहाँ के बहुत बड़े सरमायादार फ़ैयाज़ की पोती है।"

"बकवास....!" दूसरी लड़की बोली।

"तुम मुझसे ज्यादा नहीं जानतीं।" पहली ने कहा।

"मजीद बकवास....!" दूसरी लड़की मज़हका उड़ाने वाले अंदाज़ में हँसी और फिर बोली— "तुम शायद अफीम खा गई हो। अरे मैंने उसे दर्जनों बार अर्जन पुरे के एक मकान से निकलते देखा है।"

"हो सकता है वहाँ उसका कोई दोस्त रहता हो।"

"सर फ़ैयाज़ की पोती का दोस्त अर्जन पुरे में रहेगा? शायद भंग पी रखी है तुमने।"

"भंग पीने वाली को क्या कहा जा सकता है।" तीसरी लड़की ने पूछा।

"भंगिन....!" दूसरी लड़की बे-साख्ता हँस पड़ी। पहली लड़की ने बुरा सा मुँह बनाया और वह दूसरी तरफ देखने लगी।

इस वक़्त हमीद की नज़र हमीद पर ही पड़ी। वह अब भी नन्ही बच्ची को मुँह चढ़ा रहा था।

"आज शाम को चलो मेरे साथ।" दूसरी लड़की ने कहा— "मैं तुम्हें उसे अर्जन पुरे में दिखा दूँगी।"

"जहन्नम में झोंको।" पहली लड़की झुझलाए हुए अंदाज़ में बोली— "मुझे क्या पड़ी है कि उसके लिए झक मारती फिरूँ।"

फिर लॉन्च साहिल से जा लगी। सारे मुसाफिर उतर गए और लड़कियाँ मुख्तलिफ रास्तों पर हो लीं। हमीद उस लड़की का तआ़कुब कर रहा था जिसने शकीला के मुताल्लिक़ ख्याल ज़ाहिर किया था कि वह डाकुओं के किसी गिरोह से ताल्लुक रखती है। मकसद यह नहीं था कि हमीद उसके बयान को सदाकत (सच्चाई) की कसौटी पर परखना चाहता था। बात सिर्फ इतनी सी थी कि वह शकीला के साथ ज्यादा वक्त नहीं गुज़ार सका था। इसलिए चाहता था कि इतवार का दिन बे-कारी में न गुज़रे।

एक जगह उस लड़की के करीब पहुँच कर कहा— "क्या आप मेरी एक बात सुनेंगी?"

लड़की चौंक कर मुड़ी और वहीं रुक गई। वह शायद अब तक इस तआ़कुब से बे-खबर ही थी। उसके चेहरे पर खौफ और हैरत के मिले-जुले आसार नज़र आ रहे थे।

"क्या बात है?" उसने कँपकँपाती हुई आवाज़ में कहा।

"शकीला के मुताल्लिक़ कुछ गुफ़्तगू करेंगे। ग़ालिबन आप ने उसे मेरे साथ फ़न आईलैंड में देखा है।"

"देखा होगा।"

"जी हाँ.... देखा था।"

"यह बहुत ज़रूरी और अहम बात है यानी कि मेरे मुस्तकबिल (भविष्य) का इनहसार (निर्भरता) इस पर है।"

"मगर मैं किसी शकीला को नहीं जानती।"

"ओह....!" हमीद की आवाज़ दर्दनाक हो गई— "अभी आप एतराफ़ (स्वीकार) कर चुकी हैं कि आप मुझे वहां शकीला के साथ देख चुकी हैं।"

"ओह.... मैं कहना चाहती थी कि मैं शकीला के मुताल्लिक़ कुछ नहीं जानती।"

"लेकिन लॉन्च में आप ने उसके मुताल्लिक़ बाज़ बहुत ही अजीब किस्म के इंकशाफ़ात (खुलासे) किये थे, जो कम-अज़-कम मेरे लिए दिल हिला देने वाले थे।"

लड़की चंद लम्हे सोचती रही फिर बोली— "आप का शकीला से क्या ताल्लुक है?"

"अरे वह मेरी मंगेतर है और आप की ज़बानी यह मालूम करके कि वह अर्जन पुरे के किसी मकान में रहती है मेरे पैरों तले से ज़मीन निकल गई।"

"ओह.... वाकई आप को सदमा पहुँचा होगा।" —लड़की ने हमदर्दाना लहजे में कहा।

"बहुत ज्यादा.... मैं आप का मशकूर (आभारी) हूँगा अगर आप मुझे तफ़सील से आगाह कर दें।"

"ज़रूर.... ज़रूर.... मैं जो कुछ भी जानती हूँ आप को बता दूँगी।"

"आइये तो फिर कहीं चल कर बैठें।"

"कहाँ....?" "किसी रेस्टोरेंट में।"

"नहीं.... यह मुनासिब नहीं। अगर मेरे किसी अ़जीज़ (करीबी) ने देख लिया तो.... आप तो जानते ही हैं कि मुतवस्सिट (मध्यम) तबके के लोग कितने तंग-नज़र (संकीर्ण सोच वाले) होते हैं।"

"बेशक.... बेशक....!" हमीद सर हिला कर बोला— "बे-हद तंग-नज़र होते हैं। मगर मैं ने सिर्फ सुना है तजुर्बा नहीं है क्योंकि मेरा ताल्लुक मुतवस्सिट तबके से नहीं है। अच्छा खैर! इसे जाने दीजिये। क्यों न हम किसी टैक्सी में बैठ कर शहर के चक्कर लगाते रहें।"

"ओह.... मगर वह और ज्यादा खतरनाक होगा।"

"कुछ भी हो। कोई हमें देख ही न सकेगा। मैं खिड़की के परदे खींच दूँगा।"

"हाँ यह ठीक है।" —लड़की कुछ सोचती हुई बोली।

तकरीबन दस मिनट इंतज़ार करने के बाद उन्हें एक टैक्सी मिल गई। हमीद ने खिड़कियों के परदे खींच दिये। ड्राइवर स्टीयरिंग पर झुका हुआ मानी-खेज़ (अर्थपूर्ण) अंदाज़ में मुस्कुरा रहा था।

टैक्सी चल पड़ी और हमीद ने फिर वही तज़किरा छेड़ दिया।

"शकीला ने मुझे बताया था कि वह सर फ़ैयाज़ की पोती है। ज़ाहिर है कि मैं भी सर अफजल का लड़का हूँ। शायद आप ने नसीर आबाद के सर अफजल का नाम सुना हो। नहीं सुना --? खैर बहरहाल हम लोगों की पोजीशन भी सर फ़ैयाज़ से किसी तरह कम नहीं है।"

"आप खुद बताइये कि आखिर सर फ़ैयाज़ की पोती अर्जन पुरे में क्यों रहेगी। मैं आप को उसका मकान भी दिखा सकती हूँ।"

"ज़रूर.... ज़रूर.... मैं आप का शुक्रगुज़ार हूँगा।"

"बस अब मामला मेरी समझ में आ गया।" —लड़की सर हिला कर बोली — "वह आप जैसे बड़े आदमियों को फाँस कर कॉलेज में यह जताती फिरती है कि उसका ताल्लुक भी एक बड़े घराने से है। वह आप लोगों की

कारें भी इस्तेमाल करती है यही वजह है कि आए दिन नई-नई कारों में कॉलेज आती रहती है।"

"ओह.... मेरे खुदा.... मेरा सर चकरा रहा है....!" हमीद ने दोनों हाथों से सर पकड़ कर कहा— "अगर आप उसके बाप को देख लें तो हँसते-हँसते आप का बुरा हाल हो जाए।"

"बाप....!" हमीद ने हैरत से कहा— "क्या वह भी वहीं अर्जन पुरे में रहता है?"

"जी हाँ.... और वह उसका बाप नहीं बल्कि बच्चा मालूम होता है।"

"क्यों....?" हमीद ने हैरत से कहा।

"उसका कद बहुत छोटा है और इतना दुबला-पतला। टिड्डे जैसा आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। उसके चेहरे पर इतनी झुर्रियां हैं कि खुदा की पनाह लेकिन उसकी आँखें बहुत चमकदार हैं।"

यकायक हमीद संभल कर बैठ गया। यह तो एक ऐसे आदमी का हुलिया बयान कर रही थी जिसकी तलाश फ़रीदी को अरसे से है। मगर शकीला से इसका क्या ताल्लुक? हमीद के ज़हन में बैक-वक्त (एक साथ) हज़ारों बिजली के पंखे चलने लगे।

"देखिये....!" वह भर्राई हुई आवाज़ में बोला— "हमें हकीक़तन अर्जन पुरे ही की तरफ चलना चाहिये। आप मुझे वह मकान दिखा दीजिये।"

"चलिये।"

हमीद ने ड्राइवर से अर्जन पुरे की तरफ चलने को कहा। हमीद को याद आया कि उससे एक ग़लती भी हो चुकी है। उसने साहिल पर उतर कर

उन लड़कियों का तआ़कुब (पीछा) शुरू कर दिया था और यह बात उसके ज़हन से उतर गई थी कि फ़रीदी की कार साहिल ही पर मौजूद है। फ़रीदी ने उससे कहा था कि वापसी पर वह कार ले जाएगा। हो सकता है फ़रीदी ने भी इस हिस्से की तरफ रुख़ ही न किया हो जहाँ कार छोड़ी थी। हमीद की उलझन बढ़ गई। आजकल शहर में कारों की चोरी की वारदातें बहुत ज्यादा हो रही थीं। अर्जन पुरे में पहुँच कर उसने वह मकान देखा। मगर उस वक्त वह बाहर से मुक़फ़्फ़ल (ताले बंद) था।

"मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।" —हमीद ने आहिस्ता से कहा— "अब आप जहाँ फरमाएँ आप को पहुँचा दिया जाए।"

"मैं सोलह जेम्स स्ट्रीट में रहती हूँ। मगर आप मुझे रिकस्टन स्ट्रीट में उतार दीजियेगा।"

"बहुत बेहतर।" —हमीद ने मुस्कुरा कर कहा— "और नाम पूछना तो यकीनन बद-तमीज़ी में शुमार होगा।"

"ओह नहीं....!" लड़की भी मुस्कुराई— "मेरा नाम सईदा है।"

"शुक्रिया।" हमीद ने उसे रिकस्टन स्ट्रीट में उतार दिया और अब वह फिर जल्द से जल्द बंदरगाह के इलाके में पहुँचना चाहता था। कुछ देर बाद टैक्सी बंदरगाह की तरफ जा रही थी।

फ़रीदी की कार उसे दूर ही से नज़र आ गई। मगर इसके अंदर कोई मौजूद न था। हमीद ने टैक्सी रुकवा कर उतार पड़ा। ड्राइवर को किराया अदा करने के बाद वह पैदल ही फ़रीदी की कार की जानिब (ओर) चल पड़ा। करीब पहुँच कर वह मुतहय्यिर (हैरान) रह गया क्योंकि कार की पिछली नशिस्त (सीट) पर शकीला नीम-दराज़ (लेटी हुई) थी। वह सो नहीं रही थी लेकिन उसने हमीद की तरफ देखने की भी ज़हमत नहीं गवारा की।

"ऐ मोहतरमा...!" हमीद ने उसका शाना (कंधा) पकड़ कर हिलाया।

"क्या बात है—" उसने तल्ख़ (कड़वे) लहजे में कहा।

"आप यहाँ इस तरह कब से बैठी हैं—"

"शुरू ही से— मैं फ़रीदी साहब की मुंतज़िर (इंतज़ार में) हूँ।"

"क्यों...?"

"मैं उन्हें बताना चाहती हूँ कि कैप्टन हमीद साहब सौ फीसदी नाकारा किस्म के आदमी हैं। उनके साथ आपकी भी मिट्टी पलीद हो रही है।"

"क्या ! तुम्हें मेरी नाकारगी का तजुर्बा हुआ है।"

"हाँ कैप्टन हमीद साहब। मैं फ़रीदी साहब को यह बताऊँगी कि जज़ीरे में एक आदमी हमीद साहब का तआ़कुब करता रहा था और हमीद साहब इससे बिल्कुल ला-इल्म (अनजान) थे।"

"यह तआ़कुब कब तक जारी रहा था?"

"जब तक हमीद साहब का लॉन्च जज़ीरे से रुखसत नहीं हो गया था।"

हमीद उसे फटी-फटी आँखों से घूरता रहा।

शकीला फातेहाना (विजयी) अंदाज़ में मुस्कुरा रही थी। अंदाज़-ए-फातेहाना होता तब भी उसकी मुस्कराहट हमीद को दिलकश न मालूम होती। न जाने क्यों इस लड़की को वहाँ मौजूद पाकर उसे ताओ आ गया था।

"हाँ.... कैप्टन और कुछ.... मैं आपकी क्या खिदमत कर सकती हूँ।" — उसने चिढ़ाने वाले अंदाज़ में कहा।

हमीद को बे-तहाशा गुस्सा आ रहा था मगर वह मुस्कुरा कर बोला—

"तुम इन फ़ुज़ूलियात में न पड़ो। बड़ी खुश्क और उकता देने वाली बातें हैं। मुझे इस तआ़कुब का इल्म है। मैंने उसे जज़ीरे में ही छोड़ दिया था। क्या उसकी चाल में हल्की सी लंगड़ाहट नहीं थी?"

"ओह....!" लड़की ने हैरत से कहा— "फिर आप ने उसके खिलाफ कोई कदम क्यों नहीं उठाया।"

"अगर लड़की होता तो चपल मार देता.... और उससे कहता क्यों ओ खुदाई ख्वार पराई बहु-बेटियों का तआ़कुब करते हुए शर्म नहीं आती। खुदा तुझे इतनी बहु-बेटियाँ अता करे कि तुझे घबरा कर खुदकुशी कर लेनी पड़े वगैरह वगैरह।"

"मेरा ख्याल है कि आप अपने मुँह से सिर्फ बातें बनाने की तनख्वाह वसूल करते हैं।"

"अरे हटाओ भी यह किस्सा। शहर वापस चल रही हो।"

"नहीं.... मैं कर्नल साहब का इंतज़ार करूँगी।"

"तो फिर गाड़ी से उतर जाओ। मैं वापस जा रहा हूँ।"
"अभी तक कहाँ थे?"
"कहीं भी नहीं।" —हमीद ने लापरवाही से कहा और अगली सीट का दरवाज़ा खोल कर उसके सामने बैठ गया और मशीन स्टार्ट की।
"यह क्या कर रहे हैं आप....!"
"बस देखती रहिये।" —हमीद ने कहा और कार हरकत में आ गई।
"आप ज़्यादती कर रहे हैं। मैं कर्नल साहब से मिले बगैर वापस नहीं जाऊँगी।"
हमीद कुछ न बोला। कार की रफ़्तार तेज़ हो गई थी और अब उतरने का सवाल ही नहीं पैदा हो सकता था।
"क्या मकसद है?" —शकीला ने हैरत से पूछा।
"आप को रोमांटिक किस्म की तफरीहात पसंद हैं ना।"
"हाँ.... हैं तो फिर....!"
"बस यह समझ लीजिये कि इस वक़्त की तफरीह आप को ज़िंदगी भर याद रहेगी।"
"आ.... अच्छा.... चलिये यही सही।" —लड़की ने कुछ ऐसे अंदाज़ में कहा जैसे किसी बच्चे से कर रही हो।
हमीद और ज़्यादा चिढ़ गया लेकिन खामोश ही रहा। कार अर्जन पुरे की तरफ जा रही थी। थोड़ी ही देर बाद वह उस मकान के सामने रुक गई जिसके मुताल्लिक़ हमीद को बताया गया था कि शकीला वहां देखी गई है। मकान अब भी मुकफ़्फ़ल (ताला बंद) ही था।
"हम कुछ देर के लिए इस मकान के अंदर चलेंगे।"
"क्या मतलब....!" शकीला ने नाखुशगवार लहजे में पूछा।
"मकान के अंदर चलना है हमें। क्या आप इसका तर्जुमा किसी दूसरी ज़बान में चाहती हैं?"

"आप बद-तमीज़ हैं।"
"मैं तुम्हें अभी और इसी वक़्त पुलिस की हिरासत में दे सकता हूँ।" —हमीद ने गुस्से में कहा।
"यह किस ख़ुशी में जनाब कैप्टन साहब!" —शकीला ने ज़हर-खंद (कटाक्ष) के साथ पूछा।
"यह तो मैं इस मकान में चलने के बाद ही बता सकता हूँ।" —हमीद ने सख़्त लहजे में कहा। "मुझे यकीन है कि इस में पड़े ताले की कुँजी तुम्हारे वैनिटी बैग ही में मौजूद होगी।"

पेज 121
"ओह....!" लड़की सीट की पुश्त गाह से टिक गई। उसके होठों पर गुस्सा दिलाने वाली मुस्कराहट थी।
"कुँजी निकालो.... वरना मैं ताला तोड़ दूँगा।"

"तकलीफ़ न उठाइये कैप्टन साहब।" —शकीला अपना वैनिटी बैग खोलती हुई बोली। "कुँजी हाज़िर है। पिछले ज़माने में एक बुज़ुर्ग लाल बुझक्कड़ भी गुज़रे हैं। मगर उन दिनों कप्तानी का ओहदा नहीं हुआ करता था।"

हमीद ने कुँजी लेते हुए कहा— "नीचे उतर आओ। मैं तन्हा नहीं जाऊँगा।"
"चलिये कैप्टन साहब।" —शकीला कार से उतर आई। "आप सचमुच इस वक़्त शरलॉक होम्स हो रहे हैं।"
"मैं बअ़ज़ (कभी-कभी) औकात (समय) झल्लाहट में थप्पड़ भी मार दिया करता हूँ।" —हमीद आपे से बाहर हो गया।
"मैं यूँ ही तफरीहन (मज़ाक में) मुँह भी नोच लिया करती हूँ।"

हमीद अपना निचला होंठ चबाता हुआ दरवाज़े की जानिब बढ़ा। उसे इतनी शिद्दत से गुस्सा आया था कि सोचने समझने की सलाहियत ही रुखसत हो गई। उसने ताले में कुँजी घुमाई और दरवाज़ा खोल कर अंदर घुस पड़ा।
उसी के साथ ही शकीला भी दाखिल हुई और वह आगे बढ़ते चले गए। सामने दालान था और उसके दोनों जानिब दो कोठरियाँ थीं।

हमीद को दरअसल उस छोटे कद के आदमी की तलाश थी जिसका तज़किरा वह उस लड़की सईदा से सुन चुका था। उसने दाईं जानिब वाली कोठरी के किवाड़ों को धक्का दिया वह खुल गए। हमीद बिल्कुल उसी अंदाज़ में अंदर दाखिल हुआ जैसे अपने शिकार की मौजूदगी का यकीन हो मगर कोठरी खाली पड़ी थी। हमीद उल्टे पाँव बाहर आया। अब दूसरी कोठरी पर उसकी नज़र थी। शकीला मुस्कुरा रही थी।

हमीद कुछ इसी तरह बौखलाया हुआ सा नज़र आ रहा था कि देखने वालों को उस पर हंसी ही आ सकती थी। इस बार शकीला भी उसके साथ कोठरी में घुस पड़ी। इस कोठरी में एक तरफ एक अलमारी पर हमीद को कुछ कागज़ात नज़र आए और वह झपट कर उन्हें उलटने पलटने लगा।

"आख़िर किस चीज़ की तलाश है कैप्टन साहब को?" —शकीला ने अपने मख़सूस (विशेष) गुस्सा दिलाने वाले लहजे में कहा।

मगर हमीद शायद किसी वाज़ेह (स्पष्ट) सुबूत के हाथ लग जाने से पहले गुस्से का इज़हार नहीं करना चाहता था वरना अब तक उसे कच्चा ही चबा गया होता।
दफ़अतन उसने दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनी और उछल कर मुड़ा। दरवाज़ा हकीकतन किसी ने बाहर से....

बंद किया, मगर किसने? शकीला तो वहीं उसके पास खड़ी थी—और उसके चेहरे पर भी हैरत के आसार थे। दफ़्अतन उसने कहा— "ओह! मैं समझ गई लेकिन....!"

दूसरे ही लम्हे में उसने अपने वैनिटी बैग से पिस्तौल निकालते हुए जुमला पूरा कर दिया— "तुम ने मुझे हाथ लगाने की कोशिश की तो बे-दरेग़ फ़ायर कर दूँगी।"

स्याह रंग के नन्हे से पिस्तौल का रुख हमीद की तरफ था।

हमीद ने दो-तीन बार पलकें झपकाईं और बंद दरवाज़े की तरफ देखने लगा। बाहर की आहटों से साफ़ ज़ाहिर था कि वह कई आदमी हैं।

"तुम क्या समझती हो। अब जो कुछ भी होगा उसकी तमाम तर ज़िम्मेदारी तुम पर होगी।" —हमीद ने झुंझला कर कहा।

"मेरी तरफ एक कदम बढ़कर देखो।"

"मैं यहीं खड़े-खड़े तुम्हें जहन्नुम में धकेल सकता हूँ।" —हमीद दांत पीस कर बोला। फिर उसने भी अपना रिवॉल्वर निकाल लिया।

"एक चूहा पिस्तौल दिखाकर मुझे बेबस नहीं कर सकती।"

शकीला ने हैरत से उसे देखा, चंद लम्हे खामोश रही फिर बोली— "क्या तुम संजीदा हो?"

"तुम्हारा दिमाग़ खराब हुआ है लड़की। तुम कैप्टन हमीद से गुफ्तगू कर रही हो।"

"तब फिर शायद हम दोनों के दिमाग़ खराब हो गए हैं।" —लड़की ने बेबसी से कहा।

"बाहर कितने आदमी हैं?" —हमीद ने तहक्कुमाना (आदेशात्मक) लहजे में पूछा।

"मैं नहीं जानती। मैं क्या बता सकती हूँ।"

"इन से कहो दरवाज़ा खोल दें वरना यह मज़ाक उन्हें बहुत महंगा पड़ेगा।"

"खुदा की कसम! मैं कुछ नहीं जानती और यह क्या हो रहा है मैं तो खुद ही परेशान हूँ। तुम मुझे क्या परेशान करना चाहते हो।"

हमीद कुछ न बोला। वह अब भी दरवाज़े ही की तरफ देख रहा था। दफ़्अतन उसने रिवॉल्वर जेब में डाल कर अपनी नाक मज़बूती से बंद कर ली। उसने सिंथेटिक गैस की बू महसूस की थी जो ताक से.... वह ज़्यादा देर तक नाक बंद न रख सका क्योंकि दम घुटने लगा था। उसने चक्कर खाकर गिरते हुए देखा फिर थोड़ी ही देर में उस पर बेबसी और बेहोशी तारी हो गई।

ग़शी (बेहोशी) के बाद होश में आना आसान ही होता है लेकिन होश आने के बाद की ज़हनी हालत यकीनन तौर पर होश नहीं कहा जा सकता क्योंकि हवास-ए-खम्सा (पांचों इंद्रियों) की बेदारी का नाम है मगर जिस

....

तब्दीली को होश कहा जाता है उसे हवास-ए-खम्सा की बेदारी नहीं कह सकते। मसलन हमीद की आँखें खुल गई थीं, वह चारों तरफ देख सकता था। नज़दीक और दूर की आवाज़ें सुन सकता था लेकिन उसे इस चोट का

एहसास नहीं था जो उसके सर के पिछले हिस्से में आई थी और वह बोल भी नहीं सकता था।

काफी देर तक यही कैफियत रही, फिर आहिस्ता-आहिस्ता उसे सर की चोट का एहसास होता गया और ज़बान जो कुछ देर पहले मुँह के अंदर पत्थर का टुकड़ा मालूम हो रही थी खुश्क होठों तक आने लगी।

उससे थोड़ी ही फासले पर शकीला पड़ी हुई थी और उसे अब तक होश नहीं आया था। हमीद लड़खड़ाता हुआ सर के दुखते हुए हिस्से पर उंगलियाँ रखे थोड़ी सी जगह खून से चिपचिपा रही थी। कमरा ज़्यादा बड़ा नहीं था मगर यहाँ अर्जन पुरे वाले मकान की कोठरी की सी घुटन महसूस नहीं हो रही थी। ऊपर चारों तरफ रोशनदान थे और उनसे हवा आ रही थी।

हमीद के लिए अब यह समझना दुश्वार था कि वह किन हालात का शिकार हुआ है। इस लड़की की हैसियत उसकी समझ में नहीं आ रही थी। क्या उसने उसे फँसाया था या वह खुद भी किसी बहुत बड़े फ़रेब में मुब्तिला थी। अगर वह खुद ही इन हालात की ज़िम्मेदार थी तो उसका क्या मकसद था, वह खुद ही तो उन्हें अपने साथ लाई थी। हमीद फ़रीदी के मुताल्लिक़ सोचने लगा। वह पता नहीं कहाँ और किस हाल में होगा। हो सकता है उसका भी यही अंजाम हुआ हो।

फिर उसे वह बंदर याद आया जिसके पीछे फ़रीदी दौड़ा था। उसने शकीला की तरफ देखा जिसने कराह कर करवट ली थी।

उसकी बड़ी-बड़ी आँखें गैर-इरादाती अंदाज़ में फैली हुई थीं और वह हमीद ही की तरफ देख रही थी, फिर वह उठ बैठी, कुछ देर तक आँखें मलती रही फिर चारों तरफ देखने लगी।

तकरीबन दस मिनट तक दोनों खामोश रहे।

"यह तुम ने किस मुसीबत में फँसा दिया।" —शकीला ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा।

"मेरे लिए यह कोई नई बात नहीं है। सैंकड़ों बार ऐसे हालात से दो-चार हो चुका हूँ।" —हमीद ने बेज़ारी से कहा।

शकीला चंद लम्हे फटी-फटी आँखों से देखती रही फिर बोली— "शायद हम दोनों ही किसी गलतफहमी में मुब्तिला हैं।"

कुछ देर पहले हमीद ने इसके इमकानात (संभावनाओं) पर गौर किया था। इसलिए उसने कहा— "कैसी गलतफहमी?"

"मैं समझ रही हूँ कि आप ने मुझे किसी चक्कर में फँसाया है और आप यह समझते हैं कि मैं इसकी ज़िम्मेदार हूँ।"

"मैं यही समझता हूँ कि अभी तक तुम लोगों का मज़ाक जारी है।"
"इस ख्याल को दिल से निकाल दीजिये। मैं नहीं जानती कि यह किन लोगों की हरकत है।"

हमीद ने कुछ सोचते हुए कहा— "ठहरिये। आप को इस मकान के मुताल्लिक़ कैसे मालूम हुआ था।"
"क्या यह इसी मकान का कोई हिस्सा है?" हमीद ने उसके सवाल का जवाब दिये बगैर सवाल किया।
"नहीं....!"
कुछ देर के लिए सुकूत (सन्नाटा) तारी हो गया। फिर हमीद ने उसे बताया

कि किस तरह उस ने लॉन्च पर दो लड़कियों की गुफ़्तगू सुनी और किस तरह एक लड़की ने उसे अर्जन पुरे के इस मकान का पता बताया।

"तब तो यह यकीनन कोई साज़िश है। इस मकान में कोई ऐसा आदमी नहीं रहता जिसका हुलिया आप बयान कर रहे हैं और न मैं किसी ऐसे आदमी से वाकिफ़ हूँ। आप वहां आसपास के किसी आदमी से भी दरयाफ़्त (पूछताछ) कर सकते हैं। इस मकान में दरअसल एक नाबीना (अंधी) गरीब औरत रहती थी जिसका पिछले हफ्ते इंतकाल हो गया। वह शहर के एक फुटपाथ पर भीख मांगा करती थी। मैं ने उसे माँ बना रखा था। इस मकान में ले आई.... चलते.... चलते.... अगर आप उसे भी मेरी तफ़रीह ही समझते हैं तो मुझे कुछ नहीं कहना। लेकिन वहां ऐसा कोई आदमी नहीं था जिसका कद साढ़े चार फुट या इससे कुछ ज्यादा रहा हो।"

हमीद खामोश रहा। वह इसी उलझन में मुब्तिला हो गया था।

"अगर यह साज़िश है तो इसका मकसद क्या हो सकता है।" उस ने कुछ देर बाद कहा।

"मकसद.... खुदा जाने.... लेकिन.... अगर यह दादाजान की अ़लत (बीमारी) ही के सिलसिले की कोई कड़ी है तो यह महकमा-ए-सुराग़रसानी के लिए एक अजीब-ओ-ग़रीब केस होगा।"

"सर फ़ैयाज़ की अ़लत के बारे में आपका क्या नज़रिया है।" हमीद ने उसे टटोलने वाले अंदाज़ से देखते हुए पूछा।

"बस यही कि वह कुदरती नहीं है। लेकिन मेरे पास इसके लिए कोई ठोस सुबूत नहीं है।"

"गैर-कुदरती समझने की कोई वजह भी तो हो सकती है।"

"वजह.... देखिये जब पहली बार उन पर इस किस्म की कैफियत तारी हुई थी तो वह उस से कुछ महीने पहले गायब रहे थे। यानी जिस दिन उन्हें वापस पहुँचना चाहिये था उसके ठीक तीन महीने बाद आए थे और वह होश में नहीं थे। ज़हनी हालत ठीक नहीं थी। फिर दो-तीन बार....।"

"मुझे मालूम है तुम बता चुकी हो।" हमीद हाथ उठा कर बोला।

"मगर अब इस कैद का क्या मतलब।"

हमीद कुछ न बोला। उसे लड़की के बयान पर अब भी शुबहा था। दूसरी तरफ शकीला कुछ खौफ़ज़दा सी नज़र आने लगी थी। वह बार-बार कुछ कहने का इरादा करती मगर फिर खामोश रह जाती, हमीद उसे महसूस कर रहा था लेकिन उसने उस से कुछ पूछा नहीं। वह काफी देर तक खामोश रहकर सोचता रहा और फिर यह फैसला किया कि बेकार बैठे रहने से कुछ न कुछ शुरू कर देने के बाद ही इन मामलात में शकीला की

पोजीशन वाज़ेह (स्पष्ट) हो सकती है। वह उसके मुताल्लिक़ यकीन और शुबहे की कशमकश में मुब्तिला नहीं रहना चाहता था।

वह उठा और कमरे का जायज़ा लेने लगा। यहाँ बहुत ही मामूली किस्म का फर्नीचर नज़र आ रहा था। छह कुर्सियां थीं और एक बड़ी मेज़ जिस में मुतअद्दद (अनेक) दराज़ें थीं। ग़ालिबन वह लिखने की मेज़ थी क्योंकि उस पर कलमदान, कुछ कागज़ात और शीशे के दो-तीन पेपर वेट रखे हुए थे। मेज़ के बाईं जानिब एक अलमारी थी जिस में बड़ा सा ताला लटका हुआ था।

हमीद आगे बढ़कर मेज़ पर रखे हुए कागज़ात उलटने लगा। उन पर तहरीरें (लिखावट) थीं लेकिन हमीद उन्हें समझ नहीं सका क्योंकि वह किसी ऐसी ज़बान में थीं जिससे वह कतई ना-बलद (अनजान) था। वैसे हुरूफ (अक्षर) रोमन ही के थे। अंग्रेज़ी के अलावा हमीद फ्रेंच और जर्मन भी जानता था। लेकिन वह तहरीरें न तो फ्रेंच में थीं और न जर्मन में।

वह मेज़ पर झुका दूसरी चीज़ें भी देख रहा था लेकिन लड़की की तरफ से गाफ़िल (बेखबर) नहीं हुआ। दफ़अतन उसने दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनी और चौंक कर मुड़ा। लेकिन इस कमरे के सारे दरवाज़े बंद थे मगर शायद उसे मुगालता (भ्रम) हुआ। कोई दूसरा कमरा भी था क्योंकि एक दरवाज़े के उधर से कदमों की आवाज़ें आ रही थीं।

"क्या वह होश में आ गए।" किसी ने अंग्रेज़ी में पूछा।

"पता नहीं।" दूसरी आवाज़ आई— "अब देखेंगे।"

हमीद बड़ी फुर्ती से फर्श पर लेट गया और शकीला को भी अपनी ता़क्लीद (नकल) का इशारा करते हुए आँखें बंद कर लीं।

दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई और किसी ने कहा— "मगर यह फ़रीदी तो नहीं है।"

"उसका असिस्टेंट है।" जवाब दिया गया। "यह महज़ इत्तफ़ाक है कि वह नहीं फँस सका और लड़की फिर हाथ आ गई। हमें यकीन था कि यह फ़रीदी को हालात से मत्तला (सूचित) कर देगी और फिर यह दोनों इस मकान में दाखिल होंगे। मगर यह लड़की...।"

"क्या तुम्हें ऐसा करने का हुक्म दिया गया था।"

"नहीं.... ज़रूरी नहीं है कि हम हर वक़्त हुक्म ही के मुंतज़िर (इंतज़ार में) रहें।"

"तुम ने एक ज़बरदस्त ग़लती की है, अगर इन लोगों को छेड़ा था तो दोनों को लाए होते....वरना --!" वह आदमी कहते-कहते रुक गया।

तलाश

कर्नल फ़रीदी ने फोन का रिसीवर रख कर सिगार सुलगाया। दो-तीन कश

लिये और फिर उसे डायल घुमाया।

फोन पर किसी के नंबर डायल किये।

"हैलो!" उसने माउथ पीस में कहा— "शकीला वापस आई.... ओह.... अभी नहीं....? अभी --अभी तक नहीं आई.... जी हाँ.... जी हाँ.... मैं शकीला की आदतों से बखूबी वाकिफ हूँ। इसके लिए तशवीश (चिंता) है.... और मेरा असिस्टेंट भी कम शरारती नहीं है, वैसे आप मुतमइन (आश्वस्त) रहें। कोई ऐसी बात नहीं.... ओह कोई बात नहीं.... अगर आप लोग मुतमइन हैं कि वह किसी मामूली हालात का शिकार नहीं हुए तो मैं भी मुतमइन हो जाऊँगा। वैसे मैं ने यह कदम शकीला के खानदान के एक फर्द की शिकायत ही पर किया था। हाँ अगर यह शकीला साहिबा की शरारत है.... खैर चले.... दरगुज़र करता हूँ.... वैसे उन्हें समझाइये कि पुलिस से इस तरह की शरारत का नतीजा तफरीह (मज़ाक) की शक्ल में कभी नहीं जाहिर होता।" फ़रीदी ने रिसीवर रख दिया।

एक मुलाज़िम तश्तरी (ट्रे) में किसी का विजिटिंग कार्ड लिये खड़ा था।

"ओह.... यहीं भेज दो।"

फ़रीदी ने कार्ड देख कर नौकर से कहा। वह ख्यालात में डूबा हुआ था। सिगार केस से सिगार निकाला और उसका कोना तोड़ ही रहा था कि लेडी इंस्पेक्टर रेखा कमरे में दाखिल हुई। फ़रीदी ने सर की जुम्बिश (इशारे) से उसे बैठने का इशारा किया।

"क्या मैं अपनी रिपोर्ट पेश करूँ।" —रेखा ने मुस्कुरा कर कहा।

"ज़रूर.... मगर बाज़ (कभी-कभी) औकात (समय) तुम्हारे अंदाज़-ए-गुफ्तगू से तमसख़ुर (मज़ाक) झलकने लगता है।"

"अरे.... नहीं।" रेखा संजीदा नज़र आने लगी और साथ ही कुछ हल्की सी मुस्कराहट भी।

"रिपोर्ट....!" फ़रीदी ने दरवाज़े के बाहर देखते हुए कहा।

"आप की कार दो बजे तक वहीं देखी गई है जहाँ आप ने खड़ी की थी लेकिन उसमें ....!"

लड़की थी। यूँ ही बेकार बैठी नज़र आ रही थी। दो बजे एक नौजवान वहाँ आया और कार को ले गया। लड़की उस वक़्त भी पिछली सीट पर मौजूद थी। नौजवान का हुलिया वही था जो कैप्टन हमीद का हो सकता है। लड़की की उम्र पंद्रह और बीस के दरमियान होगी वह रेशमी रंग की पतलून और सबज़ (हरे) जैकेट में थी।"

"शकीला....!" फ़रीदी आहिस्ता से बुदबुदाया।

"लेकिन.... आख़िर इस में परेशानी की क्या बात है।"

"परेशानी की बात—" फ़रीदी मुस्कुरा कर बोला— "तुम्हें वाक़यात (घटनाओं) का इल्म नहीं है।"

उसने आज सुबह का वाक़या दोहराया जो कुछ देर खामोश रहा फिर बोला — "परेशानी की बात यह है कि जज़ीरे में मुझे एक बंदर का तआक़ुब (पीछा) करना पड़ा।"

"बंदर का तआक़ुब.... परेशानी की बात।" —रेखा ने हैरत से दोहराया।

"हाँ.... वह मामूली बंदर से बहुत बड़ा था— यानी उसका कद साढ़े चार फुट ज़रूर रहा होगा।"

"ओह.... तो इस में परेशानी की क्या बात है। जज़ीरे के इस बंदर के मुताल्लिक़ मैंने भी सुना है। रंगत मामूली बंदरों की सी ही है लेकिन कद से वह कोई छोटा सा गोरिल्ला मालूम होता है।"

फ़रीदी कुछ न बोला। वह मुस्कुरा रहा था। कुछ देर बाद उसने कहा— "और क्या सुना है उसके मुताल्लिक़।"

"ग़ालिबन किसी ग़ैर-मुल्की जहाज़ से जज़ीरे में कूद गया था। अक्सर और बेशुमार लोगों ने उसे पकड़ने की कोशिश की है लेकिन वह किसी के हाथ नहीं आया। बाज़ (कुछ) लोगों के करीब भी आ जाता है और उनसे सिगरेट भी मांगता है। मैंने तो नहीं देखा लेकिन सुना है कि वह बिल्कुल आदमियों ही की तरह सिगरेट पीता है।"

दफ़अतन फोन की घंटी बजी और फ़रीदी उसे खामोश रहने का इशारा कर के उठ गया। टेलीफोन पर किसी से एक तवील (लंबी) गुफ्तगू हुई मगर रेखा उसे समझ नहीं सकी क्योंकि फ़रीदी ने बहुत कम सवालात किये थे ज़्यादातर सुनता ही रहा था। फिर उसने रिसीवर रख दिया।

"कार का पता तो चल गया।"

"कहाँ है?"

"अर्जन पुरे के एक हिस्से में। यह लड़की तो दर-ए-सर हो गई। क्या तुम मेरे साथ चलोगी।"

"ज़रूर....!" रेखा उठती हुई बोली।

वह तो चाहती ही थी कि किसी तरह फ़रीदी के साथ कुछ वक़्त गुज़ारने का बहाना हाथ आ जाए। वह बाहर आए। हालांकि गैराज में दो कारें और भी मौजूद थीं लेकिन फ़रीदी पैदल ही चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने के बाद

उसने एक टैक्सी रुकवाई और वह अर्जन पुरे की तरफ रवाना हो गए।

पेज **128**

"आप ने शायद शकीला के मुताल्लिक़ कुछ कहा था।" —रेखा ने कहा।

"हाँ.... वह दोनों कार खड़ी कर के एक मकान में गए थे। थोड़ी देर बाद एक दूसरी कार वहाँ आई। उस में चार आदमी थे। वह भी अंदर गए और तकरीबन बीस मिनट बाद दो बड़े और भारी थैले उठाए हुए बाहर आए और वहाँ से चले भी गए थे। मेरी कार अभी वहीं मौजूद है।"

"तो इसका मतलब यही हो सकता है कि वह दोनों अब वहीं नहीं हैं।"

"मेरा ख्याल है कि अब वहाँ इन की गर्द (धूल) भी न होगी।"

"क्यों....!"

"वह चार आदमी....?" रेखा कुछ न बोली।

फ़रीदी कहता रहा— "उस मकान में एक अंधी औरत रहती थी। जिसे वहाँ ले गई थी। उस के लिए एक मुलाज़िम रखा भी गया था। शकीला रोज़ाना वहाँ जाती थी। कुछ ही दिन हुए उस औरत का इंतकाल हो गया। वहाँ के लोगों का बयान है कि शकीला उस दिन के बाद से कभी वहाँ नज़र नहीं आई थी।"

"यह शकीला बड़ी अजीब लड़की मालूम होती है।" —रेखा ने कहा।

फ़रीदी खामोश हो गया। टैक्सी अर्जन पुरे के इलाके में दाखिल हुई और फ़रीदी रास्तों और गलियों के मुताल्लिक़ ड्राइवर को बताता रहा। फिर वह उसी जगह पहुँच गए जहाँ फ़रीदी की लिंकन खड़ी थी। सार्जेंट रमेश वहाँ मौजूद था। फ़रीदी ने टैक्सी से उतर कर किराया अदा किया और सार्जेंट

रमेश की तरफ मुतवज्जा (ध्यान देना) हो गया।

"क्या वह चारों कभी पहले भी यहाँ नज़र आए थे।" —फ़रीदी ने उस से पूछा।

"जी नहीं। आस-पास के लोगों का बयान है कि वह चारों यहाँ पहली बार नज़र आए थे। और आदमी जो लड़की के साथ था वह भी पहली ही बार देखा गया था।"

"तुम अंदर गए थे।"

"मैं आप का मुंतज़िर (इंतज़ार में) था।"

"ठीक! अच्छा तुम दोनों यहीं ठहरो।" —फ़रीदी कहता हुआ अंदर चला गया।

"यह हज़रत भी आए दिन कोई न कोई नई हरकत कर बैठते हैं।" —रेखा ने सार्जेंट रमेश से कहा।

"जी हाँ।" —रमेश ने सआदत-मंदाना (विनम्र) अंदाज़ में जवाब दिया। रेखा का ओहदा उस से बड़ा था।

मगर वैसे भी वह औरतों के मामले में बहुत ही बरख़ुरदार (आज्ञाकारी) किस्म का आदमी समझा जाता था। फ़रीदी ने कुछ देर बाद दरवाज़े पर आकर रेखा को आवाज़ दी और रमेश को भी अंदर आने का इशारा किया जैसे ही वह करीब आया उसने आहिस्ता से कहा—

"टोनी से वाकिफ़ हो।"

"टोनी....!" रमेश कुछ सोचता हुआ बोला— "वह ईसाई जिसकी बाएं

हाथ की छोटी उंगली कटी हुई है।"

"हाँ.... वही.... मालूम करो कि वह इस वक़्त कहाँ है।"

रमेश के अंदाज़ में हिचकिचाहट महसूस कर के उस ने फिर कहा—

"वह इस वक़्त या तो 'चाइनीज़ कॉर्नर' में मिलेगा या 'किंग कोंग बार' में। इन दोनों जगहों पर न मिले तो मुझे इत्तिला देना। मैं पंद्रह मिनट बाद यहाँ से निकल कर 'नाइट क्लब' में मिलूँगा।"

रमेश चला गया।

फ़रीदी चंद लम्हे खामोश खड़ा चारों तरफ देखता रहा फिर बोला— "यहाँ कुछ भी नहीं है सिवाए इन निशानात के।"

उस ने सहन (आँगन) के कच्चे फर्श की तरफ इशारा किया। मगर रेखा को कुछ भी न दिखाई दिया।

फ़रीदी बोला— "क्या तुम्हें यह निशानात नहीं दिखाई देते।"

"ओह.... यह.... किसी चीज़ से कहीं-कहीं ज़मीन खोदी गई है।"

"तुम इन्हें कोई अहमियत नहीं देतीं।" रेखा कुछ न बोली।

फ़रीदी चंद लम्हे जवाब-तलब अंदाज़ में मुस्कुराता रहा फिर बोला— "इन चारों आदमियों में एक ऐसा ज़रूर था जिसे जूते की एड़ी से ज़मीन खोदते रहने की आदत है। इधर आओ मैं तुम्हें दिखाऊँ। दालान का फर्श भी कच्चा है, वहाँ भी तुम्हें मुतअद्दद (अनेक) जगह ऐसे ही निशानात मिलेंगे।"

"तो क्या आप ने इसी से कोई नतीजा अख़ज़ (निकालना) किया है।"

"हाँ.... शहर के जराइम-पेशा (अपराधी) लोगों में से एक को मैं जानता हूँ, जो ग़ैर-शऊरी तौर पर अपने दाहिने पैर की एड़ी ज़मीन पर मारता

रहता है। बस आओ चलें। मैं ने रमेश को उसी की तलाश में रवाना किया है।"

फ़रीदी ने बाहर निकल कर मकान को मुकफ़्फ़ल (ताला बंद) कर दिया। कुँजी अंदर ही मिली थी। थोड़ी देर बाद लिंकन 'हाई सर्कल नाइट क्लब' की तरफ जा रही थी और फ़रीदी कह रहा था— "जब...."

पेज **130**

भी किसी मुजरिम को स्टडी करने का मौका मिले तो उसकी ऐसी आदत मालूम करने की कोशिश करो जो बे-साख्ता (unconsciously) उस से सरज़द होती हो। यह आदतें दरअसल अ़ज़्ल-ए-इरादी (voluntary action) होती हैं मसलन बैठे-बैठे पैरों को हिलाना, उंगली उठा कर अपने ख्याली दस्तखत बनाना, जूते की नोक या एड़ी से ज़मीन खोदते रहना, कागज़, पेंसिल या कलम सामने होने पर कुछ न कुछ लिखते रहना या मखसूस किस्म के निशानात बनाना। वगैरह तुम किसी भी आदमी को गौर से देखोगे तो तुम्हें उस में ऐसी बहुत सी आदतें मिल जाएँगी। अगर वह आदमी खुद इन से बेखबर भी हो तब भी। जराइम-पेशा (criminal) लोगों के इन बे-साख्ता अफ़आ़ल (actions) से हमें उनका सुराग लगाने में बड़ी मदद मिलती है। अब इस वक़्त के मामले को ले लो। मैं जानता हूँ कि टोनी बे-साख्ता तौर पर अपने दाएं पैर की एड़ी से ज़मीन खोदने का आदी है। लिहाज़ा हो सकता है कि उन लोगों में वह भी रहा हो।

"और अगर न रहा हो तो—"

"कोई बात नहीं। सुराग़रसानी से मोजज़े (miracles) नहीं सरज़द हुआ करते। वह महज़ इमकानात (possibilities) के सहारे आगे बढ़ता है।

कहीं धोखा खाता है कहीं उसे कामयाबी होती है।"

"लेकिन मैं ने कभी आपको धोखा खाते नहीं देखा।" रेखा मुस्कुरा कर बोली।

"मैं धोखा खाने के बाद सब्र करने का आदी हूँ।" फरीदी भी जवाबन मुस्कुराया। "कम अज़ कम उसका तज़किरा (जिक्र) नहीं करता।"

"मैं यकीन ही नहीं कर सकती।"

फरीदी मुस्कुराता रहा फिर बोला— "अगर वह टोनी ही है तो मुझे एक और आदमी को चेक करना है जो इन दिनों उसके साथ बहुत ज़्यादा देखा जाता रहा है। इसीलिये मैं 'हाई सर्कल नाइट क्लब' जा रहा हूँ।"

शाम के पाँच बज चुके थे और अब कुछ-कुछ खनकी (ठंडक) हो चली थी।

"तुम ने उस बंदर को कभी देखा है।" फरीदी ने पूछा।

"नहीं.... मैं ने सिर्फ सुना है। पिछले छह माह से 'फन आईलैंड' जाने का इत्तेफाक नहीं हुआ।" रेखा ने बड़े एतमाद (विश्वास) से कहा और रेखा उसे हैरत से देखने लगी।

"मैं गलत नहीं कह रहा हूँ।" फरीदी मुस्कुराया। "तुम उसे देख चुकी हो। क्या तुम्हें वह चार फुट ऊँचा बंदर याद नहीं जिसे तुम ने 'चाइनीज़ कॉर्नर' में देखा था।"

"नहीं....!" रेखा बे-साख्ता उछल पड़ी। "आप फिंच के बारे में तो नहीं कह रहे?"

"हाँ, वह बंदर फिंच ही था।"

"मगर वह बंदर किस तरह हो सकता है। मैं ने उसे जज़ीरे वाले बंदर सा सूट भी पहने देखा है।"

पेज **131**

फरीदी हंसने लगा।

"रेखा, तुम्हारी आँखें बहुत कम धोखा खाती हैं और अब तो मेरे पास फिंच से मुताल्लिक़ बेहतरीन मालूमात हैं। वह न्यू मेक्सिको का बाशिंदा है और नस्ल पर तंज़ (satire) ही है। जानवरों का बहुरूप भरने में अपना जवाब नहीं रखता। न्यू मेक्सिको में उसका ज़रिया-ए-मुआश (income) भी यही था वह संताने के एक सर्कस में मुलाज़िम था।"

रेखा खामोशी से सुनती रही।

फरीदी कुछ देर खामोश रहा फिर बोला— "और डॉक्टर ड्रेड का हेड क्वार्टर भी संताने ही था।"

"आहा.... फिर वही डॉक्टर ड्रेड।"

"हाँ.... अब वह सारी दुनिया में अपनी कुव्वत आज़माता फिर रहा है। यहाँ फिंच की मौजूदगी साबित करती है कि डॉक्टर ड्रेड अब भी यहीं मुकीम (रुका हुआ) है।"

"ओह.... हाँ.... सफ़ारत खाने (Embassy) वाले केस में यह बात सामने आई थी कि फिंच और डॉक्टर ड्रेड भी यहीं हैं।"

"ये फिंच जैसा बे-हकीकत आदमी डॉक्टर ड्रेड से कैसे टकरा गया।"

"ओह.... क्या तुम उसे इस हकीर (तुच्छ) से कद की बिना पर बे-हकीकत कह रही हो।" फरीदी बोला।

"यकीनन उसका कद और जसा (body structure) ही तुम्हारे ज़हन में है मगर इसे हमेशा याद रखो कि आदमी की हकीकत उसका जिस्म नहीं बल्कि दिमाग़ है। गोश्त और हड्डियों का ढेर कोई हैसियत नहीं रखता। आदमी का दिमाग़ ही उसे बुलंद करता है। दुनिया इसके कदमों पर झुकती है और जब यही दिमाग़ नाकारा हो जाता है तो कदमों पर झुकने वाले इसी गोश्त और हड्डियों के ढेर को पकड़ कर किसी पागल खाने में बंद कर देते हैं और वहाँ दो पैसे के आदमी इस पर डंडे बरसाया करते हैं। ओह.... मैं बहक गया.... हाँ तो मैं यह कह रहा था कि फिंच जिस्मानी एतबार से एक हकीर कीड़ा सही लेकिन ज़हनी सलाहियतों का यह आलम है कि डॉक्टर ड्रेड जैसा खतरनाक आदमी भी आज तक उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका।"

"आप ठीक कहते हैं।" रेखा ने आहिस्ता से कहा।

फरीदी की लिंकन 'हाई सर्कल नाइट क्लब' में दाखिल हो रही थी। फरीदी ने पोर्च के करीब उसे रोक कर इंजन बंद किया और वह दोनों नीचे उतर गए।

मैनेजर अपने कमरे से निकल रहा था। फरीदी को देख कर जहाँ था वहीं रुक गया पहले तो उसके चेहरे पर साज़िशी (suspicious) आसार नज़र आए मगर फिर उसने मुस्कुरा कर एक शेर पढ़ा।

"वह आएँ घर में हमारे खुदा की कुदरत"

"हजारों बार सुन चुका हूँ।" फ़रीदी हाथ उठा कर बोला— "अंदर चलो।"

मैनेजर के चेहरे पर फिर वही इंतशारी (confusion) की परछाइयाँ नज़र

आने लगीं।

"तशरीफ़ रखिये जनाब वाला।" उसने उलटे पाँव अपने दफ़्तर में दाखिल होकर कहा।

"क़याम (रुकने) करने वालों का रजिस्टर लाओ।" फ़रीदी बैठता हुआ बोला।

उसने रेखा को बैठने का इशारा किया।

"लेकिन अपने क़याम के वह खुद ज़िम्मेदार होते हैं जनाब।" मैनेजर ने अपने खुश्क होठों पर ज़बान फेरते हुए कहा— "किसी की पेशानी (माथे) पर कुछ लिखा नहीं होता।"

"तुम इसकी परवाह मत करो।" फ़रीदी ने रजिस्टर लेने के लिये हाथ बढ़ाते हुए कहा।

मैनेजर बड़बड़ाता रहा— "मेरा तो दिल चाहता है कि यह कारोबार बंद ही कर दूँ। ख्वाह-मख्वाह (बेमतलब) अपनी हैसियत मशकूक (संदिग्ध) मालूम होती है, मगर फिर मेरे अहल-ओ-अयाल (परिवार) का क्या होगा। बकौल शायर—

हुए मर के हम जो रुसवा हुए क्यों न ग़र्क-ए-दरिया न कभी जनाज़ा उठता न कहीं मज़ार होता"

फ़रीदी उसकी तरफ ध्यान दिये बगैर रजिस्टर के औराक़ (पन्ने) उलट रहा था।

रेखा भी रजिस्टर पर झुकी हुई थी।

एक सफ़े को वह देर तक देखता रहा फिर रजिस्टर बंद कर के उसे मेज़ पर डालता हुआ बोला—

"न तुम ग़र्क-ए-दरिया होगे, वैसे ग़र्क-ए-दरिया होना चाहते हो तो फिर वही अपना पुराना कारोबार शुरू कर दो। मैं वादा करता हूँ कि तुम्हें सांस लेने की भी मोहलत न मिलेगी।"

"मैंने तो अहद किया है कि बक़िया ज़िन्दगी याद-ए-इलाही में गुज़ार दूँ।" मैनेजर हाथ मलता हुआ बोला।

इतने में फोन की घंटी बजी। मैनेजर ने रिसीवर उठा कर कान से लगाया और फ़रीदी की तरफ बढ़ते हुए बोला—

"आप का फोन है जनाब....!" फ़रीदी ने रिसीवर लेकर माउथ पीस में कहा— "रमेश....!"

"जी हाँ, वह चाइनीज़ कॉर्नर में नहीं मिला। मैं अब 'किंग कोंग बार' की तरफ जा रहा हूँ।"

"अच्छी बात है। अब मुझे रियाल्टो में फोन करना।"

फ़रीदी ने कहा और रिसीवर क्रैडल पर डाल दिया। फिर रेखा की तरफ देख कर बोला— "आओ।"

और मैनेजर से कहा— "तुम हर मामले में अपनी ज़बान बंद रखोगे। यानी किसी से इसका तज़किरा (जिक्र) नहीं करोगे कि मैंने तुम्हारा रजिस्टर चेक किया था, समझे!"

"बहुत बेहतर जनाब। आप मुझ पर एतमाद (भरोसा) कीजिये।"

वह बाहर आए।

"दूसरी मंज़िल पर कमरा नंबर तेरह में 'चार्ल्स ब्राउन' नाम का एक

अमेरिकी मुकीम (रुका हुआ) है। उस पर नज़र रखो। आदमी की ज़रूरत हो तो हेडक्वार्टर से तलब कर लो। क्योंकि हमें यहाँ जलने वालों के मुताल्लिक़ भी मालूमात हासिल करनी हैं।"

"चार्ल्स ब्राउन।" रेखा ने आहिस्ता से कहा— "आप ने इसी आदमी के साथ टोनी को देखा था।"

"हाँ.... बस अब हॉल में जाओ।"

फ़रीदी रेखा को वहीं छोड़ कर कैफ़े 'रियाल्टो' की तरफ रवाना हो गया। रियाल्टो एक बड़ा और शानदार कैफ़े था। फ़रीदी वहाँ पहुँच कर सीधा बार के काउंटर की तरफ चला गया।

मैनेजर शायद उसे पहचानता था। उसने बड़े अदब से उसे सलाम किया।

"तुम कैप्टन हमीद को भी पहचानते हो।"

"जी हाँ.... मैं उन्हें पहचानता हूँ।"

"पिछली रात उसने यहाँ शराब पी थी।"

"नहीं हुज़ूर.... वह तो बहुत अरसे से यहाँ तशरीफ़ नहीं लाए।"

"गैस्पर कहाँ मिलेगा?" इतने में फोन की घंटी बजी।

बारटेंडर ने रिसीवर उठाया और फिर उसे फ़रीदी की तरफ बढ़ा दिया।

"हैलो....!" फ़रीदी ने माउथ पीस में कहा।

"मैं रमेश हूँ। उसका 'किंग कोंग बार' में भी पता नहीं चल सका।"

"खैर अब तुम वहाँ जाओ जहाँ थोड़ी देर पहले मुझे फोन आया था। वहाँ तुम्हारी ज़रूरत है। अगर ज़रूरत हुई तो वहीं तुम्हें फोन करूँगा।"

उसने रिसीवर रख कर बारटेंडर से कहा— "तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। इस से गर्ज़ नहीं है कि वह रियाल्टो में कब से नहीं आया।"

"ओह.... आप उसकी क़याम-गाह (रहने की जगह) मालूम करना चाहते हैं। देखिये आज से दो माह क़ब्ल वह कैफ़े 'शबिस्तान' के ऊपर वाले फ्लैट में रहता था। उसके बाद की इत्तिला मुझे नहीं है। एक बार वह इतनी ज़्यादा पी गया था कि अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो सकता था। मेरी ड्यूटी खत्म हो चुकी थी। उसने मुझसे कहा कि उसे उसकी क़याम-गाह तक पहुँचा दूँ। इस तरह मुझे वहाँ तक पहुँचने का इत्तिफाक हुआ था।"

फ़रीदी मुस्कुराया और आहिस्ता से बोला— "वह किसी जुर्म में माखूज़ (शामिल) नहीं है। मुझे बस उससे एक दूसरे आदमी के मुताल्लिक़ थोड़ी सी मालूमात हासिल करनी हैं, वैसे भी तुम झूठ बोल कर खतरे ही में रहोगे। मैं इस यकीन के साथ यहाँ आया हूँ कि तुम मुझे सही पता बता दोगे।"

"मैं ऐसे आदमियों से बहुत डरता हूँ जनाब। अगर उसे मालूम हो गया कि उसका पता मैंने बताया था तो....!"

"तुम इसकी फ़िक्र न करो। उसे नहीं मालूम हो सकेगा। हाँ! अगर तुम खुद ही मेरे जाने के बाद उसे फोन कर बैठने की हिमाकत कर डालो तो....!"

"ओह....! मैं पागल नहीं हूँ जनाब।"

"मैं तुम्हारी हिफाज़त की ज़िम्मेदारी लेता हूँ।"

"देखिये।" बारटेंडर आहिस्ता से बोला— "गैस्पर आज कल टोनी के साथ

रह रहा है। टोनी को आप जानते ही होंगे और टोनी कहाँ रहता है.... इसका.... क्या नाम है.... गरूडा स्क्वायर में.... पंद्रह नंबर गरूडा स्क्वायर।"

फ़रीदी चंद लम्हे उसकी आँखों में देखता रहा फिर बोला— "अपनी ज़बान बंद ही रखना।"

"बहुत बेहतर जनाब। मुझे अपनी ज़िन्दगी इस उम्र में गिरां (भारी) नहीं गुज़रती।"

फ़रीदी रियाल्टो से निकल कर अपनी कार में बैठा और अब वह गरूडा स्क्वायर की तरफ जा रहा था। वहां पहुँच कर भी उसने बारमैन के बयान की तस्दीक की और पंद्रह मिनट के अंदर वह इमारत के उस हिस्से के सामने मौजूद था जहाँ टोनी रहता था। उसने दरवाज़े पर दस्तक दी।

"कौन है!" अंदर से कोई दहाड़ा।

फ़रीदी ने अंग्रेज़ी में कुछ कहा।

लहजा आइलैंड वालों का सा था। उखड़ा-उखड़ा और अक्खड़ सा। दरवाज़ा खुला और दरवाज़ा खोलने वाला उछल कर पीछे हट गया। उसके पीछे ही एक आदमी और था और दोनों की नज़रें फ़रीदी के रिवॉल्वर पर थीं वह अंदर घुसता चला गया। उन्होंने अपने हाथ उठा लिये थे।

"शराफ़त की ज़िन्दगी में भी आप चैन नहीं लेने देते।"

टेढ़ी नाक वाले दराज़-क़द (लंबे कद) आदमी ने कहा। यही टोनी था।

"शराफ़त की ज़िन्दगी।" फ़रीदी ने दोनों को घूरते हुए कहा— "तुम यह समझते हो कि तुम गैर-कानूनी हरकत कर के महफूज़ रहोगे।"

"कैसी गैर-कानूनी हरकत।" गैस्पर ने हैरत से आँखें फाड़ कर कहा।

फ़रीदी ने इस जुमले की तरफ ध्यान दिये बगैर टोनी से पूछा— "क्या तुम कैप्टन हमीद को पहचानते हो?" उसने दोनों के चेहरों पर सरासिमगी (घबराहट) के आसार देखे।

(पेज 135)

वहशत

हमीद चुप-चाप पड़ा रहा। वह महसूस कर रहा था कि शकीला भी इसी तरह बे-हिस-ओ-हरकत (बिना हिले-डुले) पड़ी हुई है।

दफ़अतन दूसरे आदमी ने कहा— "यह सर फ़ैयाज़ की पोती है। आज सुबह यह इन दोनों को अपने घर ले गई थी। फिर वहां से जज़ीरे तक लाई थी।"

"ओह....!" दूसरे आदमी ने थोड़े से तवक्कुफ़ (रुकावट) के साथ कहा— "तो क्या वह कुछ जानती है?"

"यकीनन ऐसे हालात ऐसे क्यों होते।"

"ठीक है। अच्छी बात है। फिलहाल इन्हें यहीं छोड़ो।" उ

न्होंने दूर होते हुए कदमों की आवाज़ें सुनीं। दरवाज़ा बंद हो चुका था। कुछ देर तक हालात में कोई तब्दीली नहीं हुई।

फिर शकीला उछल कर बैठ गई। हमीद इसी हालत में चित पड़ा रहा लेकिन उसने आँखें खोल दी थीं।

"आप ने सुना।" शकीला आँखें फाड़ कर आहिस्ता से बोली।

"सुन लिया।" हमीद ने बेज़ारी से कहा— "सर फ़ैयाज़ के मुताल्लिक़ सुना गया है कि वह किसी ड्रामे को हकीकत का रंग देने के सिलसिले में हज़ारों

रुपया खर्च कर दिया करते हैं।"

"अब मैं अपना सर पीट लूँगी।" शकीला झुंझला कर बोली— "आप को किसी तरह यकीन ही नहीं आता।"

"तुम्हें सर पीटते देख कर मुझे इब्रत (नसीहत) होगी। ज़रूर पीटो।"

"अच्छी बात है। देख लूँगी।" शकीला दांत पीस कर रह गई।

कमरे में अंधेरा फैल गया था। हमीद ने स्विच बोर्ड की तरफ बढ़ कर रोशनी कर दी।

फिर फर्श पर आकर बैठता हुआ बोला— "क्या अब मैं तुम्हें खाऊँ?"

"क्यों! क्या मतलब!"

"भूख लग रही है।" शकीला कुछ न बोली। बोलती भी क्या। उसे तो दोपहर का खाना भी नसीब नहीं हुआ था। हमीद ने जज़ीरे वाले रेस्टोरेंट में झींगे खाए थे और काफी पी थी।

"यहाँ कब तक इस तरह पड़े रहेंगे।" शकीला ने कुछ देर बाद कहा।

"खत-ए-इस्तवा (Equator) पर काफी गर्मी पड़ती है और रोज़ाना बारिश होती है। पता नहीं क्यों मुझे इस वक़्त...."

"भूगोल याद आ रहा है।"

शकीला उसे इस तरह देखने लगी जैसे वह पागल हो गया हो।

हमीद बुदबुदाता रहा— "मैंने पाँचवीं क्लास में पढ़ा था कि कंगारू और लामा सिर्फ..." वह बड़बड़ाता गया कि अगर वह इन जानवरों को यहाँ ले आए तो सरकार को ऐतराज नहीं होना चाहिए क्योंकि अंतरराष्ट्रीय

राजनीति में ज़्यादातर लोग दिलचस्पी लेते हैं। वह स्वेज नहर, भेड़ों और भेड़ियों की मिसालें देता रहा कि यह सब सांस्कृतिक एतबार से करीब हैं।

"तुम मेरा मुँह क्या देख रही हो। आँखें बंद करो वरना मैं तुम्हें चीर-फाड़ कर खा जाऊँगा।"

शकीला हँसी मगर उसके लहजे में बेबसी थी।

"हँसती है।" हमीद दहाड़ा— "मुझे उल्लू का पट्ठा समझती है।"

शकीला एकाएक सहम गई। उसे हमीद की आँखें डरावनी लगने लगीं क्योंकि उन में दहशत थी।

"क्या समझती है।" हमीद फिर दहाड़ा।

"आप तमीज़ से गुफ़्तगू कीजिये ना।" उसने सहमे हुए लहजे में कहा।

"तमीज़ से.... शट अप।" उसने उसके गाल पर थप्पड़ रसीद कर दिया और बाल पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया तो वह उछल कर खड़ी हो गई और पीछे हटी।

हमीद ने उस पर छलांग लगाई और दरमियान में रखी एक कुर्सी वहीं ढेर हो गई। शकीला चीखती हुई दरवाज़े की तरफ भागी।

"अरे बचाओ.... बचाओ।" वह दरवाज़ा पीट-पीट कर चीखने लगी। उधर हमीद ने एक कुर्सी उठा कर उस पर फेंक मारी, जो उसके करीब ही दीवार से टकरा कर फर्श पर गिर गई।

शकीला फिर उछली और हलक फाड़ कर चीखने लगी। हमीद ने दूसरी कुर्सी उठाई।

"अरे.... बचाओ.... अरे मरी.... वी. वी."

कुर्सी उसके करीब ही गिरी और वह फिर उछल कर दरवाज़े की तरफ भागी।

तीसरी कुर्सी मेज़ पर पड़ी थी मगर वह ज़रा भी गफ़लत नहीं करती थी। वह फिर दरवाज़ा पीटने लगी।

हमीद वहशियाना अंदाज़ में कह रहा था— "पतलून पहनती हो। मुझे गुस्सा दिलाती हो। यहीं मार-मार कर दफ़न कर दूँगा।"

पेज **137**

किसी ने दरवाज़ा खोला और शकीला उछल कर उस पर जा पड़ी।

"वह पागल हो गया है। बचाओ।" उसने चीख कर कहा।

"यह खुद पागल हो गई है। इसके करीब न जाना। यह मखमल खाती है।" हमीद ने बंदरों की तरह उछल कर कहा और फिर उस आदमी पर भी कुर्सी खींच मारी।

लेकिन वह दरवाज़े से गुज़र जाने की बजाय उसके ऊपर ही टकरा कर नीचे गिर पड़ी। दरवाज़ा बंद कर दिया गया।

हमीद ने अपना काम जारी रखा। मेज़ से दवात उठाई और दीवार पर उंगली डुबो-डुबो कर दीवारें खराब करने लगा।

वह लिख रहा था— "और जब वह ज़मीन पर आया तो यह ज़मीन जन्नत बन गई लेकिन फरिश्तों ने उसे सूली पर चढ़ा दिया। फरिश्तों ने उसका सारा सामान लूट लिया। वह फिर वापस आएगा।"

दूसरी जगह लिखा— "बहुत जल्द आ रहा है— प्यार का हिंडोला। अदाकारा सुरैया, गोप, शेख मुख्तार, ब्रायन रसेल, स्टीफन स्पेंडर, पाब्लो नेरुदा, नगो, नासिर खान।"

तीसरी जगह लिखने लगा— "जब दुनिया का खात्मा होने लगेगा जब तुम बे-यार-ओ-मददगार होगे.... सिनेमा की खिड़की के नीचे बहुत लंबी लाइन होगी। तुम्हें ब्लैक से टिकट खरीदने पड़ेंगे। उस दिन तुम्हें कानन बाला याद आएगी। माथुरी याद आएगी। अमीर भाई याद आएगी। मास्टर निसार हारमोनियम बजाएगा। मास्टर विट्ठल की टांगें टूट जाएँगी। इंकलाब ज़िंदाबाद।"

फिर उसने इस किस्म की गालियाँ लिखनी शुरू कर दीं जो अक्सर पब्लिक टॉयलेट्स में नज़र आती हैं। उसने मेज़ उलट दी। उस पर रखी हुई चीज़ें चारों तरफ बिखर गईं और वह उन पर कुर्सियां पटक कर उन्हें चूर-चूर करने लगा।

एकाएक दरवाज़ा खुला और पांच आदमी कमरे में दाखिल हुए। यह वही थे।

हमीद ने अपना काम जारी रखा, ऐसा मालूम हो रहा था जैसे उसे उनकी मौजूदगी का इल्म ही न हो।

"क्या कर रहे हो तुम....!" एक ने गरज कर कहा।

हमीद के हाथ रुक गए। वह उनकी तरफ मुड़ा। चंद लम्हे उन्हें क़हर-आलूद (क्रोध भरी) नज़रों से देखता रहा फिर एक बैक खिलखिला कर हँस पड़ा।

"मैं बर्लिन को तबाह कर रहा हूँ।" उसने कहा— "यह देखो। यह हिटलर की लाश है। मगर वह हरामज़ादी फरार हो गई। तुम लोग कहाँ से आए हो। क्या मेरा पैगाम मिस्टर चर्चिल तक पहुँचा दोगे?"

वह लोग दीवार की तहरीरें देख-देख कर हँस रहे थे।

"यह तो ख्वाह-मख्वाह (बेमतलब) पागल हो गया।" —एक ने कहा।

"तुम खुद पागल हो गए हो साले।" हमीद हलक फाड़ कर दहाड़ा— "मैं ब्रिटेन का वज़ीर-ए-आज़म एंथनी ईडन हूँ।"

"वज़ीर-ए-आज़म साहब हम आप का जुलूस निकालेंगे, घबराइये नहीं।"

हमीद ने हाथ उठा कर तक़रीर (भाषण) करने के अंदाज़ में कहना शुरू किया— "मुझे आप से पूरी-पूरी हमदर्दी है, मेरी हुकूमत कोशिश कर रही है कि आप की सारी शिकायतें रफ़ा-दफ़ा (दूर) कर दी जाएँ, मगर इसे हमेशा याद रखिये कि भूखे रहने से मैदा कभी खराब नहीं होता और नंगे रहने से जिस्म में कुव्वत आती है। हर वक्त खुली और ताज़ा हवा नसीब होती है, इसलिये खुद भी नंगे रहिये और अपने बाल-बच्चों को भी नंगा रखिये.... दांतों में दर्द हो तो पानी लगाओ, मसूढ़ों से पीप आए तो 'होका ले खान' का मंजन इस्तेमाल कीजिये, जमे हुए दांत हिल जाएँगे, हाथ उठा कर मांगिये.... चार आने.... चार आने.... चार आने....

अब मेरे पास एक और साँप है— यह साँप हज़ार बरस के बाद उड़ता है। उड़ कर संदल दीप चला जाता है। संदल के झाड़ में लिपट कर एक हज़ार साल तक परवरदिगार की इबादत करता है। फिर वह पाक-ए-बे-नियाज़ उसे एक हसीन और जमील औरत बना देता है। जमील अहमद मेरे मामूँज़ाद खालू का नाम है। कचहरी में वासिल-बाकी (हिसाब-किताब) नवीस हैं। नाना फरनोवीस से उनका कोई रिश्ता नहीं। दुश्मनों ने उड़ाई होगी। अब मैं आप लोगों को एक ठुमरी सुनाता हूँ।" हमीद ने ठुमरी शुरू कर दी और दो-तीन मिनट तक गाता रहा। उन आदमियों में कुछ दबी-दबी सरगोशियां (कानाफूसी) होती रहीं। फिर एक बाहर चला गया। हमीद अब खामोश होकर सीने पर हाथ बांधे खड़ा था, उसका सिर झुका हुआ था और आँखें बंद थीं।

बाहर जाने वाला आदमी कुछ देर बाद वापस आ गया। उसके हाथ में रेशम की डोरी का एक गुच्छा था। वे आगे बढ़े और उन्होंने हमीद को चारों तरफ से घेर लिया। लेकिन हमीद की हालत में कोई फर्क नहीं आया, वह अब भी उसी तरह आँखें बंद किये खड़ा था।

उन्होंने उसके हाथ सीने से हटा कर पीठ पर कर दिये और उन्हें रेशम की डोर से बांधने लगे, लेकिन हमीद ने जुम्बिश (हलचल) भी न की, इसी तरह आँखें बंद किये खड़ा रहा।

"चलिये वज़ीर-ए-आज़म साहब।"

एक ने उसे धक्का दिया और हमीद चलने लगा। लेकिन वह कमरे के दरवाज़े की बजाय दीवार की तरफ था। "अरे! इसकी तो आँखें बंद हैं।" उनमें से एक ने कहा।

"आँखें खोल दीजिये वज़ीर-ए-आज़म साहब।" दूसरा बोला।

पेज 139

"१९५० के वज़ीर-ए-आज़म के लिये आँखें बंद रखने का साल है।" — हमीद ने जवाब दिया।

"चलो....!" उसे शाने (कंधे) से पकड़ कर धकेला जाने लगा।

इस तरह वे उसे एक दूसरे कमरे में ले आए जहाँ शकीला मौजूद थी। इसके अलावा तीन आदमी और भी थे जिन्होंने अपने चेहरे नकाबों में छिपा रखे थे। इसके बरक्स जो लोग हमीद को उस कमरे में लाए थे उन्हें कहीं भी पहचाना जा सकता था क्योंकि उनके चेहरों पर नकाब नहीं थे।

"क्या किस्सा है?" नकाबपोशों में से एक ने अंग्रेज़ी में पूछा।

"यह पागल हो गया है।" जवाब दिया गया।

"क्यों....!"

"कोई वजह समझ में नहीं आती जनाब। कोई सख्ती भी नहीं की गई।"

हमीद आँखें बंद किये खड़ा रहा।

"तुम बताओ क्या बात है?" नकाबपोश ने शकीला से पूछा।

"इसने यकायक मुझ पर कुर्सियां फेंकनी शुरू कर दी थीं।" शकीला ने एक मेज़ पर बिखरी हुई चीज़ें दिखाईं।

"तुम इन लोगों को अपने घर क्यों ले गई थीं?"

"ओहो! तो मैं अब समझी।" शकीला ने बड़ी दिलेरी से कहा— "तो वह तुम ही लोग हो जो हमें धमकियां देते रहे हो।"

"कैसी धमकियां?"

"यही कि अगर एक लाख रुपया अदा न किया गया तो तुम हम में से किसी को अगवा कर के जान से मार दोगे।"

"यह बकवास है।" नकाबपोश ने कहा।

"फिर हमें अगवा क्यों किया गया है?"

नकाबपोश कुछ न बोला। वह दूसरों की तरफ देखने लगा।

"तो तुम इसी लिये उन्हें अपने साथ घर ले गई थीं।" दूसरे नकाबपोश ने पूछा।

"हाँ, मैंने उन्हें वह खत दिखाए थे।"

"लेकिन तुम उन्हें यहाँ क्यों लाई थीं?"

"कहाँ?" शकीला ने पूछा।

"फन आईलैंड में।"

हमीद ने जिरह (Cross-examination) सुनी तो उसे लगा जैसे वह 'फन आईलैंड' की किसी इमारत में थे।

"मेरा ख्याल है कि..."

पेज **140**

-हमें धमकियां देने वाले फन आईलैंड ही में रहते हैं क्योंकि एक खत मुझे यहाँ भी मिला था। एक दिन सैर के लिये आई थी कि एक छोटे से बच्चे ने मुझे लिफाफा दिया और दौड़ता हुआ एक तरफ चला गया। यह खत उन्हीं लोगों की तरफ से था।"

कुछ देर तक खामोशी रही फिर नकाबपोश ने हमीद की तरफ इशारा करके कहा—

"इसे उसी कमरे में बंद कर दो। गालिबन सिंथेटिक गैस का असर है। जो खुद ही ज़ायल (खत्म) हो जाएगा।"

हमीद को फिर धकेला जाने लगा। लेकिन उसने आँखें नहीं खोलीं।

दोस्तों की दुश्मनी

फ़रीदी उन्हें घूरता रहा वह दम-ब-खुद (हैरान) खड़े थे।

आखिर टोनी अपने होठों पर ज़बान फेर कर मुस्कुराया। "मैं इन्हें पहचानता हूँ कर्नल साहब।" उसने कहा।

"वह इस वक्त कहाँ है। मैं झूठ नहीं सुनूँगा।"

टोनी ने अपने चेहरे पर हैरत के आसार पैदा करने की कोशिश की।

लेकिन फ़रीदी की तेज़ नज़रों को धोखा देना आसान नहीं था। "तुम इस पर हैरत ज़ाहिर करने की कोशिश न करो।"

फ़रीदी ने खुश्क लहजे में कहा।

"आप खुद खवाह-मखवाह..." गैस्पर बोल पड़ा— "कोई इल्ज़ाम रख कर सताना चाहते हैं तो बात ही दूसरी है।"

फ़रीदी का उल्टा हाथ उसके मुँह पर पड़ा और वह लड़खड़ाता हुआ दीवार से जा टकराया।

उसके मुँह से एक गंदी सी गाली निकली। लेकिन इसी अंदाज़ में जैसे वह गाली उस दीवार को दी गई हो जिससे वह टकराया था।

फ़रीदी टोनी की तरफ मुतवज्जे (ध्यान दिया) हुआ, जो बहुत बुरा सा मुँह बनाए खड़ा था, जो एहसास-ए-तनफ़्फ़ुर (नफरत) और खौफ का ही नतीजा हो सकता था।

"बताओ कैप्टन हमीद.... और वह लड़की कहाँ हैं।"

फ़रीदी उसकी आँखों में देखता हुआ बोला—

"मैं क्या जानूँ। आप खवाह-मखवाह जुल्म पर आमादा (तैयार) हो गए हैं।"

"क्या तुम आज दोपहर को अर्जुन पुरा नहीं गए थे?"

"गया था। मगर इस से क्या।"

"मैं मंदिर के सामने वाले मकान की बात कर रहा हूँ।"

"कौन सा मंदिर... मैं किसी मकान में नहीं गया था। उधर से गुज़र ज़रूर था। यकीनन आप किसी गलतफहमी में मुब्तिला (फँसे) हैं।"

फ़रीदी ने रिवॉल्वर जेब में रख लिया।

"रिवॉल्वर जेब में रख लीजिये , मुझे बताइये क्या मामला है , क्या आप मुझे कुछ सोचने समझने का भी मौका नहीं देंगे।"

"मौका ज़रूर दिया जाएगा।" फ़रीदी ने रिवॉल्वर जेब में डालते हुए कहा — "लेकिन इस दौरान में हम इस लड़की को कोई गज़न्द (नुकसान) पहुँचा तो मैं तुम दोनों को ज़बह (मार) कर दूँगा।"

ठीक इसी वक्त गैस्पर ने फ़रीदी पर छलांग लगाई।

लेकिन शायद फ़रीदी ने उसे चाकू निकालते हुए देख लिया था और अपनी मखसूस (विशेष) किस्म की तफरीह (मनोरंजन) के मूड में भी था। गैस्पर को नहीं मालूम हो सका कि वह किस तरह फ़रीदी पर से उछलता हुआ टोनी पर जा पड़ा था। दोनों ज़मीन पर ढेर हो गए और टोनी की चीख से कमरा गूँज उठा। क्योंकि गैस्पर का चाकू उसके बाज़ू में पैवस्त (धँस) हो गया था। फिर टोनी ने उसके सीने पर इस ज़ोर की लात रसीद की कि वह कई फीट दूर जा गिरा।

फ़रीदी उन्हें इस अंदाज़ में देख रहा था जैसे दो मुर्गों को लड़ते हुए देख रहा हो। टोनी अपना बाज़ू पकड़े हुए लड़खड़ाता हुआ उठा। उँगलियों से खून टपक रहा था। गैस्पर शायद होश ही में था। लेकिन इस हिमाकत के बाद उसने यही मुनासिब समझा कि चुप-चाप आँखें बंद किये पड़ा रहे।

"फिर न कहना कि मैंने तुम्हें सोचने समझने का मौका नहीं दिया था।"

फ़रीदी ने मुस्कुरा कर कहा।

"कर्नल.... यह गैस्पर बिल्कुल उल्लू का पट्ठा है।" टोनी कराहा। "चाकू अब भी उसी के हाथ में है।"

फ़रीदी बोला— "इस बार कहीं यह तुम्हारे सीने में ही न उतर जाए।"

टोनी ने आगे बढ़ कर गुस्से में दो लातें गैस्पर के रसीद कीं और गैस्पर सचमुच इस पर चीख पड़ा। अगर टोनी अपना ज़ख्मी बाज़ू छोड़ कर उसका हाथ न पकड़ लेता तो फ़रीदी की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) पूरी उतरती।

उसने किसी न किसी तरह चाकू गैस्पर के हाथ से निकाल दिया। लेकिन अब वे दोनों जंगली भैंसों की तरह लड़ रहे थे। चाकू उन से थोड़ी ही फासले पर पड़ा हुआ था। और उन से हर एक की यही कोशिश थी कि किसी तरह चाकू उसके हाथ लग जाए।

फ़रीदी के होठों पर खफीफ (हल्की) सी मुस्कराहट थी और वह उन्हें बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था।

यह जंग तवील (लंबी) होती जा रही थी। आखिर फ़रीदी ने आगे बढ़ कर चाकू उठा लिया और उसे बंद करके जेब में डालते हुए बोला—

"अब तुम दोनों अलीहदा (अलग) हो जाओ.... वरना मुझे अपना फ़र्ज़ अदा करना पड़ेगा।"

लेकिन इसके बावजूद भी दोनों गुत्थमगुत्था रहे। फ़रीदी ने घूँसे मार-मार कर उन्हें अलग किया।

"ये... कर्नल.... ये सुअर का बच्चा—" टोनी गैस्पर की तरफ उँगली उठा कर हांफता हुआ बोला— "जानता है कि कैप्टन और लड़की कहाँ हैं।"
गैस्पर ने कुछ कहने के लिये मुँह खोला ही था कि फ़रीदी का थप्पड़ फिर उसके मुँह पर पड़ा।
"हाँ, तुम बयान जारी रखो। नहीं... ठहरो... अंदर चलो।"
टोनी झूमता हुआ आगे बढ़ा। फ़रीदी ने गैस्पर की गर्दन दबोच ली और उसे ढकेलता हुआ दूसरे कमरे में ले जाने लगा।
"तुम अगर चाहो तो सांस दुरुस्त करने के लिये कुछ पी सकते हो टोनी।"
"शुक्रिया जनाब।" उसने मेज़ पर रखी हुई बोतल से गिलास में बीयर उँडेली और दो सांसों में गिलास खाली कर दिया।

फिर एक कुर्सी में गिरता हुआ बड़बड़ाया— "ये सुअर का बच्चा मुझे धोखा दे गया था। अगर मुझे मालूम होता कि यह आप लोगों का मामला है तो मैं घर से कदम ही न निकालता।"
फ़रीदी ने गैस्पर की गर्दन छोड़ दी थी और उसे खूंखार नज़रों से घूर रहा था।
"इसने कहा था कि अर्जुनपुरा के एक मकान से शायद दो आदमियों को उठाना पड़े। किसी आदमी का काम है, इसलिये कोई खतरा नहीं है। यकीन कीजिये मुझे अभी आप से ये मालूम हुआ है कि कैप्टन और कोई लड़की भी थे। मैं समझ रहा था कि कोठरी में दो बड़े-बड़े थैले थे। मुझे यह भी नहीं मालूम कि उन्हें कहाँ ले जाया गया है।"
"क्यों....!" फ़रीदी ने गैस्पर को संबोधित किया।
"ये झूठ है।"
"उठो....!" उसे खूंखार नज़रों से घूरता हुआ बोला।
"उठो.... इस बार तुम्हारी पसलियां तोड़ दूँगा।"
फ़रीदी का थप्पड़ फिर उसके मुँह पर पड़ा और वह फ़रीदी से लिपट पड़ा।

गैस्पर भी अच्छी खासी जिस्मानी कुव्वत (शारीरिक शक्ति) रखता था। मगर फ़रीदी ने तीन ही मिनट में इसके बल निकाल दिये और फिर जब टोनी ने उसे ज़मीन से उठाया तो वह उठ न सका।
वह एक कुर्सी पर बैठा हुआ बुरी तरह हांफ रहा था और मुँह से बहते हुए खून को बार-बार आस्तीन से खुश्क करने लगता था...

फ़रीदी खड़ा उसे घूरता रहा।

"गैस्पर!" उसने आहिस्ता से कहा— "इस छत के नीचे तुम्हारी मौत भी वाक़े (घटित) हो सकती है।"

पेज 143

गैस्पर ने मेज़ पर कोहनियां टिका कर आगे झुकते हुए ज़बान निकाली जिस से खून की बूंदें टपक रही थीं। वह किसी मरते हुए कुत्ते की तरह हांफ रहा था और उसकी आँखें बंद होती जा रही थीं।
"टोनी—" फ़रीदी ने नरम लहजे में कहा— "मुझे अहसास है कि तुम भी ज़ख्मी हो लेकिन फिर भी मैं तुम्हें तकलीफ दे रहा हूँ। इसका मुँह साफ़ कर के इसे पीने के लिये कुछ दो।"
"ब्रैंडी?" टोनी ने पूछा।
"हाँ.... शुक्रिया।"
टोनी ने जग में पानी ला कर उसका मुँह साफ़ किया। गैस्पर खामोशी से बैठा रहा। फिर टोनी ने एक गिलास में उसे ब्रैंडी दी जिसे वह एक ही सांस

में हलक से नीचे उतार गया।

"मैं अपनी राह में आने वालों से निपटना अच्छी तरह जानता हूँ।" फ़रीदी ने गैस्पर को मुखातिब करते हुए कलाई की घड़ी पर नज़र डाली और कहा —

"तुम्हें सिर्फ पांच मिनट दिये जाते हैं। पाँच मिनट पर तुम इस दुनिया में नहीं होगे और मैं जिस तरह यहाँ पहुँचा हूँ इसी तरह वहाँ भी पहुँच सकता हूँ जहाँ वे दोनों ले जाये गये हैं। क्या तुम सुन नहीं रहे हो?"

"सुन रहा हूँ।" गैस्पर ने भराई हुई आवाज़ में कहा— "सब कुछ सुन रहा हूँ। लेकिन अब तुम मुझे मार ही डालो।"

"ये काम मैं अंजाम दूँगा।" टोनी गुर्रा कर खड़ा हो गया— "मैं ने तुझ पर अहसान किया, रहने को जगह दी, कर्ज़-ख्वाहों (कर्ज़दारों) से बचाया और तूने ये बदला दिया। अगर तू मुझे सच बता देता कि किसे उठाना है तो मैं इस काम में हाथ ही न डालता। अबे हम बुरे आदमियों के भी आपस के कुछ असूल होते हैं।"

गैस्पर कुछ न बोला। उसने सिर झुका लिया था।

"अब बेहतरी इसी में है कि जो कुछ कहा जा रहा है उस पर अमल करो।" टोनी फिर बोला।

"इस मकान में पहुँचने से पहले मुझे भी इल्म नहीं था।" गैस्पर ने भराई हुई

आवाज़ में कहा।

"मैंने वहाँ पहुँच कर उन्हें देखा था।"

"तुम्हें किसने इस हरकत पर आमादा किया?"

"चार्ली ने.... और उसे इस बात का भी इल्म है कि उन्हें कहाँ ले जाया गया है।"

"तुम नहीं जानते?"

"नहीं.... मैं नहीं जानता।"

"ओह.... यही तो मैं कहूँगा।" टोनी बोल पड़ा— "गैस्पर से मुझे ऐसी उम्मीद नहीं थी।"

पेज 144

फिर उसने गैस्पर के लिये बीयर का गिलास लबरेज (भरपूर) किया और उसका शाना (कंधा) थपथपाता हुआ बोला— "अपनी दोस्त हम लोग खवाह-मख्वाह (बेमतलब) एक दूसरे के गुस्से का शिकार हुए।"

"हमारी दोस्ती आज खत्म हो गई।" गैस्पर ने गिलास को दूसरी तरफ खिसकाते हुए निहायत (अत्यंत) बेज़ारी से कहा।

"तुम्हारी मर्जी।" टोनी ने खिसियाने अंदाज़ में अपने शानों को जुम्बिश (हरकत) दी और मेज़ से हट गया।

फ़रीदी गैस्पर को गौर से देख रहा था। उसने पूछा— "चार्ली कहाँ मिलेगा। मैं एक नया नाम सुन रहा हूँ।"

"वह फन आईलैंड के फ्रीजर बार का बार-टेंडर है।"

"अच्छा!" फ़रीदी ने एक लंबी सांस ली और जेब से हथकड़ियों का जोड़ा निकाल कर गैस्पर के हाथों में डाल दिया। फिर टोनी से बोला— "यह तुम्हारी निगरानी में रहेगा और यह तुम जानते हो कि वह दोस्ती तर्क (खत्म) कर चुका है।"

"जानता हूँ।" टोनी संजीदगी से बोला— "हम में दोस्ती खत्म होने का यही मतलब होता है कि एक दूसरे के चाकू खून के प्यासे तड़पते रहें। आप मुतमईन (निश्चिंत) रहिये। यह मेरी निगरानी में रहेगा।"

फ़रीदी उन्हें वहीं छोड़ कर बाहर निकल आया।

एक पब्लिक फोन बूथ से हाई सर्कल नाइट क्लब के नंबर डायल किये। दूसरी तरफ रजी मौजूद था। फ़रीदी ने उसे टोनी के घर का पता बता कर कहा कि वह वहाँ से गैस्पर को ले जाये।

"और रेखा कहाँ है?" उसने पूछा।

"हॉल में है।"

"कुछ देर के लिये तुम उसकी जगह ले लो। उसे फोन पर भेज दो और मैनेजर को वहाँ से हटा लो यानी रेखा से गुफ़्तगू (बातचीत) के वक्त वह करीब न हो।"

फ़रीदी को दो मिनट से ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा। दूसरी तरफ से रेखा की आवाज़ आई।

"तुम दस सादा लिबास वालों को फन आईलैंड भेज दो। उन्हें पूरी तरह मुसल्लह (हथियारबंद) होना चाहिये और अमेरिकन के मुताल्लिक क्या रिपोर्ट है?"

"वह कमरे में मौजूद है। अभी उससे एक आदमी मिलने आया था जिसके मुताल्लिक आप कल सुन चुके हैं।"

145

"कौन आदमी?"

"सर फ़ैयाज़ का प्राइवेट सेक्रेटरी मखदूम।"

"ओहो! ... रमेश को अभी वहीं रोको और सादा लिबास वालों को भी... दूसरी इत्तला तक जजीरे (टापू) में भेजने की ज़रूरत नहीं है।"

फ़रीदी ने बड़ी तेज़ी से रिसीवर हुक से लटकाया और बाहर निकल आया। वह करीब-करीब दौड़ता हुआ टोनी के घर की तरफ जा रहा था क्योंकि टोनी और गैस्पर सच कह निकले जा रहे थे, इन दोनों ने बड़े शानदार तरीके पर उसे धोखा देने की कोशिश की थी, वह सोच रहा था कि अगर ये दोनों निकल गये तो उसे एक बहुत ही घटिया किस्म की शिकस्त (हार) का मुँह देखना पड़ेगा।

साँप

उन दोनों के ड्रामे में फंस कर वह यह तो भूल ही गया था कि उन दिनों टोनी को एक अमेरिकन के साथ देखता था और अब उस अमेरिकन की शख्सियत भी किसी हद तक रोशनी में आ गई थी। यानी सर फैयाज़ के सेक्रेटरी से उसका मिलना जुलना था।

फ़रीदी बड़ी तेज़ रफ्तारी से चलता रहा और ठीक उस वक्त वहाँ पहुँचा जब टोनी और गैस्पर घर से निकल रहे थे। फ़रीदी को देख कर वे ठिठक गये। गैस्पर के जिस्म पर एक लंबा कोट पड़ा हुआ था लेकिन हाथ आस्तीन में डाले बगैर नीचे से ऊपर तक बटन लगा दिये गये थे इस तरह वह हथकड़ियां पड़े हुए हाथों को छिपाने में कामयाब हो गया था।

"बहुत अच्छे।" फ़रीदी अपने मखसूस (विशेष) खूँखार अंदाज़ में मुस्कुराया।

दफ़अतन टोनी ने गैस्पर की गर्दन दबोच ली और बोला— "तूने फिर मुझे ज़लील (अपमानित) कराया। गैस्पर अब मैं किस तरह सफ़ाई पेश करूँगा।"

"क्यों! क्या इसने अपनी किसी मालदार खाला (मौसी) की आखिरी वसीयत सुननी थी?"

"जी नहीं... जेल जाने से पहले रोज़ी से मिलना चाहता था। इसने कहा था कि तीन मिनट से ज़्यादा नहीं लगेंगे। जी हाँ बस तीन घरों के बाद इसका मकान है।"

"अंदर चलो..." फ़रीदी ने नरम लहजे में कहा— "मैं रोज़ी को यहीं बुलवाये लेता हूँ।"

पेज 146

गैस्पर दरवाज़े में मुड़ गया। फ़रीदी उनके बाद दाखिल हुआ और उसने दरवाज़ा बंद करके बोल्ट (चिटकनी) चढ़ा दिया।

"टोनी तुम अपने दोनों हाथ उठा कर दीवार की तरफ मुड़ जाओ।" फ़रीदी ने सर्द लहजे में कहा और रिवॉल्वर का रुख टोनी के सीने की तरफ था।

"मैं नहीं समझा जनाब—"

"अपने हाथ उठाओ वरना मैं फायर कर दूँगा।"

"बहुत बेहतर.... मगर सुनिये तो...!"

बज़ाहिर (ज़ाहिर तौर पर) उसके अंदाज़ से यही मालूम हुआ कि वह हाथ उठाने जा रहा है लेकिन हकीकत में उसका दाहिना हाथ जेब की तरफ गया था। फ़रीदी के रिवॉल्वर की सुर्ख ज़बान निकल पड़ी और टोनी दीवार

से जा टकराया। उसकी उंगलियों को छूती हुई दूसरी तरफ की दीवार में धँस गई थी।

टोनी ने खौफ़ज़दा अंदाज़ में अपने हाथ उठा दिये। गैस्पर खामोश गहरी-गहरी सांसें ले रहा था। फ़रीदी ने आगे बढ़कर टोनी की जेबों से दो छोटे-छोटे हैंड ग्रेनेड बरामद किये।

"ग़ालिबन किसी अमन कॉन्फ्रेंस में शिरकत का इरादा था।" फ़रीदी ने मुस्कुरा कर कहा।

टोनी कुछ न बोला, उसका सीना धौंकनी की तरह चल रहा था और आँखें किसी भूखे दरिंदे की आँखों से मुशाबह (मिलती-जुलती) नज़र आ रही थीं जो किसी हमले का इंतज़ार कर रहा हो।

"तुम्हारी उड़ान की हुदूद (सीमाएं) खत्म हो गईं।" फ़रीदी ने सर्द लहजे में कहा— "कैप्टन हमीद कहाँ है?"

"वह फन आईलैंड ले जाये गये थे। मैं इतना ही जानता हूँ। सोना घाट से एक सफ़ेद नाव उन्हें ले गई थी। हम दरअसल शहर ही छोड़ देने के ख्याल से बाहर निकले थे और गैस्पर ने जो इत्तला भी गलत नहीं दी थी कि आप को चार्ली से बहुत कुछ मालूम हो सकेगा।"

"अगर यह झूठ हुआ तो मैं तुम्हें जेल से निकाल कर कत्ल कर दूँगा।"

"देखिये जेल की बात न कीजिये।" टोनी ने भराई हुई आवाज़ में कहा— "आप को इल्म है कि मैं जमानत पर हूँ।"

"अगर यह दस्ती बम तुम्हारे पास से बरामद न हुए होते तो मैं इस पर गौर करता लेकिन क्या तुम समझ सकते हो कि हाई सर्कल नाइट क्लब वाले अमेरिकन से तुम्हारी दोस्ती कितनी पुरानी है?"
एक बार फिर टोनी का चेहरा तारीख (अंधेरे जैसा) हो गया। उसने कुछ कहना चाहा लेकिन होठ हिल कर रह गये। फ़रीदी भी शायद अब वक्त बर्बाद नहीं करना चाहता था, इसलिये उसने गुफ़्तगू का सिलसिला आगे नहीं बढ़ाया।

पेज 147

एक बार फिर उसने रमेश और रेखा को फोन किया। अब गैस्पर की हथकड़ियों में टोनी भी शरीक हो चुका था। उन्हें दो डिप्टी कांस्टेबलों के चार्ज में देकर फ़रीदी बंदरगाह की तरफ रवाना हो गया। रेखा का मसला अहम था मगर वह इस के मुताल्लिक गुफ़्तगू को तूल (लंबाई) देकर हमीद की ज़िंदगी खतरे में नहीं डाल सकता था। वैसे उसे इत्मीनान था कि वे दोनों ज़िंदा ही होंगे क्योंकि अगर मार डालना ही मक़सूद होता तो वे उन्हें इस मकान से उठा ले जाने का खतरा क्यों मोल लेते।
बंदरगाह से वह जजीरे (टापू) की तरफ रवाना हो गया। अब शाम हो चुकी थी और सूरज पानी में डूबता हुआ एक बहुत बड़ा आग का गोला मालूम हो रहा था।

उसके जजीरे में पहुँचने के पांच ही मिनट बाद दस सादा लिबास वाले भी पहुँच गये। फ़रीदी ने उन्हें कुछ हिदायत देकर मुख्तलिफ सिम्तों (दिशाओं) में फैला दिया। दो आदमी फ्रीजर बार के सामने भी ठहरे।

फ़रीदी बार में दाखिल हुआ, सब से पहले उसकी नज़र बार-टेंडर पर पड़ी जो काउंटर के पीछे खड़ा अनजाने अंदाज़ में पलकें झपका रहा था। यह गठीले जिस्म का एक पस्त-कद (छोटे कद) का इंसान था।

फ़रीदी काउंटर की तरफ चला गया। चार्ली सीधा खड़ा था और उसके आज़ा (अंग) बे-हिस-ओ-हरकत थे। फ़रीदी उसकी आँखों में देख रहा था और दोनों की पलकों ने झपकना छोड़ दिया था।

"अब तुम्हें ला-महाल्ला (अनिवार्य रूप से) मेरी ज़रूरत होगी।" फ़रीदी किसी सांप की तरह फुफकार कर बोला— "मैं फ़रीदी हूँ।"

चार्ली सकते की सी हालत में खड़ा रहा फिर संभल कर बोला— "फरमाइये मैं क्या खिदमत कर सकता हूँ। व्हाईट ब्रैंडी या पेल एल के बैरल आज ही आये हैं। मगर बहुत से लोग उसे पसंद नहीं करते। उह ठहरो.... क्या मैं आप के लिये 'गोल्डन ईगल' पेश करूँ। इस बार मैं आप को एक रत्ती भी शिकायत न मिलेगी।"

"कैप्टन हमीद और सर फ़ैयाज़ की पोती कहाँ है?" फ़रीदी ने सर्द लहजे में पूछा।

"मैं नहीं समझा आप क्या फरमा रहे हैं।"

"टोनी और गैस्पर के ज़रिये यहाँ तक पहुँचा हूँ।"

दफ़अतन चार्ली ने पलट कर काउंटर के नीचे खुले हुए दरवाज़े में छलांग लगाई। फ़रीदी ने काउंटर पर हाथ टेके और दूसरी तरफ कूद गया।

चार्ली निकल जाने में कामयाब नहीं हो सका। अलबत्ता वह दीवार से लगे हुए एक बटन को बार-बार दबाने में पागल की तरह मशगूल था। उस वक्त फ़रीदी ने उसकी इस हरकत पर ध्यान नहीं दिया।

"क्या तुम नहीं बताओगे?" फ़रीदी उसकी गर्दन दबोचे हुए कह रहा था।

"बताता हूँ.... वो.... वो.... ओ....!"

उससे ज़्यादा और कुछ नहीं कह सका। उसकी आँखें बंद हो गईं और हाथ पैर ढीले पड़ गए। फ़रीदी सोच रहा था कि वह इतनी जल्दी बेहोश हो सकता है। जिस्म की बनावट तो ऐसी नहीं थी जिस पर इस किस्म की कमज़ोरी का शुबहा (संदेह) भी हो सकता हो या शायद यह मक्कारी थी। मगर यह मक्कारी काफी देर जारी रही। लोग काउंटर पर खड़े अंदर की तरफ झाँक रहे थे। लेकिन सादा लिबास वालों ने उन्हें अंदर नहीं दाखिल

होने दिया। बार का मालिक एक पारसी था जब उसे मालूम हुआ कि बार में पुलिस मौजूद है तो उसकी धुंधली आँखों से बहुत ज़्यादा मात्रा में पानी बहने लगा। वह दुबले-पतले डील का आदमी था और शायद तंत्रिका संबंधी विकार (neural disorder) का मरीज़ भी.... उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि काउंटर तक जा सकता।

फ़रीदी ने दरवाज़े अंदर से बंद कर लिये थे। यह एक छोटी सी राहदारी थी जिसका अंत एक दरवाज़े पर हुआ था। यह दरवाज़ा बंद था। दोनों दरवाज़े बंद होने के कारण यहाँ अंधेरा हो गया था। फ़रीदी काउंटर की तरफ वाले स्विच बोर्ड की तरफ बढ़ा लेकिन अभी उसका हाथ स्विच तक पहुँचा ही नहीं था कि उसने चार्ली की चीख सुनी।

"अरे मार डाला....!"

"चुप—" राहदारी में रोशनी हो गई और फिर अगर फ़रीदी एक तरफ न हट गया होता तो एक बड़े सांप ने उसे डस ही लिया होता, जो चार्ली के जिस्म पर से झपटा था।

फ़रीदी ने राहदारी के दूसरे सिरे की तरफ छलांग लगाई और मरते-मरते सांप के फन पर फायर कर दिया। सांप दरवाज़े से टकरा कर धप्प से फर्श पर जा गिरा। दो-तीन लहरें लीं और ठंडा हो गया।

चार्ली अपनी पिण्डली दबाए किसी खौफज़दा बच्चे की तरह सिसकियाँ ले रहा था।

"मैं ने खतरे की घंटी बजाई थी—" वह कह रहा था— "वे सब इस इमारत में हैं, ऊपर की मंजिल पर.... उन्होंने.... मम.... मुझे मार.... डाला.... ला.... इंच....!"

उसके मुँह और नाक से खून की बौछार सी निकल कर दीवार पर पड़ी और फिर फ़रीदी ने उसे तोड़ते देखा। दूसरी तरफ का दरवाज़ा बंद था। फ़रीदी ने उसे धक्का दिया लेकिन खोलने में कामयाब न हो सका। उसने काउंटर की तरफ का दरवाज़ा खोला। पांच-छह आदमी सरसामी (पागलपन) के आलम में खड़े उन्हें सादा लिबास वालों ने बाहर नहीं निकलने दिया था।

"अंदर एक लाश है—" फ़रीदी ने बुलंद आवाज़ में कहा— "कोई इधर नहीं आयेगा।"

लेकिन फ़रीदी को जल्द ही मालूम हो गया कि अब वे मुजरिमों को न पा सकेंगे। ऊपरी मंजिल पर जाने से पहले ही उसके इल्म में लाया गया कि कुछ देर पहले पाँच-छह आदमी नीचे खड़ी हुई एक स्टेशन वैगन में फरार हो चुके हैं। लेकिन उनके साथ कोई ऐसा आदमी नहीं था जिसे यह कहा जा सके कि ज़बरदस्ती कहीं ले जाया जा रहा है। इन लोगों के पास कोई सामान भी नहीं था।

फ़रीदी तीन सादा लिबास वालों के साथ ऊपरी मंजिल पर पहुँचा, लेकिन यहाँ चारों तरफ सन्नाटा ही सन्नाटा था। ऐसा मालूम होता था जैसे यहाँ के निवासी कहीं बे-खबर सो रहे हों या किसी जगह भी अव्यवस्था (chaos) के आसार नहीं दिखाई दिये। फ़रीदी यहाँ इस उम्मीद पर आया था कि हमीद और शकीला यहीं होंगे।

उसे मायूसी नहीं हुई। सबसे पहले उसे शकीला मिली, जो एक कमरे में बंद थी। उससे उसे मालूम हुआ कि हमीद की मानसिक हालत ठीक नहीं है और वह अभी यहीं कहीं बंद होगा। शकीला बुरी तरह सहमी हुई थी और बार-बार फ़रीदी को इस तरह घूरने लगती थी जैसे उसे अपनी आँखों पर यकीन न आ रहा हो।

यहाँ सात कमरे थे। एक में हमीद नज़र आया। वह कमरे के बीच में खड़ा था। उसके कपड़े जगह-जगह से फटे हुए थे। फ़रीदी को देखते ही उसने आँखें बंद कर लीं।

"हमीद....!" फ़रीदी ने उसका कंधा हिला कर आवाज़ दी।

"मेरा नाम ज़र्बद इब्न-ए-शाद है—" हमीद ने आहिस्ता से जवाब दिया।

"तब तो ठीक है—" फ़रीदी आहिस्ता से बोला— "अब दिमाग ठीक हो जाना चाहिये वरना उठा कर नीचे फेंक दूँगा।"

"क्या.... लड़की मौजूद है—" हमीद ने आँखें बंद किये हुए ही पूछा।

"क्यों!"

"मैं फिर पागल हो जाऊँगा।"

फ़रीदी ने उसे दरवाज़े की तरफ धक्का दिया और हमीद ने आँखें खोल दीं। शकीला उसे हैरत से देख रही थी।

हमीद ने अपनी बाईं आँख दबा कर कहा— "यह मेरी तफरीह (मनोरंजन) थी।"

पेज 150

फ़रीदी कमरों की तलाशी लेने लगा लेकिन हमीद कुछ इस तरह लापरवाह नज़र आ रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

कुछ देर बाद फ़रीदी दूसरी तरफ के जीने (सीढ़ियों) से नीचे उतर रहा था। जिन का अंत एक दरवाज़े के करीब हुआ था। बोल्ट नीचे गिरा कर उसने दरवाज़ा खोला। अब वह उसी राहदारी में था जहाँ उसने चार्ली की लाश छोड़ी थी। वह अब भी वहीं पड़ी थी।

बार के पारसी मालिक को गश (बेहोशी) पर गश आ रहे थे। फ़रीदी उस की तरफ बढ़ा। वह सादा लिबास वालों को उस स्टेशन वैगन की तलाश में रवाना कर चुका था जिसमें मुजरिम फरार हुए थे। बूढ़े पारसी को गुफ़्तगू (बातचीत) करने के लिये काफी देर दी गई।

"यह इमारत मेरी ही मिल्कियत है—" पारसी कह रहा था। "एक माह पहले की बात है कि गैर मुल्की सियाहों (विदेशी पर्यटकों) ने ऊपरी मंज़िल किराये पर ली थी। वे आर्टिस्ट थे, जल्द ही उनका हलका-ए-अहबाब (मित्र मंडली) बन गया और बहुत ज़्यादा लोग यहाँ आने जाने लगे।"

"चार्ली तुम्हारे पास कब से था?" फ़रीदी ने पूछा।

"एक साल से।"

"वे सियाह (पर्यटक) किस मुल्क के बाशिंदे थे?"

"इटली के, उन्होंने यही बताया था।"

"क्या इन लोगों के पास अपनी कोई निजी कश्ती भी थी?"

"मुझे इसके मुताल्लिक कोई इल्म नहीं है जनाब।"

"मकान किराये पर लेने के सिलसिले में कोई तहरीरी (लिखित) मुआहदा (करार) हुआ था?"

"नहीं जनाब, चूंकि मेरे एक मुतमिद (विश्वस्त) मुलाज़िम ने उनकी ज़मानत दी थी इसलिये मैं ने किसी किस्म की तहरीरी कार्रवाई की ज़रूरत नहीं समझी।"

"वह मुतमिद मुलाज़िम कहाँ है?"

"चार्ली।"

"ओह!.... आप को उस पर एतमाद (भरोसा) था?"

"बहुत ज़्यादा। उसने आज तक मुझे किसी किस्म का नुकसान नहीं पहुँचाया।"

तफ्तीश का सिलसिला ज़्यादा देर तक जारी नहीं रह सका क्योंकि पारसी की मालूमात (जानकारी) महदूद (सीमित) थीं। वह भी यह न बता सका कि चार्ली कौन था, कहाँ से आया था और उसके खानदान के दूसरे अफ़राद (लोग) कहाँ हैं। वैसे वह इसी इमारत के एक कमरे में तनहा (अकेला) रहता था।

पेज 151

चार्ली की लाश ज़रूरी कार्रवाइयों के बाद उठवा दी गई और इमारत पर पुलिस का पहरा कायम कर दिया गया। उनकी वापसी तकरीबन साढ़े दस बजे हुई। शकीला को पहले ही दो सादा लिबास वालों के साथ शहर भिजवा दिया गया था। रवानगी से पहले फ़रीदी ने उससे भी सवालात किये थे और इस नतीजे पर पहुँचा था कि सर फ़ैयाज़ की हैसियत इन मामलात में काफी अहमियत रखती है।

उसने हमीद से भी सारे वाकयात सुने और बोला— "मेरा ख्याल है उन्हें तवक़्क़ो (उम्मीद) थी कि हम दोनों अर्जन पुरे वाले मकान में ज़रूर जायेंगे। दरअसल वे यह मालूम करने के लिये बे-चैन हैं कि शकीला हमें सर फ़ैयाज़ की कयाम गाह (रहने की जगह) पर क्यों ले गई थी।"

"उसकी शामत ने पुकारा था, इसलिये ले गई थी—" हमीद ने जवाब दिया।

"लड़की काफी ज़हीन (बुद्धिमान) मालूम होती है। हमीद साहब इसे तस्लीम करना पड़ेगा।"

"क्या तस्लीम कर लेने पर मैं दो चार बच्चों का बाप हो जाऊँगा, चलिये तस्लीम कर लिया।"

"बस तुम्हें एक आर्ट आता है साहबज़ादे। जहाँ देखा बस नहीं चलता... पागल बन गये, कभी धोखा भी खा जाओगे।"

"अगर वह सिंथेटिक गैस न इस्तेमाल करते तो मैं इसका क़सद (इरादा) भी न करता। सिंथेटिक गैस की ज़्यादा मिकदार (मात्रा) दिमाग माउफ़ (सुन्न) भी कर सकती है।"

"मौत से भी हम-किनार (आमना-सामना) कर सकती है, हमीद साहब! मगर लड़की ने खासी बात बनाई उन्हें इसकी हवा भी न लगने दी कि वह हमें अपने घर क्यों ले गई थी। ओह!.... मगर फ़ुज़ूल, उन्हें हकीकत का इल्म हो ही जायेगा क्योंकि सर फ़ैयाज़ का सेक्रेटरी मखदूम भी इस नामुमकिन साज़िश का शरीक ख्याल किया जा सकता है।"

"क्यों....?"

फ़रीदी ने उसे उस अमेरिकन के मुताल्लिक बताया जो हाई सर्कल नाइट क्लब में मुकीम (ठहरा हुआ) था। कुछ देर तक खामोशी रही फिर हमीद

ने कहा— "आखिर यह चार्ली कैसे मर गया? उन लोगों ने इसी वक्त इसके लिये राहदारी में सांप डाला होगा।"

"यह करीन-ए-क़यास (अंदाज़ा) नहीं है कि अगर वे इसी वक्त सांप डाल सकते थे तो मुझ पर फायर कर देने में क्या दुश्वारी (मुश्किल) हो सकती थी। ज़ाहिर है कि जिस वक्त मैं काउंटर की तरफ का दरवाज़ा बंद कर रहा था उसी वक्त सांप भी डाला गया होगा। इसी वक्त मुझ पर भी फायर किया जा सकता था क्योंकि मेरी पीठ इसी दरवाज़े की तरफ थी जहाँ से सांप राहदारी में डाला गया होगा। नहीं हमीद साहब कहानी ही और है वह इस वक्त कोई ड्रामा तो नहीं रचना चाहते थे कि इसमें दिलचस्पी कायम रखने के लिये सुराग़ रसां को आखिर तक..."

ज़िंदा रखने की ज़रूरत होती। वह मेरा काम तमाम करके किस्सा ही खत्म कर सकते थे।"

"फिर सांप कहाँ से आया?"

"कहीं से नहीं। वह वहीं रहता था और हकीकत में उसे वहाँ रखा गया था कि खतरे की घंटी बजाने वाले को डस ले। घंटी के ऊपर एक खुफिया खाना था जो घंटी का बटन दबाने से खुल जाता था।"

बाद की तफ्तीश के दौरान में मालूम हुआ कि हमीद साहब यह तरीका-ए-कार खुद ही चीख-चीख कर कह रहे थे। मामलात में 'डॉक्टर ड्रेड' के अलावा और किसी की बुद्धिमत्ता को दखल नहीं हो सकता था। खतरे की घंटी ही ऐसी लगाई थी कि वह हर वक्त होशियार हो सकें, लेकिन यह ज़रूरी नहीं था कि खतरे की इत्तिला (सूचना) देने वाला भी बच निकलता। इसके लिये इसका मर जाना ही उनके लिये मुफीद (फायदेमंद) हो सकता था। बहरहाल घंटी का बटन दबते ही खुफिया खाना खुला और उसमें से सांप निकल कर चार्ली पर आ पड़ा।

"आखिर सर फ़ैयाज़ का क्या किस्सा हो सकता है—" हमीद ने कहा।

"फिलहाल कुछ नहीं कहा जा सकता। इसे देखना पड़ेगा। अभी तो टोनी से बेहतरीन जानकारी हासिल करनी है। वैसे मुझे यकीन है कि डॉक्टर ड्रेड अब भी यहीं मौजूद है।"

फिर उसने हमीद को फिंच के मुताल्लिक बताया और हमीद हैरतज़दा हो गया।

मुहीम

दूसरी सुबह हमीद को फ़रीदी नाश्ते की मेज़ पर नहीं मिला। वह नाश्ता

कर ही रहा था कि फोन की घंटी बजी। हलक से उतरता हुआ निवाला फिर मुँह में वापस आ गया। वह समझा कि फोन लाज़मी तौर पर फ़रीदी का ही होगा। ज़ाहिर है ऐसी सूरत में यही गनीमत था कि निवाला मुँह के अंदर ही रहे, वरना उसे तो बाहर आना ही था क्योंकि आज हमीद सौ फीसदी आराम के मूड में नहीं था। उसने रोने वाली आवाज़ में "हैलो" कहा।

"कौन साहब हैं?" दूसरी तरफ से आवाज़ आई— "आवाज़ जनानी (स्त्री जैसी) थी।"

"कैप्टन हमीद—" हमीद ने पुर-वकार (गंभीर) आवाज़ में जवाब दिया।

"तो इसमें रोने की क्या बात है?" हल्की सी हंसी के साथ कहा गया। अब हमीद ने भी आवाज़ पहचान ली थी।

"तो यह तुम हो शकीला—" हमीद गुस्सैल आवाज़ में बोला।

"जी हाँ— फ़रीदी साहब के लिये एक इत्तिला (सूचना) है।"

"मगर फ़रीदी साहब मौजूद नहीं हैं, लिहाज़ा वह इत्तिला मुझे दे दो।"

"आप उन्हें इत्तिला कर दीजियेगा।"

"भाई तुम अपनी इत्तिला अपने पास ही रखो तो बेहतर है—" हमीद ने कुछ ऐसे लहजे में कहा कि शकीला हंस पड़ी।

"आप बहुत खौफ़ज़दा हैं क्यों? मगर मुझ पर तो कल के वाकयात का ज़र्रा बराबर भी असर नहीं पड़ा।"

"क्या इत्तिला है?" हमीद हलक फाड़ कर दहाड़ा।

"मखदूम पिछली रात से गायब है।"

"अच्छा! मैं आज रात तक उसे कत्ल कर दूँगा—" हमीद ने बड़ी लापरवाही से कहा— "और कुछ?"

"तुमसे फोन पर गुफ़्तगू करना तो मुमकिन ही नहीं है। अच्छा मैं खुद ही आ रही हूँ।"

"फाटक पर दो-तीन खूँख्वार किस्म के कुत्ते तुम्हारे इंतज़ार में रहेंगे।"

"मैं उन्हें भी देख लूँगी—" दूसरी तरफ से सिलसिला मुनकता (कट) कर दिया गया।

हमीद दरअसल फिंच की फिक्र में था। वह सोच रहा था कि फ़रीदी डॉक्टर ड्रेड के चक्कर में है क्यों न फिंच की तलाश जारी रखे। वह हमेशा इसी फिक्र में रहता था कि फ़रीदी की मदद के बगैर कोई बड़ा काम अंजाम दे डाले।

वह कमरे से निकल कर फ़रीदी की तजुर्बा-गाह (प्रयोगशाला) में आया। कुछ देर बाद वह अधेड़ उम्र के आदमी के मेकअप में तजुर्बा-गाह से निकल रहा था। साधारण किस्म के ज्वारियों की तरह उसकी पलकें सुर्ख और कदर-ए-मुतवर्रिम (थोड़ी सूजी हुई) नज़र आ रही थीं। फिर वह बाहर

जाने का इरादा कर ही रहा था कि मुलाज़िम ने शकीला का विजिटिंग कार्ड दिया और हमीद ड्राइंग रूम की तरफ चला आया।

शकीला ने उसे देखा और बौखलाए हुए अंदाज़ में खड़ी हो गई।

"कल तुम खौफज़दा नहीं थीं—" हमीद ने आवाज़ बदले बगैर पूछा।

शकीला चौंक पड़ी फिर तंजिया (व्यंग्यात्मक) हंसी के साथ बोली— "तो यह आप हैं।"

"मेरी बात का जवाब दो।"

"नहीं मैं खौफज़दा नहीं थी।"

"फिर ऐसे किसी तजुर्बे से दो-चार होने की हिम्मत है?"

"है क्यों नहीं—"

"चलो जी, मगर जगह के मुताल्लिक कुछ नहीं बताया जायेगा—"

"चलूँगी। क्या तुम मुझे डरपोक समझते हो—"

"मेकअप में चलना पड़ेगा—"

"ओह....!" दफ़अतन शकीला का चेहरा सुर्ख हो गया। आँखें चमकने लगीं और वह तकरीबन हांफती हुई बोली— "मुझे इसका बड़ा शौक है, मैं ज़रूर चलूँगी।"

"शलवार.... उतार कर स्कर्ट पहनना पड़ेगा—"

"मेरे पास स्कर्ट भी हैं—"

"ओनह.... मेरे पास भी हैं—" हमीद ने बुरा सा मुँह बना कर कहा।

"यहाँ.... स्कर्ट....!" शकीला हैरत से बोली— "मेरा ख्याल है कि यहाँ कोई औरत नहीं है—"

"तो क्या दुनिया की सारी नेमतें सिर्फ औरतों के लिये हैं—" हमीद ने झुंझलाते हुए अंदाज़ में कहा।

"अरे नहीं साहब—" शकीला संजीदगी से बोली— "दुपट्टा भी आपके लिये है, फ्रॉक आपके लिये, गरारा भी आपके लिये है—"

"अच्छा.... बस अब ज़्यादा फैयाज़ी से काम न लो, मेरे साथ आओ—" हमीद उसे तजुर्बा-गाह में लाया और बड़ी अलमारी का दरवाज़ा खोलने लगा जो मुकफ़्फ़ल (बंद) था। लेकिन जैसे ही दरवाज़ा खुला, शकीला मुतहय्यिर (हैरान) रह गई क्योंकि वह हकीकत में अलमारी नहीं थी बल्कि एक छोटे से कमरे का दरवाज़ा था। हमीद उसे दरवाज़े में ढकेलता हुआ बोला—

"जाओ.... वहाँ तुम्हें हर किस्म का लिबास मिलेगा, कोई सा स्कर्ट चुन लेना।"

उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और तजुर्बा-गाह में टहलने लगा। मुश्किल से तीन मिनट गुज़रे होंगे कि बाहर से कदमों की आवाज़ सुनाई दी। दरवाज़ा खुला और फ़रीदी अंदर दाखिल हुआ, वह चारों तरफ देख रहा था। फिर हमीद को घूरता हुआ बोला—

"शकीला कहाँ है?"

"आज मैं काम के मूड में हूँ—" हमीद ने लापरवाही से कहा— "उसे अपने साथ ले आया हूँ।"

"लेकिन उसे यहाँ तजुर्बा-गाह में लाने की क्या ज़रूरत थी—"

पेज 155

"ओह.... वह इस वक्त ड्रेसिंग रूम में एक अच्छा सा स्कर्ट तलाश कर रही है—"

"हमीद! तुम्हें कत्ल कर दूँगा—" फ़रीदी दांत पीस कर बोला।

"मैं मिनटों में कातिल का सुराग निकाल कर कानून के हवाले कर दूँगा—"

"उसे बाहर निकालो—"

"खुद ही आ जायेगी— मालूम नहीं किस पोज़िशन में हो—"

फ़रीदी ने आगे बढ़ कर दरवाज़े पर दस्तक दी। अंदर से दरवाज़ा खुलने में देर नहीं लगी लेकिन शकीला, फ़रीदी को देख कर ठिठक गई।

"क्या कल का तजुर्बा मोहतात (सावधान) रहने के लिये काफी नहीं था —" फ़रीदी ने खुश्क लहजे में कहा—

"बाहर आओ।" शकीला चुप-चाप निकल आई और सहमे हुए लहजे में बोली— "इन्होंने कहा था—"

"कल का तजुर्बा तुम्हें सारी ज़िंदगी याद रहना चाहिये। बैठ जाओ—" फ़रीदी ने कुर्सी की तरफ इशारा किया। शकीला बैठ गई।

"क्या तुम मखदूम के मुताल्लिक और कुछ नहीं बता सकतीं—"

"मैं इसी के मुताल्लिक एक बात बताने के लिये आई थी—"

"क्या....?"

"वह कल रात से गायब है और दादा जान न सिर्फ मदहोश हैं बल्कि ऐसा

मालूम होता है जैसे कोई बात ही न रही हो। उन्हें अपनी बेहोशी कतई याद नहीं है यानी वह समझते हैं कि उन्हें कुछ हुआ ही नहीं था।"

"तुम यह अपना मेकअप खत्म करो—" फ़रीदी ने हमीद से कहा। और फिर शकीला की तरफ मुतवज्जे हुआ। "आज रात को वह एक जगह मदऊ (आमंत्रित) हैं। वहाँ ज़रूर जायेंगे हालाँकि हम लोग नहीं चाहते।"

हमीद ने कहा और खामोश होकर हमीद की तरफ देखने लगी, जो वॉश बेसिन पर झुका हुआ किसी अर्क से अपना चेहरा साफ़ कर रहा था।

"कहाँ मदऊ हैं—" फ़रीदी ने पूछा।

"राय शेखर के यहाँ। वहाँ वह तीन दिन तक कयाम करेंगे।"

"तीन दिन तक—"

"हाँ.... राय शेखर हमारे यहाँ आये थे, वह उन्हें मदऊ कर गये हैं। आज रात को इन—"

पेज 156

की शहरी कयाम गाह पर एक तक़रीब (समारोह) है, इसके बाद वह चंद दोस्तों के साथ अपने देहाती मकान में चले जायेंगे जहाँ तीन दिन तक कयाम रहेगा। यूँ ही तक़रीब—"

"देहाती कयाम गाह कहाँ है—"

"सोनाघाट के करीब कहीं है—"

"ओह....!"

फ़रीदी चंद लम्हे खामोश रहा। फिर उसने शकीला से कहा— "अब तुम जाओ। अगर तुमने इस सिलसिले में मज़दी हिमाक़तें (और बेवकूफियां) कीं तो नतीजे की खुद ज़िम्मेदार होगी—"

"मैं नहीं समझी—"
"इन मामलात में सुकूत (खामोशी) इख्तियार करो। हमसे मिलने की कोशिश न करो। अगर कोई खास बात हो तो फोन पर मत्तला (सूचित) करो। हम में से कोई घर पर मौजूद हो या न हो, अपना पैगाम पहुँचा दो। वह हम तक पहुँच जायेगा। इस से ज़रूर मत्तला करना कि मखदूम कब और किस वक्त घर आता था, इस पर गहरी नज़र रखो—"
"बहरहाल दादा जान के खिलाफ कोई साज़िश हो रही है—" शकीला ने एक तवील (लंबी) सांस लेकर कहा।
"और इस वक्त के हालात तो यही कहते हैं लेकिन तुम मुझसे कुछ पूछने की कोशिश नहीं करोगी। बस अब जाओ—"
"बस अब जाओ—" हमीद ने दर्दनाक आवाज़ में दोहराया।
शकीला शरारत आमेज़ अंदाज़ में मुस्कुराती हुई तजुर्बा-गाह से निकल गई।
फ़रीदी खला (शून्य) में घूर रहा था। उसकी पेशानी पर शिकनें थीं और दाहिने हाथ की उंगलियाँ मेज़ पर पड़े हुए कागज़ पर हौले-हौले रेंग रही थीं। दफ़अतन उसने कहा—
"हमीद तुम सोनाघाट में राय शेखर का मकान तलाश करोगे। यह काम इसी वक्त से शुरू होगा। किसी तरह इस मकान में अपने लिये जगह बनाने की कोशिश करो—"
"हज़रत! यह शकीला वही है ना.... जिसका कहलाना टीम का काम नहीं है—"
"बकवास न करो। वह एक अमेरिकी सरमाया दार चार्ल्स ब्राउन से किसी किस्म के व्यापारिक ताल्लुक़ात पैदा करना चाह रहा है। चार्ल्स ब्राउन जो हाई सर्कल नाइट क्लब में मुकीम है—"
"वह तो एक बड़ा सरमाया दार है—"

"वही अमेरिकन जिसकी आप निगरानी कर रहे हैं—"
"हाँ वही। राय शेखर ने उसे चंद मामलात करने वाला है। सर फ़ैयाज़ के —"

पेज 157
मखदूम से भी मिलता जलता है और दूसरी तरफ टोनी भी अक्सर इसके साथ देखा गया है लेकिन टोनी का कहना है कि चार्ल्स ब्राउन से वह खुद ही मिला था। मकसद सिर्फ यह था कि अगर वह इस पर किसी तरह हाथ साफ़ कर सके तो.... टोनी पहले भी अक्सर गैर मुल्कियों को कुछ मामलात में ठगता रहा है। लिहाज़ा इसके बयान को झुठलाया भी नहीं जा सकता। तुम लोगों के अगवा (अपहरण) का इल्ज़ाम उसने सर-ब-सर (पूरी तरह) चार्ली पर डाल दिया है—"
"मगर यह किस किस्म की साज़िश हो सकती है—"
"किस सिलसिले में.... कहो.... साज़िश की अक़्साम (किस्मों) का इल्म शायद अरस्तू को भी नहीं था तुम्हें क्या बोलना—"
"शादी के बाद, इस से पहले किसी राजा फलाने को डराने धमकाने का हिदायत नामा ख़ुसरो, खुशदामन पढ़ना ज़रूरी है। वरना हार्ट फेल हो जाने की गारंटी नहीं दी जा सकेगी—"
"वक्त बर्बाद न करो। तुम्हें अभी और इसी वक्त सोनाघाट के लिये रवाना हो जाना चाहिये। मुझे वह इमारत मालूम है जिसे राय शेखर अपना देहाती मकान कहता है मगर मैं वहां किस तरह कदम जमा सकूँ गा। शकीला को भी आप ने डरा दिया वरना इस से बड़ी मदद मिलती—"
"क्या मदद मिलती—"
"कहीं भी कदम जमाने के लिये औरत ज़रूरी होती है। ठहरिये— दरमियान में न बोलिये। मुझे अपना नुक्ता-ए-नज़र वाज़िह (स्पष्ट) करने

दीजिये। फ़र्ज़ कीजिये मैं नौकरों के भेस में वहां घुसना चाहता हूँ। क्या आप यह समझते हैं कि वहां के नौकर मुझे कदम जमाने देंगे, मेरा तो ख्याल है कि शायद वह कंपाउंड में भी कदम भी न रखने दें। लेकिन एक औरत.... हाहा.... सिर्फ एक औरत पूरा नक्शा बदल सकती है। सर पर बैठा लिया जाऊँगा—"
"ठीक कहते हो—" फ़रीदी ने उसकी आँखों में देखते हुए बोला— "इसका इंतज़ाम किया जा सकता है—"
"क्या इंतज़ाम किया जा सकता है—"
"रेखा—"
"अरे तौबा-तौबा—" हमीद कानों पर हाथ रख कर बोला— "मैं उसके साथ एक मिनट भी ज़िंदा न रह सकूँ गा—"
"संजदगी इख्तियार करो। मैं रेखा को फोन करने जा रहा हूँ—"
"लीजिये—" हमीद ने बेबसी से कहा और एक कुर्सी में गिर गया। फ़रीदी बाहर जा चुका था। हमीद सोच रहा था कि अब उसे किस किस्म का मेकअप करना चाहिये, वैसे अभी लेडी इंस्पेक्टर रेखा का मसला भी बाकी था।

वह किस किस्म के मेकअप में होगी।
तकरीबन दस मिनट बाद फ़रीदी वापस आया और हमीद के चेहरे के दो-तीन लोशनों से दो-चार होना पड़ा। खुद फ़रीदी ही उसका मेकअप कर रहा था।
इसी दौरान रेखा भी आ गई और फिर थोड़ी देर बाद वह दोनों कुछ ऐसे हुलिए में नज़र आए कि उनके वालिदैन भी उन्हें पहचान न सकते। रेखा एक अल्हड़ किस्म की देहाती लड़की के रूप में खड़ी थी और हमीद एक

गाँव का देहाती मालूम हो रहा था।
फ़रीदी ने उन पर विदाई नज़रें डालते हुए बड़े आसूदा (संतुष्ट) अंदाज़ में सर हिलाया।

खत

सोनाघाट के शेखर महल के गिर्द (चारों ओर) वे दोनों चक्कर लगा रहे थे। हमीद की स्कीम यह थी कि किसी एक मुलाज़िम की हिमायत हासिल कर ली जाए।
शाम हो गई थी और मौसम काफी खुशगवार था। हमीद ने रेखा की तरफ इतने प्यार से देखा कि वह बौखला गई।
"आओ हम तुम इसी तरफ से अंदर इन (दाखिल) हो चलें—" हमीद ने मुस्कुराकर कहा।
"इस से पहले तुम किसी यतीम खाने में दाखिला लेकर भीख माँगने की मश्क (अभ्यास) बहम पहुँचा लो—" रेखा ने जवाब दिया— "वैसे अगर तुम ज़्यादा बदतमीजी करोगे तो भुगतोगे—"
"मैं वादा करता हूँ कि बहुत कम बदतमीजी करूँगा—"
"शट अप....!"
"हाइँ.... क्या तुम इस हुलिए में अंग्रेज़ी बोलोगी? ज़रा संभल कर, वरना यह हुलिया रखा ही रह जायेगा और तुम हलवा बना दी जाओगी—"
"बकवास मत करो, वरना चबा डालूँगी—"
"और फिर मैं डंडों से तुम्हारी खबर लूँगा। तुम्हारा घर वाला और देहाती भी —"
यह झक-झक हो ही रही थी कि फाटक से एक आदमी निकला जो वज़ह-

क़ता (कद-काठी) से मुलाज़िम ही होता था। उसने चाहा कि रेखा को घूरता हुआ करीब से निकल जाए, हमीद ने लपक कर उसका हाथ पकड़ लिया।

पेज 159

चूँकि वो रेखा को घूर रहा था इसलिए हमीद की इस गैर-मतवक्को (अचानक) हरकत पर बौखला गया।

"हम परदेसियों की भी सुन ले भाई—" हमीद ने कहा।

यह जुमला भी गैर-मतवक्को ही था। वह रुका और ज़्यादा चुग़द (मूर्ख) नज़र आने लगा।

"हम भिखारी नहीं हैं—" हमीद ने कहा।

"अरे नहीं जी भिखारी क्यों—" नौकर जल्दी से बोला।

"हमें नौकरी चाहिये वरना हम दोनों परदेस में भूखे मर जायेंगे यार—"

"नौकरी....!" मुलाज़िम ने तशवीश (चिंता) भरी नज़रों से दोनों को बारी-बारी देखा और अपने सर पर हाथ फेरता हुआ बोला— "यहाँ ज़रुरत तो नहीं है पर मैं.... देखो.... मैं बताऊँ सरकार आज आयेंगे.... पर बहुत रात गये.... ठहरो.... एक तरकीब है.... मेरी बुआ के लड़के बन जाओ.... यह घर वाली है तुम्हारी—"

"हाँ भाई—"

"बस तो फिर तुम मेरी बुआ के लड़के बन जाओ। सिफारिश करूँगा साहब से—"

"वाह.... भैया बड़े दयालु हो। भगवान भला करे तुम्हारा—"

"तो चलो मेरे साथ.... आओ—" उसने कहा। वह बार-बार ललचाई हुई नज़रों से रेखा की तरफ देखने लगा था।

वह उन्हें शेखर महल के कम्पाउंड में ले आया और चलते-चलते रुक कर

बोला— "पर देखो दोस्त, ज़ाहिर न होने पाए कि तुम मेरी बुआ के लड़के नहीं हो—"
"अरे नहीं यार ऐसा भी क्या—" हमीद जल्दी से बोला— "भूखा तो थोड़े ही मरना है—"
फिर नौकर ने इस किस्म की गुफ़्तगू शुरू कर दी जैसे इस से ज़्यादा नेक आदमी पिछली कई सदियों से पैदा ही न हुआ हो। हमीद सर हिला-हिला कर हाँ में हाँ मिलाता रहा। रेखा दिल ही दिल में कबाब हो रही थी। उसका बस चलता तो उस नौकर की गर्दन ही उड़ा देती जिसकी ज़बान तो मुतबर्रक (पवित्र) बातों से धुली हुई मालूम होती थी मगर आँखें.... उनमें कितनी तीव्र भूख थी वह बार-बार कनखियों से उसकी तरफ देख लेता था।
वह उन्हें शागिर्द-पेशा (मुलाज़िमों के रहने की जगह) के एक कमरे में ले आया और बोला— "तुम दोनों यहीं रहना और मैं आता हूँ। हाँ भाई देखो किसी बात की तकलीफ मत उठाना। तुम्हारा ही घर है—"
रेखा कुछ न बोली। लेकिन हमीद बहुत ज़ोर-ज़ोर से गर्दन हिलाता हुआ बोला— "ज़रूर.... ज़रूर—"

पेज 160
जब वह चला गया तो रेखा बुरा सा मुँह बना कर बड़बड़ाने लगी।
"यह सब मुझसे नहीं होगा। हाँ.... क्या मुसीबत है—"
"अरे वाह.... क्या तुम सचमुच खुद को मेरी घरवाली समझने लगी हो। यह सब नहीं हो सकता? क्यों आई थीं इस महकमे (विभाग) में—"
रेखा कुछ न बोली और हमीद ने कहा— "तुम डरती क्यों हो—"
वह रात उन्होंने इसी कोठरी में बसर की। रात का खाना उनका "फूफीज़ाद भाई" (बुआ का लड़का) ही लाया था और इसी से यह इत्तला (सूचना)

भी मिली थी कि "साहब" अपने मेहमानों समेत आ गया है।
दूसरी सुबह इन दोनों को नौकरी मिल गई। हमीद ने मेहमानों में से एक-एक को पहचाना। सर फ़ैयाज़ बीमार नहीं मालूम होता था। वह एक तवील-उल-क़ामत (लंबे कद) और कवी-उल-जसा (मजबूत शरीर) वाले बूढ़े जैसा था। मेहमानों में शहर के तीन बड़े सरमायादार (पूंजीपति) भी थे — सेठ नूरानी, सेठ नौशेरवां और मेजर सईद। दो बड़े वकील तारिक और मिस्टर जाफ़री सुप्रीम कोर्ट के एक जज जस्टिस शर्मा की शख्सियत भी काफी नुमायाँ (प्रमुख) थी।
वह सब ग़ालिबन (शायद) तब्दीली-ए-आबो-हवा (जलवायु परिवर्तन) के लिए यहाँ आए थे। राय शेखर यहाँ के मुतवल्लियों (संचालकों) में से था। वह अक्सर अपने इसी देहाती महल में पुर-तकल्लुफ़ (भव्य) दावतें देता रहता था। मेहमान आए और कई दिनों तक ठहरे। मुख़्तलिफ़ किस्म की तफ़रीहात (मनोरंजन) होतीं— शतरंज से लेकर "कौत" (एक खेल) तक के खेल मौजूद थे।
शाम को वह सब लॉन पर निकल आए। मेजर सईद बड़ा अच्छा निशानाबाज़ था। वह अपने जौहर दिखाने लगा। उसके हाथ में एक उम्दा किस्म की राइफल थी जिससे वह दाएं-बाएं के पेड़ों पर निशाना लगाता और वह दूसरे ही लम्हे ज़मीन पर गिरता हुआ दिखाई देता। वाकई बड़ा मुश्किल काम था— फल दागदार हुए बगैर ज़मीन पर आ गिरता— औरतें भी आ गई थीं— मेजर सईद उनकी तारीफों से खुश होकर और ज़्यादा मश्क़ (अभ्यास) के सबूत पेश कर रहा था।
ठीक इसी वक्त एक कार कम्पाउंड में दाखिल हुई और लोग उसकी तरफ मुतवज्जे (आकर्षित) हो गये।

एक सफेद फाम (गोरा) गैर-मुल्की कार से उतरा। वह लोग उसे खुश-आमदीद कहने के लिए आगे बढ़े। हमीद, मेजर सईद के कारतूसों की पेटी

उठाए हुए उसके पीछे चल रहा था।

आने वाला अजनबी मेहमान शायद मौजूद मेहमानों से ज़्यादा बुलंद मर्तबा (ऊंचे ओहदे) का था क्योंकि शेखर उसे लेने खुद आगे बढ़ा था।
शाम की चाए न्लान में ही सर्व की गयी थी , और हमीद सोच रहा था की ये सचमुच वक़्त की बरबादी ही न हो ,

पेज 161
ज़ैदी आदमी ही है और अंदाज़े की गलती इस से भी हो सकती है।
मुमकिन है यह सब महज़ (सिर्फ) फरेब-ए-नज़र हो, वहम हो— टोनी अगर अमेरिकन के साथ देखा गया था तो उसके पास इसका जवाब भी मौजूद था— टोनी इसका मकसद सिर्फ यही था कि वह किसी न किसी तरह इस से कुछ रुपया हथिया ले। वैसे भी टोनी कई बार गैर-मुल्कियों को ठगने और धोखा देने के जुर्म में माखूज़ (पकड़ा गया) हो चुका था। अगर मखदूम चार्ल्स ब्राउन से मिलता रहता था तो यह भी कोई अनहोनी बात नहीं थी क्योंकि चार्ल्स ब्राउन एक गैर-मुल्की सरमायादार था और इसी गरज़ (उद्देश्य) से यहाँ आया था कि यहाँ की सनअतों (उद्योगों) में अपना सरमाया लगाए, सर फ़ैयाज़ भी शहर के बड़े सरमायादारों में से था। मुमकिन था कि मखदूम का चार्ल्स ब्राउन से मिलना कारोबारी हैसियत रखता हो।
बहरहाल जितना कुछ हमीद के इल्म में था उस बुनियाद पर कोई यकीनी (निश्चित) सूरत सामने नहीं आ सकती थी। लगता था कि फरीदी ने अब तक उसे असलियत से आगाह (सूचित) ही नहीं किया हो।
इस वक्त यहाँ आने वाला चार्ल्स ब्राउन ही था। हमीद को उसका नाम उस

वक्त मालूम हुआ जब राय शेखर अपने बाज़ दोस्तों से उसका तारुफ़ (परिचय) करा रहा था। मर्द शायद उसे पहले ही से जानते थे, इसलिए यह तारुफ़ औरतों तक ही महदूद (सीमित) रहा। उनकी गुफ्तगू से हमीद ने अंदाज़ा लगाया कि चार्ल्स ब्राउन यहाँ मुकीम (रुका हुआ) ही रहेगा। शाम की चाय लॉन पर सर्व की गई। हमीद सोच रहा था कि कहीं यह पेच-ओ-वक्त की बर्बादी न हो जाए। वह तो सोच रहा था कि जैसे ही वह महल में दाखिल होंगे कोई न कोई वारदात हो जाएगी और वह फिर उसी कमरे में जा छुपा जहाँ पिछली रात गुज़ारी थी। रेखा कुछ ज़्यादा ही बेज़ार (परेशान) नज़र आ रही थी।

हमीद ने कराह कर चारपाई पर बैठते हुए कहा— "कल्लू की माँ ज़रा हक़्क़ा भर दे—"

"मैं तुम्हारे मुँह में जलती हुई लकड़ी ठूँस दूँगी—"

"अरे वाह! अगर मैं ऐसे में सबके सामने तुम्हें पीटना शुरू कर दूँ तो तुम मेरा क्या करोगी— महल के बड़े आदमी मुझे गँवार समझ कर टाल जायेंगे और यह नौकर सिर्फ दूर ही से हाँ-हाँ करेंगे, पास कोई भी नहीं आयेगा। मगर क्या तुम यह कह सकोगी कि तुम लेडी इंस्पेक्टर रेखा हो या मैं हमीद हूँ—"

"मैं तुम्हारी गर्दन अपने दांतों से उधेड़ दूँगी—"

"बड़ी लज़त-पसंद (स्वाद प्रेमी) मालूम होती हो। बाहर बड़ी हसीन चाँदनी बिखरी हुई है। कल्लू की माँ कितने—"

दिन हुए हमने चाँदनी में घास नहीं खाई—"
"हम यहाँ क्यों आए हैं—" रेखा ने झिझला कर कहा।
"हम लोग चाँद को शहद में डुबो कर खाएंगे, यानी हनीमून मनाएंगे, कल्लू की माँ! परवाह नहीं कि कल्लू मौजूद है या नहीं—"
रेखा कानों में उंगलियाँ ठूँस कर दीवार से लग गई। हमीद हँसता रहा। कमरे में एक चारपाई थी और पिछली रात भी रेखा को ज़मीन पर ही सोना पड़ा था और हमीद चारपाई पर खर्राटे लेता था। कम से कम रेखा के लिए इतनी तकलीफ नहीं उठा सकता था कि खुद ज़मीन पर सोता। वह बहुत मग़रूर (अभिमानी) थी और हमीद को उसे नीचा दिखाने में हमेशा बड़ी लज़त (मज़ा) महसूस होती थी।
"तुम अभी तक कर्नल फरीदी को नहीं समझ सकें—" हमीद ने संजीदगी से कहा।
"क्या मतलब...!" रेखा ने कहा जो कानों से उंगली निकाल चुकी थी।
"यह मेरी नहीं बल्कि डॉक्टरों की राय है कि कर्नल फरीदी का दिमाग़ किसी भी वक्त भी ख़राब हो सकता है—"
रेखा कुछ नहीं बोली। हमीद ने फिर कहा— "यह तो खुद ही मालूम करना पड़ेगा कि हम यहाँ क्यों गये हैं। फरीदी साहब ने आज तक क़ब्ल-अज़-वक्त (समय से पहले) कुछ नहीं बताया और यह क़ब्ल-अज़-वक्त बातें मुझे क़ब्ल-अज़-मर्ग (मौत से पहले) मालूम होने लगती हैं, मगर क्या किया जाए इस मर्ज़ का कोई इलाज नहीं है—"
"मैं नहीं समझी—"
"क्या करोगी समझ कर, तन ब-तक़दीर (भाग्य के सहारे) बैठो। शादी-ब्याह भी हो जाएगा तो तुम्हारी भी ख़ुशी होगी कल्लू की माँ—"
"खुदा ग़ारत (नष्ट) करे तुम्हें—" रेखा ज़मीन पर लगे हुए बिस्तर पर जा पड़ी और कम्बल खींच लिया— "मेरे साथ तुम भी ग़ारत हो जाओगे,

किसी बड़े खतरे की बू सूंघ रहा हूँ—"
"यानी...!" रेखा उठ बैठी।
"यहाँ के सारे मुलाज़िमों की नज़र तुम पर है—"
रेखा दांत पीसती हुई लेट गई। फिर उसने कम्बल से मुँह निकाल कर कहा — "ज़रा सा भी मौका मिले फिर तुम्हें देखूँगी—"
"चलो मेरी तरफ से फुर्सत ही फुर्सत है। देख लो—"
रेखा ने फिर कम्बल मुँह पर डाल लिया।

पेज 163
हमीद ने पाइप सुलगाया और फिर खयालात की वादियों में भटकने लगा। यह कहानी कहाँ से शुरू हुई थी। वह अपने बकरे को ग़ज़लें सुना रहा था। एक लड़की आई जिसका दादा पागल हो गया था। लड़की का ख्याल था कि ज़हनी फ़ितूर (मानसिक विकार) कुदरती नहीं है। यह ख्याल इसलिए पैदा हुआ था कि एक सफेद कश्ती में किसी आदमी को देख कर उसकी हालत गैर हो गई थी और फिर इसके बाद ही उस पर पागलपन का दौरा पड़ गया था। लड़की के साथ वह 'फन आईलैंड' गये, वहाँ फरीदी एक बंदर के पीछे दौड़ा।

इसी जगह से फिंच की कहानी उभरी और फरीदी को डॉक्टर ड्रेड का ख्याल आया। अब यहाँ से दो मुख़्तलिफ़ रास्ते शुरू हो गये, पता नहीं वह दोनों इस पनाह पर (जिस पर जन पूरे मकान से उठा लिए गए थे) फरीदी को फिंच के मुतल्लिक़ (बारे में) कुछ मालूम हो गया था या वह वाकया इसलिए पेश आया था कि वह लड़की उन्हें अपने घर ले गई थी, हो सकता है कि सर फ़ैयाज़ की हैसियत इस कहानी में महज़ (सिर्फ) बहलावा हो।

वह ख़्वाहमख़्वाह (अकारण ही) इस तरह सामने आ गया हो कि उस पर भी इसी सिलसिले की एक कड़ी होने का शुबहा (संदेह) किया जा सके। अक्सर ऐसे इत्तिफ़ाक़ात (संयोग) पेश आते हैं लेकिन उनकी हकीकत कुछ भी नहीं होती। असल मामलात से उनका दूर का ताल्लुक भी नहीं होता। अब रहा डॉक्टर ड्रेड का मसला, तो यह भी हमीद की दानस्त (समझ) में महज़ ख्याल ही ख्याल था।

फरीदी के पास इसका कोई वाज़िह (स्पष्ट) सबूत नहीं हो सकता था कि डॉक्टर ड्रेड यहीं कहीं मौजूद है, वह तो सिर्फ फिंच की मौजूदगी की बिना पर कयास (अंदाज़ा) कर बैठा था। हमीद उसे कयास ही समझ रहा था। उसने रेखा की तरफ देखा जो कम्बल से मुँह निकाले उसे घूर रही थी।
"सो जाओ... कल्लू की माँ—" हमीद बड़े प्यार से बोला।
रेखा चंद लम्हे खामोश रही, फिर बोली— "हमीद मुझे संजीदगी से बताओ कि यहाँ हमारी मौजूदगी का क्या मकसद है—"
"क्या तुम्हें मेरी बातों पर यकीन नहीं है—"
"तुम कभी संजीदगी से गुफ़्तगू नहीं करते—"
"मैं इस वक्त कतई संजीदा हूँ और यह हकीकत है कि मैं भी यहाँ इस तरह आने के मकसद से ना-वाकिफ़ (अनजान) हूँ—"
"आख़िर फरीदी साहब तुम्हें भी इस तरह तारीकी (अंधेरे) में क्यों रखते हैं —"
"मुमकिन है यह भी किसी किस्म का तजुर्बा हो। हो सकता है वह यह मालूम करना चाहते हों कि बेबसी और मग़मूम (दुखी) वक्त में आदमी कातिल के काली मिर्च का मंजन मांगता है या हिदायत नामा खावंद (पति के लिए निर्देश)—"
"फिर बकवास शुरू कर दी तुमने—" रेखा कहने लगी। फिर उसने कहा— "सर फ़ैयाज़ तो चेहरे से—"

"बीमार मालूम ही नहीं होता—"
"अरे ये लोग तो मरने के बाद भी बीमार नहीं मालूम होते—"
कुछ देर खामोशी रही, फिर रेखा ने हल्की सी कराह के साथ जम्हाई ली।
"काटोगी क्या कल्लू की माँ?" हमीद सहम कर पीछे हटा और रेखा हँस पड़ी।
"अब अगर तुमने कल्लू—!"
रेखा का जुमला अधूरा ही रह गया और वह बेसाख्ता (अचानक) उछल पड़ी। हमीद का भी यही हाल हुआ। दरवाज़े की झिरी से कोई चीज़ खरखराती हुई फर्श पर आ गिरी थी। हमीद उसकी तरफ झपटा। यह एक लिफाफा था। उसे चाक (फाड़) करने पर कागज़ का एक टुकड़ा बरामद हुआ जिस पर तहरीर (लिखावट) था:

"उम्मीद है कि तुम बहुत ज़्यादा बोर न हुए होगे। इमारत के बाएं बाज़ू से मिला हुआ जो नीम का दरख्त है उस पर चढ़ कर खिड़की तक पहुँचने की कोशिश करो। तुम्हें मुसल्लह (हथियारबंद) होना चाहिए। रेखा से कहो कि कमरे से बाहर न निकले। कमरे के अंदर बैठ कर इसे किसी किस्म की तशवीश (चिंता) न होनी चाहिए। वह हर तरह महफूज़ रहेगी।"

तहरीर फरीदी की थी। हमीद ने एक लंबी सांस ली और खत रेखा के सामने डालता हुआ बोला— "और उस नीम के दरख्त से मैं आसमान पर उठा लिया जाऊँगा—"

पाँच करोड़

रेखा ने कई बार वह तहरीर दोहराई और फिर जवाब-तलब नज़रों से हमीद की तरफ देखने लगी।
हमीद ने अपने कंधों को जुम्बिश (हरकत) देकर कहा— "मैं क्या बता सकता हूँ। मुझे यह भी नहीं मालूम कि अगले माह की तनख्वाह नीम के दरख्त ही पर वसूल करूँगा या वह कब्र में पहुँचाई जाएगी। अलबत्ता तुम इस कमरे में ही रहोगी, महफूज़ रहोगी। बरूज़-ए-क़यामत (क़यामत के दिन) मुझे बताना कि फिर आसमान देखना नसीब हुआ या नहीं, कल्लू की माँ—"
"खुदा समझे तुमसे—" रेखा ने दांत पीस कर कहा— "तुम ऐसे मौकों पर भी संजीदगी इख्तियार नहीं कर सकते—"

हमीद कुछ न बोला। वह अपने रिवॉल्वर के चैम्बर भर रहा था। उसने बहुत से फालतू राउंड मैली डेस्क की जेबों में ठूँसे। रिवॉल्वर को अंदरूनी सदरी (जैकेट) की जेब में डालता हुआ उठ खड़ा हुआ।
"मैं यह मान ही नहीं सकती कि तुम हालात से बे-खबर हो—"
"क्यों नहीं मान सकतीं—"
"यह खत ही बताता है कि तुम्हें पूरी सिचुएशन का इल्म है—"
"सुनो रेखा! कर्नल फरीदी का मामला है और तुम कर्नल के मुतल्लिक़ (बारे में) कुछ भी नहीं जानतीं। मेरा दिन-रात का साथ है, लेकिन मैं दावे

के साथ नहीं कह सकता कि मैं उन्हें पहचान सका हूँ। बस सिर्फ एक बात की नसीहत करूँगा कि तुम्हें अगर फरीदी साहब के साथ काम करने का शौक है तो इससे ज़्यादा न कुरेदा करो, वरना मौत तुम से ज़्यादा दूर न होगी, ज़रा सोचो कि हम यहाँ क्यों और कैसे मारे गए—"

"मुझे कब तक इस कमरे में मुक़ैद (कैद) रहना पड़ेगा—"

"जब तक वह पुर-असरार (रहस्यमयी) आदमी चाहे। तुम्हें यहाँ लाने का मकसद इतना ही था कि मेरी रसाई (पहुँच) हो जाए। अगर तुम न होतीं तो इतनी आसानी से यहाँ जगह बना लेना मुमकिन न होता। अब सब्र करो, कल्लू की माँ, और देखो कि पर्दा-ए-गैब (पर्दे के पीछे) से क्या ज़ुहूर (प्रकट) में आता है—"

रेखा उसे चंद लम्हे घूरती रही, फिर बोली— "जाओ.... दफा हो जाओ। मैं इतनी कमज़ोर दिल की नहीं हूँ जितनी तुम समझते हो। मैं सिर्फ मालूमात हासिल करना चाहती थी—"

हमीद कुछ कहे बगैर बाहर निकल आया।

पाँय बाग़ (बगीचे का पिछला हिस्सा) में अंधेरा था। कुछ देर पहले चाँदनी की गुफ़्तगू दरअसल आशिकाना तर्ज़-ए-तकलुम (बातचीत के अंदाज़) की पैरोडी थी, वरना ये तो कमरी महीने (Lunar month) की आखिरी रातें थीं। कहाँ का चाँद और कहाँ की चाँदनी। हमीद के पैरों में जूते नहीं थे और वह दबे पाँव इमारत के बाएं बाज़ू की तरफ बढ़ता रहा। अभी रात ज़्यादा नहीं गुज़री थी, मगर चूँकि सर्दियों का ज़माना था इसलिए चारों तरफ सिर्फ सन्नाटे की हुक्मरानी थी। बस गनीमत यही था कि यहाँ कुत्ते नहीं थे, वरना हमीद इस तरह बाहर निकलने की हिम्मत न कर सकता और शायद इसी सूरत में फरीदी भी इस किस्म की कोई स्कीम तैयार न करता।

सर्दी मिज़ाज पूछ रही थी। तकरीबन दस मिनट बाद हमीद नीम के दरख्त

तक पहुँच सका। दरख्त की एक घनी और मोटी शाख खिड़की तक चली गई थी, चूँकि खिड़की खुली हुई थी इसलिए अंदर की रोशनी की वजह से उस शाख का कुछ हिस्सा साफ़ नज़र आ रहा था।
हमीद बड़ी आसानी से दरख्त पर चढ़ता चला गया। इसके लिए उसने खासी मश्क़ (अभ्यास) बहम पहुँचाई थी...

पेज 166
मगर खिड़की तक पहुँचना मुश्किल काम था क्योंकि शाख का कुछ हिस्सा रोशनी में था। हमीद चंद लम्हे गौर करता रहा, फिर एक दूसरी शाख पर उतरा जो इसी शाख के नीचे थी। इस शाख पर कदम जमाते हुए ऊपर वाली शाख के सहारे वह खिड़की की तरफ बढ़ने लगा। कभी-कभी शाख पर परछाइयाँ हिलने से रोशन हिस्से पर दिखाई देतीं, इससे हमीद ने अंदाज़ा कर लिया था कि कमरा खाली नहीं है।
आखिरकार वह खिड़की तक पहुँचने में कामयाब हो गया।
कमरे में तीन आदमी थे; जस्टिस शर्मा और सेठ नूरानी शतरंज खेल रहे थे, तीसरा आदमी खड़ा उन का खेल देख रहा था। यह मिस्टर टार्ग था।
हमीद सोचने लगा— "क्या कहीं फरीदी ने मज़ाक तो नहीं किया? ये शरीफ आदमी शतरंज खेल रहे हैं और यहाँ एक सुराग-रसां (जासूस) का क्या काम?"
हमीद वापसी का इरादा कर ही रहा था कि दरवाज़े में शेखर दिखाई दिया।
"क्यों शतरंज बाजी खत्म नहीं हुई?" उसने पूछा।
"अरे तुम्हें तो हर बात की जल्दी ही पड़ जाती है— कौन सी आफत आ

गई है?" जस्टिस शर्मा ने बिसात पर नज़र हटाए बगैर कहा। "बाज़ी लंबी होती जा रही है, यह नूरानी बड़ा खिलाड़ी है, बाज़ी नहीं छोड़ सकता— तुम यहीं आ जाओ—"

"कुछ देर पहले हम यहीं तो थे— तुमने शतरंज खत्म करने के बाद—"

"क्यों....!" जस्टिस शर्मा ने सेठ नूरानी को मुखातिब करके कहा— "क्या ख्याल है, मेरे रहने दें और यह काम भी हो जाए— न जाने इसे इतनी जल्दी क्यों है, कहीं वह भागा जाता है, न कहीं वह भागी जाती है—"

"कर लीजिये.... कर लीजिये—" सेठ नूरानी सिर हिला कर बोला— "बाज़ी जमी रहेगी—"

"मसौदा तुम्हें बनाना है, वरना मैं खुद ही कर लेता—" राय शेखर ने कहा।

"लाओ भाई यार, लाओ—" जस्टिस शर्मा ने कहा।

राय शेखर चला गया।

"मगर यार...." सेठ नूरानी— "जस्टिस शर्मा बोला—" मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि सर राय शेखर का मकरूज़ (कर्जदार) होगा और खैरियत है शेखर पर, जिस ने यूँ ही किसी लिखा-पढ़ी के बगैर पाँच करोड़ दे दिए थे—"

"अपना-अपना व्यापार है जज साहब—" सेठ नूरानी बोला।

पेज 167

"माल है भाई— मैं तो पाँच हज़ार भी इतने एतमाद (विश्वास) के साथ किसी को नहीं दे सकता—"

"आप बिज़नेस में नहीं हैं—" सेठ नूरानी हँस कर बोला।

"अच्छा ही है कि नहीं हूँ, वरना मैं इस तरह पाँच करोड़ रुपये कर्ज दे कर वसूल करने में हफ़वा (अफ़वाह) न होता— यह सर फ़ैयाज़ की शराफत है कि वह अपने कर्जदार होने का एतराज करता है— तुम मुझे इस तरह

पाँच करोड़ कर्ज दे कर देखो—"
सेठ नूरानी हँसने लगा।
"नहीं— मैं निहायत संजीदगी से कह रहा हूँ कि मेरी नीयत बिगड़ जाएगी मुझे यकीन है—"
"हमारा करोड़ों का बिज़नेस महज़ एतबार (विश्वास) पर चलता है—" सेठ नूरानी ने फख्र (गर्व) से कहा।
इतने में बहुत से कदमों की आवाज़ें सुनाई दीं और राय शेखर कई आदमियों के साथ दाखिल हुआ। ये सर फ़ैयाज़, मिस्टर टार्ग, सेठ नौशीरवां और मेजर सईद थे। जस्टिस शर्मा और सेठ नूरानी की गुफ़्तगू से इस नतीजे पर पहुँचे थे कि सर फ़ैयाज़ उस वक्त लाज़मी तौर पर नशे में होगा और इसी नशे की आड़ लेकर उस से किसी किस्म की तहरीर ली जाएगी, मगर सर फ़ैयाज़ को देख कर उसे यह ख्याल रद्द करना पड़ा क्योंकि वह नशे में नहीं मालूम होता था। रफ्तार और गुफ़्तगू से कतई नज़र कर के आँखों की भी नशे की कैफियत ज़ाहिर हो जाती है, लेकिन उसकी आँखों से भी किसी ऐसी कैफियत का इज़हार नहीं हो रहा था जिसकी बिना पर उस का नशे में होना साबित हो सकता—
"यार फ़ैयाज़.... यह क्या किस्सा है—" जस्टिस शर्मा ने पूछा।
"किस्सा क्या होता.... मैं पाँच करोड़ के एवज़ (बदले) अपनी ट्रिनी गाम वाली कान (खदान) शेखर के नाम मुंतकिल (ट्रांसफर) कर रहा हूँ—"
"तुमने दस करोड़ रुपये मुझसे भी तो लिये थे—" जस्टिस शर्मा ने कहा— "अपनी दो चार कानें मेरे नाम भी मुंतकिल कर दो—"
"ज़रूर.... ज़रूर....!" सर फ़ैयाज़ ने हँस कर कहा— "मगर अब इसके बाद एक ही तो रह गई है मेरे पास—"
फिर वह शेखर की तरफ मुड़कर बोला— "हाँ शेखर.... मैं एक बार फिर सबके सामने दोहराता हूँ कि अभी इसकी खुदाई शुरू हुई है— कुछ

बरामद नहीं हुआ— मैं यह अभी से जताए देता हूँ कि अगर तुम्हें कोई फायदा न पहुँचे तो इसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर न होगी—"
"तुम इसकी परवाह न करो— यह अपना-अपना मुकद्दर है—"

पेज 168
"नहीं... मैंने कहा मामला साफ़ हो जाए तो बेहतर है, वरना बाद में तुम कहो कि मुझे दागा गया—"
"यार बड़े चालाक हो—" जस्टिस शर्मा ने कहा— "यह मुझे नहीं मालूम था कि अभी कान (खदान) से कुछ बरामद नहीं हुआ—"
"अब इस में चालाकी कहाँ रह गई। जब मैंने कार्रवाई शुरू होने से पहले ही हकीकत से आगाह कर दिया—"
"आज कल मैं जुआरियों की स्पिरिट में काम कर रहा हूँ— शर्मा साहब —" शेखर बोला— "करो भाई, हाँ तो मसौदा... मगर मसौदा मुझसे बेहतर टार्क और जाफरी बना सकते हैं—"
"नहीं जनाब—" टार्क बोला— "जाए उस्ताद खाली हस्त— आप हम से ज़्यादा अनुभवी और जानकार हैं—"

आखिरकार शर्मा ने मसौदा डिक्टेट कराना शुरू किया। जाफरी लिख रहा था। मसौदा तैयार हो जाने पर उसे स्टाम्प पर मुंतकिल किया गया और सर फैयाज ने उस पर अपने दस्तखत कर दिए। फिर हाज़िरीन ने बतौर गवाह दस्तखत किये और कार्रवाई खत्म हो गई।
"मगर यह बाज़ी खत्म न होगी—" जस्टिस शर्मा ने बिसात की तरफ देखते हुए कहा— "कहिये तो खत्म ही हो जाए—"
"नहीं भाई—"

"अब ज़िंदगी भर खेलो शतरंज, मुझे तो नींद आ रही है—" शेखर ने अंगड़ाई लेते हुए कहा। थोड़ी देर बाद उन दोनों के अलावा और सब वहां से चले गए।

हमीद का दिल चाहा कि दरख्त पर से छलांग लगा दे। उसे फरीदी पर गुस्सा आ रहा था कि खामख्वाह इतनी सर्दी में उसे यहाँ लटकाए रखा। यहाँ हुआ ही क्या था? यह तो बिल्कुल ही खुली हुई बात थी कि सर फैयाज एक आलू बन गया था। एक ऐसी कान जिस से अभी कुछ भी बरामद न हुआ था, उनकी नहीं कहलाई जा सकती थी। दफ़अतन (अचानक) हमीद को वह मुजरिम याद आ गया जिससे वह शुरू से आखिर तक मज़लूम (बेचारा) समझता रहा था, लेकिन हकीकत इसके उलट थी, वह तो उससे ज़्यादा खतरनाक निकला था, जिसे हमीद मुजरिम समझने पर मजबूर हो गया था। यहाँ भी बिल्कुल वैसा ही मामला दरपेश था। अभी तक वह सर फैयाज को मज़लूम समझ रहा था, मगर वक्त आने पर शेखर पर बेतहाशा रहम आया था, जिसे ख्याल था कि सर फैयाज के

इस मसौदे पर दस्तखत लिए जाएँगे, लेकिन इसके बरअक्स (विपरीत) इसे शेखर ही नशे में मालूम हो रहा था और वह सब के सब शेखर के इस माल के कत्ल में बराबर के शरीक थे।
दफ़अतन वह चौंक पड़ा। बाग़ के किसी गोशे से उल्लू की आवाज़ उभरी थी— वह आवाज़ फिर सुनाई दी लेकिन हमीद की गुफ़्तगू सुनने के लिए रुक गया। उसे मालूम था कि वह फरीदी की ही तरफ से एक तरह का सिग्नल हो सकता है जिसका मतलब यह था कि खतरा टल गया है यानी

अब वह दरख्त से उतर कर अपने कमरे में जा सकता है।

"ये उल्लू बोला था क्या—" जस्टिस शर्मा ने चौंक कर कहा।
"शेखर से हिमाकत ही ऐसी हुई है—" सेठ नूरानी मुस्कुराया— "उल्लू न बोलेगा तो फिर क्या होगा। मेरा ख्याल है कि वह इस वक्त बहुत ज़्यादा पी गया है—"
वे फिर खेल में मशगूल हो गए और हमीद दरख्त से उतर आया। उसे अंदेशा था कि कहीं देख न लिया जाए। इसलिए तकरीबन पंद्रह मिनट बाद कमरे तक पहुँच सका, उसने दरवाज़े पर दस्तक दी और आहिस्ता से बोला— "रेखा दरवाज़ा खोलो—"
रेखा शायद जाग ही रही थी क्योंकि हमीद को दूसरी बार दस्तक देने की ज़रूरत नहीं पड़ी। दरवाज़ा खुल गया और हमीद अंदर दाखिल हुआ।
"क्या हुआ—" रेखा ने पूछा।
"डबल नमूने—" हमीद ने झुँझला कर कहा। इस पर रेखा ने उसे एक लिफाफा निकाल कर दिया। यह फरीदी की दूसरी तहरीर थी। बस इतना ही लिखा था— "तुम लोग दूसरी हिदायत तक यहीं कयाम (रुकना) करोगे—"
"अब इंतकाल हो गया—" हमीद ने उसे परचा वापस करते हुए कहा— "कल्लू की माँ, अगर मैं सचमुच मर जाऊँ तो कल्लू को मेरे साथ ही दफ़न कर देना और तुम फिल्म स्टार बन जाना—"
"क्या बक रहे हो— बताओ क्या हुआ—"
"मैं नहीं समझ सका कि क्या हुआ। बस यह समझ लो कि एक बिजली सी मेरे सर पर गिरी है—"
"बकवास ही किये जाओगे—"
हमीद चारपाई पर गिर कर लिहाफ में दुबक गया। रेखा खड़ी रही। कुछ देर

बाद जब सर्दी का अहसास कुछ कम हुआ तो हमीद ने लिहाफ से मुँह निकाल कर कहा— "मैं फिर पागल हो गया हूँ—"
"क्यों....!"
हमीद ने मुख्तसर (संक्षेप में) पूरी रूँदाद (कहानी) दोहरा दी— "अब तुम खुद ही बताओ— मैं बकवास न करूँ तो क्या करूँ तो— "

पेज 170
"क्या दिल ही दिल में झुलस कर टी बी मोल ना लूँ तो क्या करूँ ?"
"वाकई यह मामला हैरतअंगेज है—" हमीद बोला।
"कुछ भी नहीं... वे सब भी पागल हो गए हैं। यह शेखर महल नहीं बल्कि खच्चर महल है। इतना गुस्सा आया है मुझे कि उस वक्त अगर फांसी का डर न होता तो अपने को गोली मार लेती— ये साला... सर फ़ैयाज़ अभी दो दिन पहले बड़बड़ा रहा था... अरे बूंद... आई... अरे बूंद... आई—"
"क्या मतलब—" हमीद ने पूछा।
"अब सो भी जाओ— कल्लू की माँ—" हमीद ने लिहाफ ऊपर खींच लिया।

दूसरी सुबह हालात मामूल (सामान्य) पर थे। हमीद को कोई खास फर्क महसूस नहीं हुआ, लेकिन फिर कुछ देर बाद मालूम हुआ कि अब सर फ़ैयाज़ शेखर महल में मौजूद नहीं हैं। वह किसी ज़रूरी काम के बहाने आ जाने की बिना पर वक्त से पहले ही चला गया था, वरना वहां कम से कम पांच दिन कयाम (रुकने) करने का प्रोग्राम था।
हमीद को अब अंदर ही रहना पड़ता था क्योंकि उसे जस्टिस शर्मा की

खिदमत पर मामूर (तैनात) कर दिया गया था। उस वक्त जब कि वह उनके कपड़ों में तह लगा रहा था, शेखर बौखलाया हुआ कमरे में दाखिल हुआ।
"चोरी—" उसने ही कहा।
"क्या?" जस्टिस शर्मा चौंक पड़े।
"किसी ने सेफ का ताला तोड़ दिया—"
"ओह... और सेफ खाली है—"
"नहीं, सिर्फ कागज़ात गायब हैं जो पिछली रात मुरत्तब (तैयार) किये गए थे—"
"और खिलाफ-ए-तवक्कू (उम्मीद के खिलाफ) सर फ़ैयाज़ भी चला गया —"
"हाँ... वह भी गया— मगर उस पर शुबहा (संदेह) भी नहीं किया जा सकता—"
"क्यों? हो सकता है... बाद में उसकी नीयत में फितूर आ गया हो। तुमने वह पांच करोड़ का नोट पर तो दिए नहीं थे। मुमकिन है उसने सोचा हो कि इस तरह यह रुपये हज़म ही कर लिए जाएँ—"
"यह नामुमकिन है— फैयाज ऐसा आदमी नहीं है और फिर मैंने अभी उससे फोन पर गुफ्तगू की है— वह कहता है परवाह न करो— दूसरे कागजात तैयार हो जाएँगे, कहो तो अभी आ जाऊँ—"
"तब फिर परेशानी की क्या बात है—" शर्मा ने झुंझला कर कहा— "कागज़ात भी दोबारा तैयार हो जाएँगे और सेफ की दूसरी चीज़ें भी महफूज़ हैं—"

पेज 171
"कुछ नहीं , फिक्र सिर्फ इस बात की है कि आखिर उन कागज़ात की

चोरी का क्या मकसद हो सकता है—"
"क्या उनकी चोरी से तुम्हें नुक्सान का अंदेशा है—"
"कतई नहीं—"
"तब फिर वह किसी ऐसे आदमी की हरकत है जो तुमसे ज़्यादा पागल है —"
"मुझसे ज़्यादा—" शेखर ने हैरत से कहा।
"क्या तुम पागल नहीं हो— एक ऐसी कान (खदान) पांच करोड़ के एवज़ (बदले) खरीद रहे हो जिससे अभी कुछ भी बरामद न हो सका—"
"मैं कह चुका हूँ कि आज कल मैं अंधी चाल चल रहा हूँ— मेरे सितारे आज कल कुछ ऐसे ही जा रहे हैं— अभी तक किसी अंधी चाल में धोखा नहीं खाया—"
जस्टिस शर्मा खामोश हो गए। राय शेखर थोड़ी देर तक खड़ा कुछ सोचता रहा, फिर कमरे से निकल गया।
हमीद कपड़े तह कर के सूट केस में रख चुका था, इसलिए उसे भी बाहर आना पड़ा। वह सोच रहा था कि कहीं इस चोरी का शुबहा उस पर न किया जाए क्योंकि वह वहां बिल्कुल नया था, लेकिन शायद शेखर को इसका इल्म ही नहीं था कि वह नया है या पुराना। उसने इस चोरी के मुतल्लिक नौकरों से भी कुछ नहीं सुना। बहरहाल वह फिर दिन भर इधर-उधर भटकता रहा।

रेखा अलग बोर नज़र आ रही थी। हकीकत तो यह थी कि अगर हमीद बात-बात पर उसे छेड़ कर न हँसाता होता तो शायद वह पागल ही हो जाती।

रात को हमीद ने फिर फरीदी की एक तहरीर पाई:

"आज आखिरी सीन के लिए तैयार हो जाओ— बहुत होशियार रहना। हो सकता है आज तुम मौका-ए-वारदात पर मौजूद हो—"

धुआं

नौ बजे हमीद को अंदर जाना पड़ा क्योंकि रात का खाना खाने के बाद जस्टिस शर्मा के कमरे में काफी चहल-पहल थी। वहां राय शेखर के अलावा सर फ़ैयाज़ का प्राइवेट सेक्रेटरी मखदूम भी था। वह अभी-अभी

...

अपनी कार से उतरा था और कुछ इतना सुस्त और कमज़ोर नज़र आ रहा था कि उसे मखदूम के सहारे की ज़रूरत थी। हमीद उस पर मुतहय्युर (हैरान) रह गया। पिछली रात तो वह खासा तरोताज़ा नज़र आ रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे जवानी दोबारा लौट आई हो। हमीद उन्हें पीछे छोड़कर आगे बढ़ गया। किचन से काफी दूर जस्टिस शर्मा के कमरे की तरफ चला गया।

न जाने क्यों जस्टिस शर्मा ने काफी पी लेने के बाद उसे वहीं रोके रखा। हमीद सोच रहा था कि कहीं वह पहचान तो नहीं लिया गया। रिवॉल्वर उसकी सदरी (जैकेट) की जेब में मौजूद था, उसे इत्मीनान था कि अगर पहचान भी लिया गया तो कम से कम मुकाबला तो कर ही सकेगा।

थोड़ी देर बाद शेखर कमरे में आया और उसने बताया कि कागज़ात फिर तैयार कर लिए गए हैं, सिर्फ गवाहों के दस्तखत होने बाकी हैं। जस्टिस शर्मा ने उठते-उठते हमीद को अपने साथ आने का इशारा किया और आज इस महफ़िल में सिर्फ एक का इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) था, क्योंकि यह एक घरेलू किस्म का मामला था। इसलिए इसमें उस व्यक्ति की ज़रूरत भी नहीं थी। आज शायद वह उन्हें लोगों के साथ बैठा हुआ था, इसलिए अब भी वहीं मौजूद था जहाँ सब लोग थे।

सर फ़ैयाज़ को देख कर एक बार फिर हमीद हैरतज़दा हो गया। यह वह सर फ़ैयाज़ हरगिज़ नहीं था जिसे हमीद ने कुछ देर पहले पोर्च में देखा था। वह जो कुछ देर पहले सालों-साल का मरीज़ मालूम हो रहा था, इस वक्त किसी तन्दुरुस्त और तवाना (शक्तिशाली) आदमी की तरह चाक-ओ-चौबंद नज़र आ रहा था।

सब से पहले उसने स्टाम्प पर दस्तखत किये, फिर गवाहों ने एक के बाद दीगरे (एक-एक करके) कल की ही तरह अपनी शहादतें (गवाही) दर्ज कीं। फिर राय शेखर उसे उठाने ही वाला था कि मेजर सईद ने उस पर हाथ रखते हुए कहा— "अभी नहीं—"

"क्या मतलब....!" दफ़अतन राय शेखर चौंक पड़ा।
"कुछ नहीं— सिर्फ आधे घंटे तक यह कागज़ मेरे हाथ के नीचे रहेंगे—"
"क्या तुम ज़्यादा पी गए हो मेजर सईद—" राय शेखर ने ऐसी मुस्कराहट के साथ कहा जो उसके तंत्रिका खिंचाव (nervous strain) का नतीजा कहा जा सकता था।

"यही समझ लो—" मेजर सईद ने कहा और स्टाम्प उठाकर अपनी जेब में ठूँस लिया। राय शेखर उसे इस अंदाज़ में देख रहा था जैसे अपनी आँखों पर यकीन ही न आ रहा हो।
"ओह.... आप चलिये—" मखदूम ने सर फ़ैयाज़ की तरफ झुक कर कहा — "ज़्यादा देर तक बैठना आप के लिए मज़िर (हानिकारक) है—"

पेज 173
"सर फ़ैयाज़ को आधे घंटे तक यहीं इसी जगह बैठना पड़ेगा—" मेजर सईद बोला।
"क्यों....!" सर फ़ैयाज़ ने ग़ुस्सैल लहजे में पूछा।
"क्योंकि आधे घंटे बाद सर फ़ैयाज़ इस दस्तावेज़ को फाड़ कर फेंक देंगे —"
"सईद! तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया—" राय शेखर गुर्राया— "लाओ दस्तावेज़ मुझे दो, वरना तुम मेरी ही छत के नीचे हो—"
"और यह वाकई एक बहुत बड़ी ट्रेजेडी होगी— अगर तुम्हारी ही छत के नीचे तुम्हारे हाथों में हथकड़ियाँ पड़ जाएँ—"
"होश की दवा करो—" राय शेखर बिफर गया।

अब हमीद ने फरीदी की आवाज़ पहचान ली थी— यह मेजर सईद नहीं बल्कि फरीदी था! दफ़अतन उसने अपनी सदरी की जेब से रिवॉल्वर निकालते हुए कहा— "कोई अपनी जगह से जुम्बिश (हलचल) न करे।"
"यह क्या पागलपन फैल गया है—" राय शेखर मेज़ पर हाथ रख कर बोला।
"योर लॉर्डशिप....!" फरीदी ने जस्टिस शर्मा की तरफ देख कर कहा— "कार्रवाई जारी रहे—" जस्टिस शर्मा के लहजे में बड़ी तल्खी थी।

राय शेखर बुरी तरह बौखला गया था, लेकिन फरीदी की नज़रें चार्ल्स पर थीं, जो ऐसे बेतल्लुफ़ाना अंदाज़ में बैठा हुआ था जैसे वहाँ किसी ड्रामे का रिहर्सल हो रहा हो।
"तुम चार्ल्स ब्राउन— क्या अपनी जामा तलाशी दे सकोगे—" फरीदी ने उसे मुखातिब किया।
"ओह.... ज़रूर.... ज़रूर....!" चार्ल्स ब्राउन अपने दोनों हाथ उठाकर खड़ा हो गया और फिर मुस्कुरा कर बोला— "इस वक्त मेरे जेब में ज़्यादा रकम नहीं है—"

फरीदी उसकी तरफ बढ़ा ही था कि उसने कहा— "ठहरो— मुझे एक गिलास पानी पी लेने दो—" साथ ही उसने मेज़ पर रखा हुआ गिलास उठा लिया, जिसमें पानी था। उसे मुँह तक ले जाता, फरीदी उसे खुली आँखों से देख रहा था। उसने गिलास होठों तक ले जाकर फिर मेज़ पर रख दिया और हँसते हुए बोला— "मैं जा रहा हूँ—"

फरीदी ने उस पर छलांग लगाई, लेकिन ठीक उसी वक्त मेज़ पर रखे हुए गिलास ने धुएं का एक बबूला सा उठाया और मेज़ की सतह से चार फीट की बुलंदी पर पहुँच कर उसने इतने हैरतअंगेज तौर पर उस कमरे को समेट लिया कि वह कुछ समझ ही न सके। चश्म-ज़दन (पलक झपकते ही) सारा कमरा धुएं से भर गया।

फिर किसी को होश नहीं रहा कि कौन किधर गया। हमीद बेहद हाथ-पैर

मारता रहा लेकिन वह इस फ़िक्र में था कि कोई निकल न जाए। वह तो यह भी नहीं जानता था कि उन में से कोई एक मुजरिम था या सब ही एक मकसद के तहत वहाँ इकट्ठे हुए थे। वह अलग-अलग कमरों में चक्कर काटता हुआ बाहर निकल आया।

यहाँ पहुँच कर उसे एहसास हुआ कि फरीदी पूरी तैयारी के साथ आया था, मगर आया कहाँ से था? वह शुरू से ही यहाँ रहा होगा। जैसे ही उसने दरवाज़े से बाहर कदम निकाला, रिवॉल्वर की नाल उसके सीने से आ लगी। वह एक सादा लिबास वाला (पुलिस का सिपाही) था।

"ठीक है—" हमीद ने एक लम्बी सांस लेकर कहा— "क्या हर दरवाज़े पर यही इंतज़ाम है?"

हमीद की आवाज़ पहचानते ही उसने रिवॉल्वर हटाकर कहा— "जी हाँ।"

"क्या कोई निकल कर भी गया है?"

"मैंने तो नहीं देखा। मगर ठहरो— मैंने भागते हुए कदमों की आवाज़ें सुनी थीं, लेकिन अंदाज़ा नहीं कर सका कि कौन किधर जा रहा है—"

"तो फिर क्या तुम झक मारने के लिए यहाँ खड़े हो—"

"जनाब वाला... यह उस वक्त की बात है जब हम कम्पाउंड में दाखिल हो रहे थे—"

हमीद फिर वापस आ गया। वह नंगे पैर ही चल रहा था, इसलिए उसके पैरों की आवाज़ करीब भी नहीं सुनी जा सकती थी। उसने एक कमरे में मखदूम की आवाज़ सुनी और फिर वह दूसरी तरफ मुँह किये हुए था। वह दरवाज़े से निकला और फिर दरवाज़े की दरज़ (झिरी) से उसे हमीद ने पकड़ लिया। मखदूम के हाथ में रिवॉल्वर था और वह दूसरों को उसकी जद में लेकर फ़रार हो जाने की कोशिश कर रहा था।

हमीद ने रिवॉल्वर पर हाथ डाल दिया था। मगर मखदूम की गिरफ़्त

मज़बूत थी। इस जद्दोजहद में रिवॉल्वर चल गया और एक बड़े तस्वीर के फ्रेम का शीशा टुकड़े-टुकड़े होकर फर्श पर बिखर गया। हमीद ने उसे गिरा लिया था लेकिन रिवॉल्वर छीनने में अभी तक कामयाब नहीं हुआ था।

कमरे से दूसरे लोग भी निकलने लगे और उन्होंने हमीद के विरोध के बावजूद मखदूम पर धावा बोल दिया। ज़ाहिर है कि ऐसी सूरत में उसके होश उड़ गए होंगे। रिवॉल्वर का ध्यान कहाँ से रह जाता। ज़रा ही देर में उसे बांध कर एक तरफ डाल दिया गया।

पेज 175

सर फ़ैयाज़ एक आराम कुर्सी पर पड़ा हुआ यह सब कुछ बड़ी हैरत से देख रहा था। कभी-कभी वह अपनी जीभ होंठों पर फिराने लगता। हमीद ने राय शेखर की तरफ देखा, जो सिर झुकाए दम साधे खड़ा था।

"कर्नल फरीदी कहाँ हैं?" जस्टिस शर्मा ने हमीद को संबोधित किया।

"मुझे इल्म नहीं है जनाब वाला! मुमकिन है वह उसके तआकुब (पीछा करने) में हों—"

"वह हकीकत में कौन था?"

"यह भी कर्नल साहब ही बता सकेंगे—"

दफ़अतन सर फ़ैयाज़ ने एक ज़ोरदार हिचकी ली और आँखें बंद करके गर्दन एक तरफ डाल दी। उसके चेहरे का रंग उड़ता जा रहा था। फिर उन्होंने एक हल्की सी कराह सुनी।

वह फिर बेहोश मालूम होने लगा था। तकरीबन दस मिनट तक यही कैफियत रही, फिर उसने एक कराह के साथ आँखें खोलीं और हैरान-परेशान नज़रों से चारों तरफ देखने लगा।

"हूँ... ये मखदूम को क्या हुआ?" उसने सीधे बैठते हुए कहा। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर उसने राय शेखर को संबोधित किया— "यह

क्या है राय शेखर! तुमने मुझे क्यों बुलवाया था? तुम्हारी क्या दुश्मनी निकाली है? क्या कभी मेरा और तुम्हारा कोई झगड़ा हुआ है?"
राय शेखर इसी अंदाज़ में सिर झुकाए खड़ा रहा। ग़ालिबन उसकी आँखें भी बंद थीं।
दफ़अतन कर्नल फरीदी कमरे में दाखिल हुए। अब उनके चेहरे पर मेजर सईद की फ्रेंच कट दाढ़ी और घनी मूंछें नहीं थीं। वह अपनी असली शक्ल में थे।
"क्यों...?" शर्मा ने पूछा।
"वह निकल जाने में कामयाब हो गया। मैं यह सोच भी नहीं सकता था। वह एक गिलास पानी से इतना फायदा उठाएगा—"
"वह धुआँ कैसा था?"
"ख़ुदा जाने—" उसने लापरवाही से कहा और सर फ़ैयाज़ की तरफ देखने लगा।
"सर फ़ैयाज़— क्या आप अभी राय शेखर के पांच करोड़ के कर्जदार भी बने हुए हैं?"
"कौन कहता है—" सर फ़ैयाज़ ने हैरत से कहा— "क्या इस किस्म की कोई लग़वयात (फालतू बात) राय शेखर ने कही है?"
"नहीं... इस तहरीर का एतराफ़ तो खुद आप ही ने किया है—"

"मैंने—" उसने हैरत से कहा— "क्या तुम लोग मेरा मज़ाक उड़ाने पर तुल गए हो— यह क्या बकवास है—"

फरीदी ने जेब से वही दस्तावेज़ निकाल कर उसकी तरफ बढ़ा दी। सर फ़ैयाज़ उसे देखता रहा, फिर यकायक चीखने लगा।
"यह जाली है— फरेब है— तुम लोग ठग हो— मुझे बर्बाद कर दिया— ट्रेनी गाम वाली खान— मेरे खुदा— मखदूम.... ओ मखदूम.... यह क्या किस्सा है—"
मखदूम अभी खामोश ही रहा।
"जस्टिस शर्मा— क्या आप भी इन ठगों के साथ हैं—" सर फ़ैयाज़ ने बड़े ज़हरीले लहजे में पूछा।
"नहीं सर फ़ैयाज़— लेकिन आप ने मेरे सामने इस पर दस्तखत किये थे —"
"मखदूम.... अरे बोलता क्यों नहीं मुझे यहाँ क्यों लाया था—"
"क्या आप को इस से इनकार है कि यह आप के दस्तखत हैं—" फरीदी ने पूछा।
"नहीं यह मेरे ही दस्तखत हैं और किसी अत्यंत माहिर आदमी ने बनाए हैं — मैं इस दस्तावेज़ को अदालत में चुनौती दूँगा—"
"मुझे अफ़सोस है कि एक्सपर्ट आप की मुखालफत में फैसला करेंगे— क्योंकि यह दस्तखत आप ने अपने हाथ से किये हैं—"
"तुम कौन हो?"
"जासूसी विभाग का एक अधिकारी— कर्नल फरीदी—"
"कर्नल फरीदी—" सर फ़ैयाज़ ने हैरत से कहा— "तुम्हारे मुताल्लिक तो मैंने सुना था कि तुम शरीफ और ईमानदार आदमी हो—"
"मेरा ख्याल है कि आप ने ठीक ही सुना है—" जस्टिस शर्मा ने कहा— "आप एक बहुत बड़ी साज़िश का शिकार होते-होते बच गए हैं— यह कर्नल फरीदी की ही बुद्धिमत्ता थी जिसने आप को बचा लिया—"
"मैं कुछ भी नहीं समझ सका— पता नहीं किस किस्म की गुफ्तगू हो रही

है—" सर फ़ैयाज़ ने पेशानी पर हाथ रख कर कहा— वह अब पहले की निसबत ज़्यादा बूढ़ा मालूम हो रहा था।
"यह कहानी आप मखदूम ही से सुनिए—" फरीदी ने कहा और हमीद से बोला— "मखदूम को खड़ा करो—"
मखदूम बहुत देर बाद बोलने पर आमादा हुआ। यह भी कर्नल फरीदी ही था जिसने अपने विशेष....

पेज 177
तरीकों से उसे अपराध स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया और न किसी दूसरे के बस की बात नहीं थी। मखदूम ने बताया कि ट्रेनी गाम वाली कान की खुदाई उसकी निगरानी में शुरू हुई थी। एक गैर-मुलकी इंजीनियर टेक्निकल मामलों की देखभाल करता था— अचानक एक दिन उसने मखदूम को इत्तला दी कि इस कान से प्लेटिनम बरामद होने की उम्मीद है — उसके साथ यह आदमी चार्ल्स ब्राउन भी आया था— उसने मखदूम को समझाना शुरू किया कि आदमी को मौके से फायदा उठाना चाहिए। फिर उसने यह स्कीम बनाई जिसके तहत कान मुफ्त में हाथ आती— इस स्कीम में चार्ल्स ब्राउन मखदूम टेक्निकल मशवर सेल पीटर और राय शेखर शरीक थे— राय शेखर को इसलिए चुना गया था कि बाद में अदालत को विश्वास दिलाने में मुश्किल पेश न आए क्योंकि वह एक स्थानीय पूंजीपति था।

सर फ़ैयाज़ से दस्तावेज़ लिखवाने के लिए बहुत पापड़ बेलने पड़े। जिस स्थिति के तहत उसने दस्तावेज़ पर दस्तखत किये थे वह एक इंजेक्शन का असर था— इस स्थिति के खत्म हो जाने के बाद वह पूरी तरह भूल जाता था कि वह इस मानसिक दौर में क्या कर चुका है— जो कुछ उसके

दिमाग में डाला जाता वह उसे याद रहता और कुछ नहीं— इस इंजेक्शन को उसके सिस्टम पर असरअंदाज़ कराने के लिए कई प्रयोगों से गुजरना पड़ा था— कई महीने पहले जब उसे पहला इंजेक्शन दिया गया तो उसके हाथ-पैर एक कुर्सी से बाँध दिए गए थे— सर पर एक हांडी इस तरह लटका दी गई थी कि थोड़े-थोड़े वक्फे से पानी की बूँदें उसके सर पर टपकती रहें— वह वही मौका था जब वह तारजाम जाने के लिए कहीं गायब हो गया था— बहरहाल जब इंजेक्शन कई बार के तजुर्बात से उसके सिस्टम पर अच्छी तरह असरअंदाज़ हो गया तो दस्तावेज़ पर दस्तखत लेने की मुहिम शुरू की गई।

राय शेखर ने अपने चंद प्रतिष्ठित दोस्तों के साथ सर फ़ैयाज़ को मदऊ (आमंत्रित) किया— मकसद यह था कि उनकी मौजूदगी में कागज़ात तैयार किये जाएँ— जजों और मंत्रियों की उन पर शहादत हो ताकि उन्हें किसी तरह भी रद्द न किया जा सके— ज़ाहिर है कि वह राय शेखर के यह प्रतिष्ठित दोस्त इस साज़िश से आगाह नहीं थे— उन्होंने उसे होश-ओ-हवास में कागज़ात पर दस्तखत करते देखा था— ऐसी सूरत में सर फ़ैयाज़ दुनिया की किसी अदालत से भी अपने पक्ष में फैसला नहीं करा सकता था और प्लैटिनम की कान इन लोगों के हाथ लग जाती।

सर फ़ैयाज़ का सिर चकरा गया। कभी वह आँखें फाड़ कर मखदूम की तरफ देखता और कभी राय शेखर की तरफ— फिर आहिस्ता से बोला— "मेरे गुनाहों का फल— ये मखदूम.... मेरा ही लड़का है.... मगर गैर कानूनी....!"
"ओह.... चुप रहो सुअर....!" मखदूम गरजा— "मैं तुम्हारा गला घोंट दूँगा — अगर तुम ने दोबारा...."

ये अल्फ़ाज़ ज़ुबान से निकाले—"
दफ़अतन फ़रीदी की पेशानी पर बल पड़ गए और उसने सर फ़ैयाज़ को घूर कर देखा।

फिर उसने ज़हरीले लहजे में कहा— "तुम्हारी जायज़ औलाद, ट्रेनी गाम की प्लेटिनम की कान की हकदार है लिहाजा नाजायज़ औलाद ने उसे हासिल करने के लिए नाजायज़ तरीका इख्तियार किया— नाजायज़ों से तुम और किस बात की तवक़्क़ो रखते हो सर फ़ैयाज़— यह तो पूरा-पूरा इन्साफ हो रहा था तुम्हारे साथ।"

कैप्टन हमीद मखदूम को खोल दो—"
"हाएं... हाएं.... ये क्या....!" जस्टिस शर्मा बेसाख्ता बोले।
"इन्साफ मी लार्ड....!"
"किस कानून की रूह से—"

"ये उसी कानून की रूह से मी लार्ड— जिस कानून की रूह से इस नाजायज़ औलाद ने जन्म लिया था— ये ज़बरदस्ती आलम-ए-वजूद में आ गया था—"

"तुम शायरी करने लगे—"

"इसे आप जो कुछ भी समझें— दस्तावेज़ें दोनों मेरे ही पास हैं और ये हर हाल में सर फ़ैयाज़ के हक़ में इस्तेमाल की जाएँगी— सर फ़ैयाज़ को खुली इजाज़त है कि वो अदालतों में मुक़दमे पेश करते फिरें— जब तक मेरे दम में दम है ट्रेनी गाम की कान उनके हाथ न आ सकेगी—"

"क्या तुम पागल हो गए हो—"

"मी लार्ड.... जो कुछ आप समझें—"

"कुछ नहीं....!" सर फ़ैयाज़ मजनूनाना अंदाज़ में उठता हुआ बोला— "मुझे न चाहिए.... मुझे न चाहिए—"

फिर उसने मखदूम की तरफ हाथ उठा कर कहा— "मेरे बेटे.... मुझे माफ़ करना— खुदगर्ज़ी में यह बात मेरी ज़ुबान से निकल गई थी.... मुझे कुछ न चाहिए— मुझे किसी से कोई गिला नहीं है— किसी से भी नहीं— मैं किसी अदालत में सफाई नहीं पेश करूँगा—"

वह तेज़ी से चलता हुआ कमरे से बाहर चला गया।

मखदूम ने उसकी तरफ बढ़ना चाहा— मगर फ़रीदी ने उसे रोक कर बोला — "ठहरो और अपनी कहानी के अलावा भी एक मामला और है— इस दिन सफ़ेद कश्ती में किसे देख कर सर फ़ैयाज़ की हालत बिगड़ गई थी — चार्ल्स ब्राउन को— वह उस वक़्त इंजेक्शन के असर में नहीं थे— लेकिन अब उन्हें यह भी याद नहीं है कि उन्होंने किसी को देखा था— मैं नहीं कह सकता कि इस दिमागी तब्दीली की वजह क्या थी—"

"मैं तुम्हें सिर्फ इस जुर्म में हिरासत में लेता हूँ कि तुम एक अंतर्राष्ट्रीय मुजरिम डॉक्टर ड्रेड के मददगार रहे हो—"
"डॉक्टर ड्रेड....!" हर एक के मुँह से बेअख्तियार निकला।

"क्या वो डॉक्टर ड्रेड था—" जस्टिस शर्मा ने हैरत से कहा।

"जी हाँ और इसका एहसास मुझे उस वक़्त हुआ जब गिलास से धुआं उठा था— इस किस्म के शोबदों के लिए वो ख़ास तौर पर मशहूर है और यही वजह है कि उसे अब तक कानून के शिकंजों से बचाते रहे हैं— खैर — राय शेखर मुझे अफ़सोस है कि आप भी इसी ज़मरे में आते हैं— मैं मजबूर हूँ— हो सकता है कि आप लोग अदालत में बरी हो जाएँ— उस वक़्त तक ये दस्तावेज़ हुज़ूर लार्डशिप के पास रहेंगी—"

"मैं इस किस्म की कोई ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता—" जस्टिस शर्मा ने कहा।

"फिर ये फिलहाल किसी बैंक में रहेंगी—"

"क्यों न इस क़िस्से ही को ख़त्म कर दो— सर फ़ैयाज़ ही को जब किसी से कोई शिकायत नहीं रही तो फ़िज़ूल आगे क्यों बढ़ें और डॉक्टर ड्रेड भी निकल ही गया— ज़ाहिर है कि ये लोग ये न जानते रहे होंगे कि वो डॉक्टर ड्रेड था—"

"क़तई नहीं हुज़ूर वाला—" मखदूम बोला।

"फिर क्या राय है—" जस्टिस शर्मा ने फ़रीदी से पूछा।

"जो आप मुनासिब समझें— ट्रेनी गाम की कान से तो मखदूम ही को फायदा पहुँचता है—"

"नहीं! इस किस्से को भी ख़त्म कर दो— क्यों मखदूम— दस्तावेज़ें ज़ाया कर दी जाएँ—"

"मुझे कोई एतराज़ नहीं है जनाब-ए-आली—"

"चलो.... ख़त्म करो—"

जस्टिस शर्मा ने दस्तावेज़ें फ़रीदी से ले कर आतिशदान में डाल दीं।

दूसरे दिन हमीद को मालूम हो सका कि मेजर सईद फ़रीदी के गहरे दोस्तों में से था और उसने बड़ी ख़ुशी से इजाज़त दे दी थी कि वो उसका रोल अदा करे और खुद रोपोश हो गया था।

हमीद रेखा को अब भी 'कल्लू की माँ' कहता है और वो सर से पैर तक आग बबूला हो जाती है।

पानी का धुआँ खत्म -

आगे की कहानी

लाश का कहकहा

sjeet